A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 01 जुलाई, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 292, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

लैब में इंसानी डीएनए बनाने का प्रयोग कितना खतरनाक?

पल्लव घोष एवं ग्वीन्डफ़ ह्यूजेस

वैज्ञानिकों ने किसी इंसान के शरीर की सबसे अहम बुनियाद यानी डीएनए को प्रयोगशाला में बनाने के विवादास्पद प्रोजेक्ट पर काम शुरू किया है। माना जा रहा है कि दुनिया में यह काम पहली बार होने जा रहा है। अब तक इस तरह की रिसर्च को लेकर चिंता जताई जा रही थी कि इससे अलग तरह के बच्चे पैदा हो सकते हैं। एक चिंता ये भी थी कि इससे भविष्य की पीढ़ियों के सामने इंसानों में अप्रत्याशित बदलाव नज़र आ सकते हैं।

लेकिन अब दुनिया की सबसे बड़ी मेडिकल चैरिटी संस्था, 'वेलकम ट्रस्ट' ने इस प्रोजेक्ट को शुरू करने के लिए शुरुआती तौर पर एक करोड़ पाउंड (क़रीब 115 करोड़ रुपये) दिए हैं।

ट्रस्ट ने कहा है कि इस तरह के प्रयोग से कई गंभीर बीमारियों के इलाज में तेज़ी की संभावना हो सकती है और यह नुक़सान से ज़्यादा फ़ायदे वाला काम हो सकता है।

ब्रिटेन के कैम्ब्रिज स्थित एमआरसी लेबोरेटरी ऑफ़ मॉलिक्यूलर बायोलॉजी के डॉक्टर जूलियन सेल इस परियोजना का हिस्सा हैं।

उन्होंने बताया कि यह रिसर्च, बायोलॉजी के क्षेत्र में भविष्य की बड़ी छलांग साबित हो सकती है। इसमें अपार संभावनाएं हैं। हम इलाज के ऐसे तरीक़ों पर विचार कर रहे हैं, जो लोगों की उम्र लंबी करने के साथ-साथ उनकी ज़िंदगी को और बेहतर बनाएगी। लोग स्वस्थ जीवन जी सकेंगे और उम्र बढ़ने के साथ शरीर में बीमारियां भी कम होंगी।

उन्होंने कहा, 'हम इस रिसर्च का इस्तेमाल बीमारियों से लड़ने वाले सेल्स (कोशिकाएं) को बनाने में करना चाहते हैं। इन सेल्स का इस्तेमाल हम क्षतिग्रस्त अंगों, मसलन लीवर और हार्ट, यहां तक कि इम्यून सिस्टम को फिर से ठीक करने के लिए कर सकते हैं।'

लेकिन आलोचकों को डर है कि यह रिसर्च अनैतिक काम करने वाले शोधकर्ताओं के लिए उन्नत या संशोधित नस्ल के इंसान बनाने का रास्ता खोल सकती है।

इस अभियान में लगे ग्रुप 'बियॉन्ड जीएम' की निदेशक डॉक्टर पैट थॉमस का कहना है, 'हम यह समझते हैं कि सभी वैज्ञानिक अच्छा काम करने के लिए हैं, लेकिन इस विज्ञान का इस्तेमाल नुक़सान वाले काम और युद्ध के लिए भी किया जा सकता है।' ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट के पूरा होने के 25वें साल पर इस प्रोजेक्ट की विस्तृत जानकारी दी गई। इस प्रोजेक्ट के तहत इंसानी डीएनए में मॉलिक्यूल्स की मैपिंग की गई थी।

इस प्रोजेक्ट को भी 'वेलकम' ट्रस्ट की तरफ से बड़ी आर्थिक मदद दी गई थी।

हमारे शरीर की लाल रक्त कोशिकाओं (आरबीसी) को छोड़कर हर कोशिका में डीएनए होता है, जिसमें ज़रूरी आनुवांशिक जानकारी होती है। डीएनए केवल चार बहुत छोटे ब्लॉक्स से बना होता है, जिन्हें ए, जी, सी, और टी कहा जाता है। यही अलग-अलग कॉम्बिनेशन में पाए जाते हैं और हैरतअंगेज़ तौर पर इसमें वो सारी आनुवंशिक जानकारी होती है, जो हमारे शरीर को बनाती है।

ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट ने वैज्ञानिकों को बार कोड की तरह सभी इंसानी जीन को पढ़ने की क्षमता दी। अब सिंथेटिक ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट नाम से जो नया काम चल रहा है, उससे कुछ बड़ी कामयाबी हासिल होने की संभावना भी जताई जा रही है। इससे शोधकर्ता न केवल डीएनए के हर अणु का अध्ययन कर पाएंगे, बल्कि वो इसके कुछ हिस्सों को बना भी पाएंगे। शायद एक दिन यह अणु के छोटे से हिस्से से पूरा डीएनए बना लेने की क्षमता भी दे देगा।

जब तक कि वैज्ञानिक कृत्रिम रूप से इंसानी क्रोमोसोम न बना लें, उनका पहला लक्ष्य इंसानी डीएनए के और भी बड़े ब्लॉक बनाने के तरीके विकसित करना है। इनमें वे जीन होते हैं जो हमारे शरीर के विकास, बीमार या क्षतिग्रस्त अंगों के ठीक होने और इसकी सेहत को कंट्रोल करते हैं। फिर इनका अध्ययन और प्रयोग करके यह जानने की कोशिश की जा सकती है कि जीन और डीएनए हमारे शरीर को किस तरह से नियंत्रित करते हैं।

वेलकम सेंगर इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रोफ़ेसर मैथ्यू हर्ल्स, जिसने मानव जीनोम के सबसे बड़े हिस्से की सिक्वेंसिंग की है, का कहना है कि कई बीमारियां तब होती हैं जब जीन में कुछ गड़बड़ी हो जाती है, इसलिए इन अध्ययनों से इलाज की प्रक्रिया बेहतर हो सकती है। शून्य से शुरू कर डीएनए का निर्माण करने से हमें यह जानने का मौक़ा मिल सकता है कि डीएनए वास्तव में कैसे काम करता है। यह नए सिद्धांतों को परखने का मौक़ा भी दे सकता है, क्योंकि अब तक हम केवल पहले से मौजूद डीएनए में फेरबदल करके ही कुछ समझ पाते हैं। इस प्रोजेक्ट का काम टेस्ट ट्यूब और डिश तक ही सीमित रहेगा और कृत्रिम तौर पर किसी को जन्म देने की कोशिश नहीं की जाएगी।

लेकिन यह तकनीक शोधकर्ताओं को इंसान जीवन पर ऐसा नियंत्रण दे देगी, जो इससे पहले कभी नहीं था। भले ही प्रोजेक्ट का मक़सद बेहतर इलाज के तरीक़े की खोज करना है, फिर भी वैज्ञानिकों को इसके दुरुपयोग से रोकने का कोई सुनिश्चित तरीका नहीं है। एडिनबरा यूनिवर्सिटी में जेनेटिक साइंटिस्ट प्रोफ़ेसर बिल अर्नशॉ ने कृत्रिम मानव क्रोमोसोम बनाने के तरीक़े को विकसित किया है। उन्होंने कहा, 'जिन्न बोतल से बाहर आ चुका है। हम अभी ही इस पर कुछ प्रतिबंध लगा सकते हैं। लेकिन उचित सुविधाओं वाला कोई संगठन कुछ भी बनाना शुरू कर देता है, तो मुझे नहीं लगता कि हम उन्हें रोक सकते हैं।'

पैट थॉमस इस बात को लेकर चिंतित दिखती हैं कि इलाज के तरीक़ों को विकसित करने वाली स्वास्थ्य सेवा से जुड़ी कंपनियां इस तकनीक से फ़ायदा उठाने की कोशिश कर सकती हैं। पैट थामस कहती हैं कि 'यदि हम शरीर के कृत्रिम अंग, यहां तक कि कृत्रिम इंसान बनाने में सफल हो जाते हैं, तो सवाल ये उठता है कि उनका मालिक कौन होगा?' भविष्य में इस तकनीक के संभावित दुरुपयोग की आशंका के बीच यह सवाल भी उठता है कि वेलकम ट्रस्ट ने इसे आर्थिक मदद क्यों दी? इसके लिए मदद देने का फ़ैसला करने वाले डॉक्टर टॉम कॉलिन्स के मुताबिक़ यह फ़ैसला बिना सोच-विचार के नहीं लिया गया था। उनका कहना है, 'एक न एक दिन यह तकनीक विकसित होगी ही। जहां तक संभव है हम नैतिकता और आचरण से जुड़े सवालों पर भी विचार कर रहे हैं।'

इस प्रोजेक्ट में वैज्ञानिक शोध के साथ-साथ एक सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम भी चलाया जाएगा, जिसका नेतृत्व केंट यूनिवर्सिटी में समाजशास्त्र के प्रोफ़ेसर जॉय ज़ाग करेंगे। प्रोफ़ेसर जॉय कहते हैं कि 'सबसे अहम बात यह है कि हम ये भी जानना चाहते हैं कि उनके मन में इससे जुड़ी क्या चिंताएं और सवाल हैं।'

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पहाड़ी राज्यों में बारिश से तबाही

● हिमाचल में दरका पहाड़, 129 सड़कें बंद, अब तक 39 की मौत

शिमला में 5 मंजिला बिल्डिंग गिरी, बिहार में 5 लोगों पर बिजली गिरी

नई दिल्ली/भोपाल/लखनऊ/कुल्लू/जयपुर (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में रविवार से ही तेज बारिश हो रही है। लैंडस्लाइड के चलते प्रदेशभर की 129 सड़कों पर वाहनों की आवाजाही बंद हो गई है। मानसून के बाद से राज्य में अब तक 39 लोगों की मौत हो चुकी है। बीते 24 घंटे में 3 ने जान गंवाई है। शिमला के भट्टाकुफर 5 मंजिला बिल्डिंग ढह गई। हिमाचल के मंडी-कुल्लू नेशनल हाईवे पर थलौट की भुभु जोत टनल के पास सोमवार सुबह लैंडस्लाइड हो गया। इससे टनल के अंदर 5 घंटे तक कई गाड़ियां फंसी रहीं। अलर्ट के चलते आज हिमाचल के 4 जिलों में स्कूल बंद हैं।

बिहार में बिजली गिरने से 5 की मौत- बिहार के भोजपुर, बक्सर और नालंदा में बिजली गिरने से 5 की मौत हो गई।

मौसम विभाग के अनुसार, आज 31 राज्यों-केंद्र शासित प्रदेशों में बारिश होगी। उत्तराखंड और झारखंड में रेड अलर्ट जारी किया गया है। मध्य प्रदेश-राजस्थान समेत 12 राज्यों में तेज बारिश का ऑरेंज और 17 राज्यों में यलो अलर्ट है।

- **पंजाब-हरियाणा में बारिश, चंडीगढ़ में सड़क धंसी-** पंजाब और हरियाणा में सोमवार सुबह से ही बारिश हो रही है। चंडीगढ़ में बारिश के बाद सेक्टर 47-48 के ट्रैफिक सिग्नल के पास सड़क का एक हिस्सा धंस गया।
- **भारी बारिश के बाद सलाल डैम के गेट खोले-** जम्मू-कश्मीर के भारी बारिश के चिनाब नदी का जलस्तर बढ़ गया। इसके बाद सलाल डैम के कई गेट खोल दिए गए हैं।
- **मप्र का धुआंधार वॉटरफॉल 15 अक्टूबर तक बंद-** मध्य प्रदेश के भेड़ाघाट का फेमस धुआंधार वॉटरफॉल को 15 अक्टूबर तक बंद कर दिया है। मानसून की एंट्री और भारी बारिश के बाद यह फैसला लिया गया है।
- **55,000 करोड़ में बना मुंबई-नागपुर एक्सप्रेस पर पानी भरा-** मुंबई से नागपुर को जोड़ने वाला समृद्धि एक्सप्रेस में बारिश के बाद पानी भर गया है। 55,000 करोड़ की लागत से बने इस एक्सप्रेस वे का उद्घाटन जनवरी में हुआ था।

लाखों भक्तों की आस्था और श्रद्धा का प्रतीक है श्री धूनी वाले दादा का मंदिर : मुख्यमंत्री

भक्तों की बरसों की कामना भूमि-पूजन के साथ हुई पूर्ण

मुख्यमंत्री श्री दादाजी दरबार भूमि-पूजन महोत्सव में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि श्री धूनी वाले दादाजी मंदिर जिलेवासियों सहित निमाड़ क्षेत्र के भक्तों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। यह केवल एक मंदिर नहीं लाखों भक्तों की आस्था एवं उनकी श्रद्धा का प्रतीक है। मंदिर निर्माण की कई बरसों पूर्व की कामना आज शिलान्यास के साथ पूर्ण हुई जो एक नए आध्यात्मिक युग का प्रारंभ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोमवार को खंडवा में आयोजित श्री दादाजी दरबार भूमि-पूजन महोत्सव में पहुँचकर समाधि के दर्शन और पूजन-अर्चन किया। उन्होने भव्य मंदिर निर्माण के लिए भूमि-पूजन स्थल पर पुष्प अर्पित किए। श्री धूनी वाले दादाजी मंदिर के भव्य निर्माण के लिए भूमि-पूजन वेद-ऋचाओं के उच्चारण के साथ संतों, जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं स्थानीय लोगों की उपस्थिति में हुआ।

मुख्यमंत्री द्वारा समाधि स्थल पर पुष्प अर्पित-मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री दादाजी दरबार में श्री बड़े और छोटे दादाजी महाराज की समाधियों के दर्शन कर पूजन अर्चन किया और धूनीमाई में आहूति अर्पित कर प्रार्थना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समाधी स्थल पर संतों की उपस्थिति में पुष्प अर्पित किये।

श्री धूनी वाले दादाजी का भव्य मंदिर निर्माण किया जाएगा-श्री धूनी वाले दादाजी मंदिर का निर्माण 22 एकड़ भूमि पर 100 करोड़ की लागत से किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ट्रस्ट द्वारा जितना संभव हो उतना मंदिर का निर्माण कार्य किया जाए, उसके बाद शेष रहे कार्य का निर्माण शासन द्वारा किया जाएगा। मंदिर का निर्माण शिर्डी एवं अक्षरधाम मंदिर की तर्ज पर विभिन्न चरणों में किया जाएगा। मंदिर निर्माण में संगमरमर का उपयोग होगा। निर्माण कार्य का प्रारंभ गुरु पूर्णिमा के बाद किया जाएगा। भव्य मंदिर निर्माण में आधुनिक गौशाला, सेवाधारी निवास, पार्किंग व्यवस्था, भक्त निवास, भोजनशाला एवं नर्मदा परिक्रमावासी विश्रामस्थल का निर्माण किया जाएगा। कार्यक्रम में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, जनजातीय कार्य विभाग मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग एवं प्रभारी मंत्री श्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी, सांसद श्री ज्ञानेश्वर पाटिल, बुरहानपुर विधायक श्रीमती अर्चना चिटनीस, पंधाना विधायक श्रीमती छाया मोरे, महापौर श्रीमती अमृता यादव, विधायक श्री कंचन तनवे सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण उपस्थित थे।

सुप्रभात

ज़र-ओ-ज़मीन की हवस, और बस!
मौत का है दस्तरस, और बस!

फ़ाख़्ता की बात पर सैयाद ने
तोड़ डाला है कफ़स, और बस!

मैंने अपने कान पकड़े हर दफ़ा
तू हुआ न टस से मस, और बस!

है बहुत नाज़ुक ये सिस्टम जिस्म का
दब गई जो एक नस, और बस!

मुस्कुराकर क़त्ल करने की अदा
हो गया था मैं अवश, और बस!

बुद्ध, कबीर, नज़ीर-ओ-मीर यही तो है
रख दी चादर जस की तस, और बस!

-मोहन सगोरिया

तेलंगाना की केमिकल फैक्ट्री में धमाका

12 मजदूरों की मौत और 34 जख्मी

संगारेड्डी (एजेंसी)। तेलंगाना के संगारेड्डी जिले में सोमवार सुबह दवा बनाने वाली फैक्ट्री की रिएक्टर यूनिट में विस्फोट हो गया। घटना में 12 मजदूरों की मौत हो गई, 34 लोग जख्मी हैं। हादसा पाशमिलारम इंडस्ट्रियल एरिया स्थित सिगाची इंडस्ट्रीज में सुबह 8.15 बजे से 9.30 बजे के बीच हुआ। राज्य के श्रम मंत्री जी विवेक वेंकटस्वामी ने कहा- अबतक 4 शव बरामद हुए हैं। हमें उम्मीद है कि अब और कोई मौत नहीं होगी। आईजी वी सत्यनारायण ने बताया कि घटना के दौरान फैक्ट्री में 150 लोग थे, जहां ब्लास्ट हुआ वहां 90 लोग मौजूद थे। उन्होंने कहा कि एनडीआरएफ, डीआरएफ, एसडीआरएफ की टीमों के साथ ही फायर ब्रिगेड की 10 गाड़ियां मौजूद हैं। ब्लास्ट के कारणों का पता लगाया जा रहा है। रिएक्टर में तेजी से केमिकल रिएक्शन होने से ब्लास्ट की संभावना जताई गई है।

मप्र को 2 जुलाई को नया भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मिलेगा

पार्टी ने जारी किया चुनाव कार्यक्रम; आज भरे जाएंगे नामांकन, कल आएंगे नतीजे

भोपाल (नप्र)। एमपी में दो दिन बाद भाजपा को नया अध्यक्ष मिल जाएगा। पार्टी की ओर से प्रदेश अध्यक्ष के लिए चुनाव कार्यक्रम जारी कर दिया गया है। निर्वाचन अधिकारी विवेक सेजवलकर ने सोमवार को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष के चुनाव की अधिसूचना जारी कर दी है।

चुनाव कार्यक्रम के मुताबिक एक जुलाई, मंगलवार को शाम 4.30 बजे से 6.30 बजे तक नामांकन पत्र जमा होंगे। शाम 6.30 बजे से 7.30 बजे तक नामांकन पत्रों की जांच होगी। शाम 7.30 बजे से 8 बजे तक नाम वापसी होगी। रात 8.30 बजे नामांकन पत्रों की अंतिम सूची घोषित की जाएगी। 2 जुलाई को सुबह 11 बजे से 2 बजे के बीच मतदान होगा। 2 जुलाई को दोपहर 2 बजे से मतों की गणना और फिर परिणाम घोषित होंगे।

आज शाम को भोपाल आएंगे चुनाव अधिकारी धर्मेंद्र प्रधान-बीजेपी के प्रदेश चुनाव अधिकारी और केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान मंगलवार शाम 4 बजे भोपाल पहुंचेंगे। इसके बाद प्रदेश कार्यालय में संगठन चुनाव के अधिकारी विवेक शेजवलकर और धर्मेंद्र प्रधान की मौजूदगी में उम्मीदवार 4.30 बजे से अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे।

हेमंत के नाम पर सब राजी

मीडिया और बीजेपी के सूत्र बताते हैं कि प्रदेश अध्यक्ष के लिए बैतूल विधायक हेमंत के नाम पर सीएम डॉ. मोहन यादव से लेकर संगठन और पार्टी में अंदरूनी तौर पर लगभग सबकी सहमति बन गई है। आदिवासी नेताओं में डीडी उइके, गजेंद्र सिंह पटेल, सुमेर सिंह सोलंकी के नाम इस रेस में शामिल हैं।

रेल्वे ने बदले नियम

टिकट कंफर्म है या नहीं अब 8 घंटे पहले चलेगा पता!

● यात्रियों को देने जा रही है बड़ी राहत, टिकट कैंसिल करने पर नहीं कटेगा ये चार्ज

नईदिल्ली (एजेंसी)। अगर आप ट्रेन से सफर करते हैं तो एक बात नोट कर लीजिए। दरअसल आज से कई नियमों में बदलाव हो रहे हैं। अब आईआरसीटीसी से टिकट बुक करना थोड़ा मुश्किल होगा। लेकिन उससे पहले ये जान लीजिए कि अब रिजर्वेशन चार्ट को लेकर भी नया नियम आया है। ट्रेन के रवाना होने से ठीक 8 घंटे पहले रिजर्वेशन चार्ट तैयार कर दिया जाएगा।

वहीं रेलवे अपने यात्रियों को बड़ी राहत देने जा रहा है। जी हां, सही सुना आपने भारतीय रेलवे वेटिंग टिकट कैंसिलेशन पर लगने वाली क्लर्केज फीस हटाने की तैयारी कर रहा है। रेलवे ने यह फैसला पैसेंजर्स की शिकायत और सार्वजनिक दबाव के बाद लिया है।

प्रति यात्री 30 से 60 रुपए तक ली जाती थी फीस- अभी तक ऑनलाइन वेटिंग टिकट कैंसिल करने पर प्रति यात्री 30 से 60 रुपए तक की फीस ली जाती है। यह फीस स्लीपर क्लास में 60 रुपए और थर्ड, सेकंड या फर्स्ट क्लास में 60 रुपए से ज्यादा हो सकती है। पिछले साल सोशल मीडिया पर कई पैसेंजर्स ने इस फीस के खिलाफ आईआरसीटीसी से शिकायतें की थीं। जिसके बाद यह मुद्दा रेलवे के बड़े अधिकारियों तक पहुंचा। हालांकि, रेलवे के एक अधिकारी ने बताया कि फिलहाल इस प्रस्ताव पर मंत्रालय में चर्चा चल रही है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 01 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

रेप के आरोपी पूर्व तहसीलदार का कोर्ट में सरेंडर

ग्वालियर में 5 महीने पहले महिला ने कराया था केस, कहा- आरोपी की 4 पत्नियां

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के तत्कालीन तहसीलदार और रेप के आरोपी शत्रुघन सिंह चौहान ने सोमवार को जिला कोर्ट में जज सोनल सिंह जादौन की कोर्ट में सरेंडर कर दिया। साथ ही जमानत भी मांगी है।

सरेंडर के बाद कोर्ट ने मामले की सूचना संबंधित थाना को देकर विवेचना अधिकारी को तलब किया है। अभी उन्हें जेल भेजा है या जमानत मिली है यह साफ नहीं हो सका है।

शत्रुघन सिंह चौहान के वकील विष्णु सिंघल का कहना है कि शत्रुघन सिंह चौहान ने जिला कोर्ट में सरेंडर किया है और जमानत के लिए अर्जी लगाई है। महिला ने उन पर जो भी आरोप लगाए हैं, वह बेबुनियाद हैं। महिला पहले भी ऐसा कर चुकी है।

वकील ने बताया कि शत्रुघन सिंह पर पहले भी जितने मामले दर्ज थे। वह उसमें दोषमुक्त हो चुके थे, उससे संबंधित दस्तावेज हमने कोर्ट में लगाए हैं।

महिला ने लगाए थे शादी का झांसा देकर रेप के आरोप- शत्रुघन सिंह चौहान पर 15 जनवरी 2025 को 34 साल की एक महिला ने झांसा देकर रेप करने का आरोप लगाया था। इस पर महिला थाने में रेप का केस भी दर्ज किया गया था। आरोपी के लगातार फरार होने पर पुलिस ने 5 हजार रुपए का इनाम भी घोषित किया था।

महिला का आरोप था कि तत्कालीन तहसीलदार ने उसे साल 2008 से 2025 तक पत्नी बनाकर रखा और शारीरिक शोषण किया। हालांकि शत्रुघन सिंह चौहान ने इन आरोपों को खारिज किया है। **महिला का आरोप- तहसीलदार की चार पत्नियां-** महिला का आरोप है कि आरोपी शत्रुघन सिंह ने साल 2008 से 2025 तक कई जगहों पर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। महिला ने ये भी कहा कि उसे मिलाकर आरोपी तहसीलदार की चार पत्नियां हैं। यह भी दावा किया था कि उसका बेटा आरोपी का ही है। महिला ने मारपीट और धमकाने के आरोप भी लगाए हैं। महिला का कहना था कि वह मूल रूप से भिंड की रहने वाली है। 2005-06 में उसकी शादी भिंड में हुई थी, लेकिन दो साल बाद उसके पति का देहांत हो गया। 2008 में शत्रुघन सिंह चौहान का उसके जेठ के पास आना-जाना था।

प्रमुख अभियंता की तथ्यात्मक रिपोर्ट में शिकायत पाई गई निराधार

मंत्री श्रीमती उइके पर लगाए गए आरोप मनगढ़ंत और तथ्यहीन

भोपाल (नप्र)। प्रमुख अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी श्री संजय कुमार अंधवान ने जल जीवन मिशन के संबंध में प्राप्त शिकायत का परीक्षण कर बताया कि शिकायतकर्ता श्री किशोर समरीते द्वारा लगाए गए सभी आरोप तथ्यहीन, मनगढ़ंत और दुर्भावनापूर्ण हैं। शिकायत में कोई भी साक्ष्य संलग्न नहीं किए गए थे, बल्कि सूचना के अधिकार के तहत विभागीय अधिकारी द्वारा पूर्व में भेजे गए पत्र को ही आधार बनाया गया।

प्रमुख अभियंता ने स्पष्ट किया कि बालाघाट खंड के कार्यपालन यंत्री द्वारा स्वयं शिकायतकर्ता को यह जानकारी दी गई थी कि जल जीवन मिशन अंतर्गत किसी भी प्रकार की अनियमितता नहीं हुई है। इसके बावजूद उन्हीं जानकारियों को तोड़-मरोड़कर सार्वजनिक शिकायत के रूप में प्रस्तुत किया गया जिसमें कोई नया तथ्य या प्रमाण नहीं है। प्रमुख अभियंता कार्यालय ने स्पष्ट किया कि जल जीवन मिशन की योजनाओं का क्रियान्वयन फील्ड स्तर पर किया जाता है तथा भुगतान भी स्थानीय खंड कार्यालय द्वारा माप पुस्तिका के सत्यापन के उपरांत होता है। ऐसे में प्रमुख अभियंता या उनके कार्यालय के कर्मचारी पर आरोप लगाना निरर्थक है। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके पर भी जो आरोप लगाए गए हैं वे पूर्णतः असंगत हैं। मुख्य अभियंता (मैकेनिकल संकाय) द्वारा कोई निविदा जारी नहीं की जाती, अतः उन पर लगाए गए किसी भी प्रकार के आरोप तथ्यों से परे हैं। प्रमुख अभियंता ने अपने पत्र में यह भी उल्लेख किया है कि जल जीवन मिशन अंतर्गत अब तक मध्यप्रदेश के 70 प्रतिशत से अधिक परिवारों को नल से जल उपलब्ध कराया जा चुका है और शेष कार्य प्रगति पर हैं। योजनाओं की पूर्णता के उपरांत ही भारत सरकार को उपयोगिता प्रमाण पत्र भेजे जाते हैं, जिसकी प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और नियंत्रित है। सभी तथ्यों के परीक्षण और विभागीय प्रक्रियाओं के अवलोकन के बाद यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित हुआ है कि शिकायत मनगढ़ंत, तथ्यहीन और दुर्भावनापूर्ण मंशा से प्रेरित है।

आज से ट्रेन की टिकट होगी महंगी

- एसी से लेकर स्लीपर क्लास तक बढ़ेगा किराया?

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगर आपकी भी यात्रा के लिए पहली पसंद ट्रेन है तो ये खबर आपके लिए है। मंगलवार यानी एक जुलाई से रेलवे कई बदलाव करने जा रहा है। कल से ट्रेन की टिकट बुक करने के लिए यात्रियों को अधिक पैसे खर्च करने पड़ेंगे। नए नियमों के अनुसार, एक जुलाई से मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों में नॉन-एसी क्लास के किराए में 1 पैसे और सभी एसी क्लास के किराए में 2 पैसे प्रति किलोमीटर की बढ़ोतरी हो जाएगी। यानी आपको रेल टिकट खरीदने के लिए अपनी जेब अधिक ढीली करनी पड़ेगी।

रेलवे ने जारी किया आदेश

बता दें कि इस संबंध में रेल मंत्रालय के अधिकारियों ने 24 जून को प्रस्तावित किराया संशोधन का संकेत दिया था। अब नए किराए को 1 जुलाई से लागू कर दिया जाएगा। बता दें कि ट्रेनों और क्लास श्रेणियों के अनुसार किराया तालिका वाला आधिकारिक आदेश सोमवार को जारी किया गया।

इन यात्रियों को मिलेगी राहत

इन सब के बीच रेलवे ने उन यात्रियों को राहत दी है, दो मासिक सीजन टिकटों पर यात्रा करते हैं। रेलवे ने दैनिक यात्रियों के हित में उपनगरीय ट्रेनों और मासिक सीजन टिकटों के किराए में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसके साथ ही 500 किलोमीटर तक साधारण द्वितीय श्रेणी के किराए में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है और इससे अधिक दूरी के लिए टिकट की कीमतों में आधा पैसा प्रति किलोमीटर की बढ़ोतरी की गई है।

पेड़ से टकराई एंबुलेंस, मां- नवजात समेत 4 की मौत

पिपरिया में एक दिन पहले बेटे का जन्म; गांव लौट रहा था परिवार

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम में जननी एक्सप्रेस बेकाबू होकर आम के पेड़ से टकरा गई। टक्कर के बाद वाहन के परखच्चे उड़ गए। हादसे में नवजात, उसकी मां समेत एक ही परिवार के 4 लोगों की मौत हो गई।

घटना पिपरिया रोड पर सोमवार शाम को हुई। अंजलि पति अजय राजपूत की रविवार को पिपरिया में डिलीवरी हुई थी। उसने बेटे को जन्म दिया था। सोमवार को जननी एक्सप्रेस एंबुलेंस से वह अपने गांव सर्रा किशोर लौट रही थी।

गाड़ी में अंजलि राजपूत, उसका नवजात बेटा और परिवार की दो महिलाएं आशा पति हीरालाल राजपूत (42) और रानू पति बलराम राजपूत (25) साथ में थीं। बताया जा रहा है कि बारिश के चलते गाड़ी अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई।

दो महिलाओं की मौके पर मौत

हादसे के बाद राहगीरों की भीड़ लग गई। लोगों ने शवों और घायलों को वाहन से निकाला। एंबुलेंस ड्राइवर पुष्पराज पटेल गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे एंबुलेंस से पिपरिया अस्पताल भेजा गया है। पिपरिया मंगलवारा थाना प्रभारी गिरीश त्रिपाठी ने बताया कि नवजात समेत दो महिलाओं की मौत मौके पर हो गई थी। नवजात की मां ने अस्पताल में दम तोड़ा।

राजमंदिर में होगा जुरासिक-वर्ल्ड मूवी का पहला प्रीमियर

- डायनासोर की थीम पर सजेगा थिएटर, देशभर से आएंगे 1 हजार इन्फ्लूएंसर और डिजिटल-क्रिएटर

जयपुर (एजेंसी)। हॉलीवुड की 'जुरासिक वर्ल्ड रीबर्थ' का पहला हिंदी प्रीमियर जयपुर में होगा। यूनिवर्सल पिक्चर्स (डिस्ट्रीब्यूटरः वार्नर ब्रदर्स) ने इसकी घोषणा की और बताया कि यह प्रीमियर 3 जुलाई को राज मंदिर सिनेमा में आयोजित किया जाएगा। इसे लेकर राजमंदिर सिनेमा हॉल को जुरासिक वर्ल्ड की थीम पर सजाया जाएगा।

इसके अलावा इस प्रीमियर शो में फेमस यूट्यूबर आशिष चंचलानी समेत 1 हजार से ज्यादा इन्फ्लूएंसर और डिजिटल क्रिएटर जयपुर आएंगे। यह प्रीमियर इसलिए भी ऐतिहासिक माना जा रहा है, क्योंकि साल 1994 में 'जुरासिक पार्क' पहली हॉलीवुड फिल्म थी, जिसे हिन्दी में डब किया गया था। और, अब 31 वर्षों बाद, 'जुरासिक वर्ल्डः रीबर्थ' को उसी थीम पर प्रमोट किया जा रहा है।

1000 से अधिक मेहमान होंगे शामिल- प्रीमियर शो शाम 6 से रात 11 बजे तक होगा। राज मंदिर मैनेजमेंट की ओर से इस शो को लेकर लगभग सारी तैयारियां पूरी हो चुकी है।

प्रयागराज की दलित लड़की को आतंकी बनाने की ट्रेनिंग दी

ब्रेनवॉश करके केरल ले गए, धर्म परिवर्तन कराया; पुलिस ने 2 को गिरफ्तार किया

प्रयागराज (एजेंसी)। यूपी के प्रयागराज की नाबालिग दलित लड़की को केरल में आतंकी बनाने की ट्रेनिंग दी जा रही थी। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों ने नाबालिग लड़की को अगवा किया। उसे प्रयागराज से केरल ले गए। जबरन धर्म परिवर्तन कराया।

फिर उसे जिहाद के नाम से ट्रेनिंग देने लगे। इसी बीच पीड़ित वहां से भागकर केरल के एक रेलवे स्टेशन पहुंची, जहां रेलवे पुलिस को उसने आपबीती सुनाई। केरल पुलिस ने प्रयागराज पुलिस को सूचना दी। इसके बाद पुलिस नाबालिग को प्रयागराज लेकर आई।

पीड़ित की मां की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी मोहम्मद कैफ और उसकी साथी एक नाबालिग लड़की को अरेस्ट कर लिया। आरोपियों के गिरोह में कौन-कौन शामिल हैं? यह गिरोह अब तक कितने लोगों को शिकार बना चुका है? इसकी जांच के लिए पुलिस की 3 टीमें बनाई गई हैं।

वहीं मामला आतंकी ट्रेनिंग से जुड़ा होने के कारण एटीएस की प्रयागराज यूनिट फूलपुर थाने पहुंची। उन्होंने आरोपियों से पूछताछ कर रही है। आतंकी साजिश को लेकर जांच शुरू की है। बताया गया कि एटीएस पीड़ित नाबालिग दलित से भी पूछताछ करेगी।

दावत में गई थी नाबालिग, वहीं से लापता हो गई- डीसीपी (गंगानगर जोन) कुलदीप सिंह गुनावत ने बताया- 28 जून को एक दलित महिला ने फूलपुर थाने में शिकायत की थी। इसमें बताया था- 8 मई को मेरी नाबालिग बेटी (15 साल) गांव में ही कोटेदार के यहां शादी की दावत में गई थी, लेकिन वहां से नहीं लौटी।

एक दिन मेरे पास बेटी का फोन आया। बेटी ने बताया, गांव की रहने वाली मुस्लिम समुदाय की एक नाबालिग (16) ने मेरा ब्रेनवॉश किया।

राष्ट्रपति ने बरेली में 24 स्टूडेंट्स को दिए मेडल-उपाधि

सीएम योगी ने द्रौपदी मुर्मू का वेलकम किया, शिवराज सिंह चौहान ने भांजे-भांजियों को प्रणाम किया

बरेली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू सोमवार को बरेली पहुंचीं। वह आईवीआरआई के दीक्षांत समारोह में शामिल हुईं। सुबह 9:50 बजे उनका विमान त्रिशूल एयरबेस पर लैंड किया। वहां राष्ट्रपति का स्वागत राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और सीएम योगी ने किया।

राष्ट्रपति ने आईवीआरआई के दीक्षांत समारोह में छात्र-छात्राओं को पीएचडी की उपाधि और मेडल प्रदान किया। इस दौरान राष्ट्रपति ने कहा- बीमारी के रोकथाम में टीकाकरण की अहम भूमिका है। इसमें आईवीआरआई की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा- मैं जिस परिवेश से आती हूं वो प्रकृति के निकट है।

पशु चिकित्सा के क्षेत्र में भी आगे आ रहीं बेटियां- राष्ट्रपति ने उपाधि व पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने कहा-पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में छात्राओं की बड़ी संख्या देखकर गर्व हो रहा है कि बेटियां अन्य क्षेत्र की तरह पशु चिकित्सा के क्षेत्र में भी आगे आ रही हैं, यह शुभ संकेत है। राष्ट्रपति के स्वागत के लिए मौजूद राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार, सीएम योगी, केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान।

सीएम योगी बोले-

7 मंदिरों को नाथ कॉरिडोर के रूप में विकसित कर रहे- सीएम योगी ने कहा-मैं बताना चाहता हूं कि ये भारत की पौराणिक नगरी है और पांचाल देश के रूप में महाभारत कालखंड में इसकी पहचान थी।

यहां 7 प्राचीन महादेव के मंदिर थे। जिन्हें हम वर्तमान में नाथ कॉरिडोर के रूप में विकसित कर रहे हैं।

अगर संविधान में किसी भी शब्द को छुआ...

प्रस्तावना में बदलाव की मांग पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार को कहा कि अगर संविधान में कोई भी शब्द बदला गया तो उनकी पार्टी इसका पुरजोर विरोध करेगी। उन्होंने यह बात आरएसएस के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले के उस बयान पर कही, जिसमें उन्होंने संविधान की प्रस्तावना में 'समाजवादी' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्दों की समीक्षा करने का विचार रखा था। खरगे ने बेंगलुरु में अपने आवास पर पत्रकारों से बात करते हुए होसबाले को 'मनुस्मृति का आदमी' बताया। उन्होंने कहा कि होसबाले नहीं चाहते कि गरीब लोग आगे बढ़ें और वे चाहते हैं कि हजारों साल पहले जो प्रथाएं थीं, वही जारी रहें। इसलिए उन्हें समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा पसंद नहीं है। खरगे के अनुसार, यह केवल होसबाले की राय नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की भी राय है।

हाल ही में इमरजेंसी पर एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए होसबाले ने कहा था कि बाबा साहेब अंबेडकर ने जो संविधान बनाया था, उसकी प्रस्तावना में ये शब्द (समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता) नहीं थे। उन्होंने कहा कि इमरजेंसी के दौरान, जब मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया था, संसद ने काम नहीं किया, और न्यायपालिका कमजोर हो गई, तब इन शब्दों को जोड़ा गया।

30 साल में पहली बार घाना जा रहे भारतीय प्रधानमंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 2-3 जुलाई को घाना दौरे पर जा रहे हैं। पिछले 30 साल में किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली यात्रा है। पीएम मोदी घाना के अलावा त्रिनिदाद और टोबैगो, अर्जेंटीना, ब्राजील और नामीबिया की भी यात्रा करेंगे। यह जानकारी सोमवार को सचिव (आर्थिक संबंध) दम्मू रवि ने दी। दम्मू रवि ने कहा कि प्रधानमंत्री 2-3 जुलाई को घाना का दौरा करेंगे। यह यात्रा 30 वर्षों के बाद हो रही है।

घाना में नए राष्ट्रपति ने संभाला है पदभार- घाना में राष्ट्रपति जॉन ड्रामानी महामा ने शानदार जीत के बाद अभी-अभी कार्यभार संभाला है। घाना के साथ भारत के संबंध ऐतिहासिक हैं।

तेलंगाना में भाजपा को बड़ा झटका

फायर ब्रांड नेता टी राजा सिंह ने पार्टी से दिया इस्तीफा

नईदिल्ली (एजेंसी)। तेलगंना की राजनीति से जुड़ी एक बड़ी खबर सामने आई है। यहां पर बीजेपी विधायक टी राजा सिंह ने पार्टी से त्यागपत्र दे दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इस बात की जानकारी दी है। बता दें कि टी राजा सिंह को तेलंगाना के फायर ब्रांड नेता के तौर पर जाना जाता है। बता दें कि उन्होंने तेलंगाना बीजेपी अध्यक्ष के तौर पर नया नाम सामने आने के बाद ये फैसला लिया है।

सोशल मीडिया पर दी जानकारी- बीजेपी एमएलए टी राजा सिंह ने एक्स पोस्ट में लिखा कि बहुत से लोगों की चुप्पी को सहमति नहीं समझा जाना चाहिए। मैं सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि उन अनगिनत कार्यकर्ताओं और मतदाताओं के लिए बोल रहा हूं जो हमारे साथ आस्था के साथ खड़े थे और जो आज निराश महसूस कर रहे हैं।

बाइक से अनुष्का से मिलने पहुंचे तेजप्रताप, 7 घंटे रुके

- बोले- मेरा पारिवारिक रिश्ता है, इंटरव्यू में कहा- प्यार किया है, गलती नहीं की

पटना (एजेंसी)। लालू यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव आज यानी सोमवार को बाइक से अनुष्का यादव के घर पहुंचे। वो करीब 7 घंटे अनुष्का के घर पर रहे। अनुष्का के घर से निकलने के बाद तेजप्रताप यादव ने कहा कि, मेरा पारिवारिक रिश्ता है इसलिए मिलने आया हूं। लोगों से मिलता जुलता रहता हूं।

प्यार किया है कोई गलती नहीं- उधर, एक टीवी चैनल को दिए इंटरव्यू में उन्होंने माना कि अनुष्का के साथ उनकी फोटो सही थी। पोस्ट और फोटो भी उन्होंने ने ही सोशल मीडिया पर डाला था। उन्होंने ये भी कहा, प्रेम सब करते हैं, प्यार किया तो किया...कोई गलती नहीं की..कोई मुझे जनता के दिल से नहीं निकाल सकता।

नर्सिंग संवर्ग के रिक्त पदों पर सीधी भर्ती के लिए प्रक्रिया शीघ्र करें पूर्ण: उप मुख्यमंत्री शुक्ल

मेडिकल कॉलेज में आवश्यकतानुसार मैनपॉवर की व्यवस्था के लिए तैयार करें प्रस्ताव

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने निर्देश दिए हैं कि नर्सिंग संवर्ग के रिक्त पदों पर सीधी भर्ती के लिए भर्ती नियमों में आवश्यक संशोधन कर कर्मचारी चयन मण्डल को त्वरित रूप से मांग पत्र प्रेषित किए जाएं। फार्मासिस्ट ग्रेड-2, नेत्र सहायक तथा ओ.टी. टेक्नीशियन के पदों की पूर्ति के लिये भी भर्ती प्रक्रिया शीघ्र आरंभ करने के भी निर्देश दिए गए। मेडिकल कॉलेजों में आउटसोर्स से नियुक्ति संबंधी वर्तमान व्यवस्था में केवल अकुशल पदों की स्वीकृति है, जबकि विभागीय समिति द्वारा कुशल पदों की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है। इस विषय में व्यावहारिक आवश्यकताओं के दृष्टिगत प्रस्ताव तैयार कर केबिनेट में प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। जिससे उच्च स्तरीय सेवाओं का विधिवत एवं गुणवत्तापूर्ण प्रदाय सुनिश्चित हो सके। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में विभागीय योजनाओं, भर्ती प्रक्रिया, अधोसंरचना विकास, मानव संसाधन सुदृढ़ीकरण और चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता की वृहद समीक्षा कर महत्वपूर्ण निर्देश दिए।

बंधपत्रधारी चिकित्सकों की बेहतर उपयोगिता के लिए ओरिएंटेशन के निर्देश- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने ग्वालियर मेडिकल कॉलेज में कार्डियोथोरेसिक एवं वैस्कुलर सर्जरी (सीटीवीएस) विभाग की स्थापना के लिये प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए, जिससे हृदय रोगों विशेष रूप से बायपास सर्जरी की सुविधा ग्वालियर संभाग में सुलभ हो सके। इसी प्रकार इंदौर मेडिकल कॉलेज में नवजात एवं बाल चिकित्सा (पीडियाट्रिक्स/

नियोनेटोलॉजी) विभाग की स्थापना की कार्यवाही शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश भी दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने पूर्व की निवेश नीति के अंतर्गत लंबित प्रकरणों के समयबद्ध निराकरण के निर्देश दिये। बंधपत्रधारी चिकित्सकों की जिला स्तर पर कलेक्टर एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी की उपस्थिति में अभिमुखीकरण (ओरिएंटेशन) करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि चिकित्सकों को सेवा की महत्ता, दायित्व एवं प्रभावी संचालन के लिए प्रेरित करना और जिम्मेदारियों से अवगत होना आवश्यक है जिससे उनकी उपयोगिता को बेहतर बनाकर स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ किया जा सके।

फार्मेसी काउंसिल में पंजीयन एवं नियामक प्रक्रियाओं को सरल एवं पारदर्शी बनाने के दिए निर्देश- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने एचआरपी (हाई रिस्क प्रेगनेंसी) केंद्रों पर धात्री महिलाओं के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं एक ही कक्ष में उपलब्ध कराने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए। जिससे उनकी देखभाल सहज, सुरक्षित और समेकित रूप में संभव हो सके। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने फार्मेसी काउंसिल में पंजीयन एवं नियामक प्रक्रियाओं को सरल एवं पारदर्शी बनाने के लिए नियमों में आवश्यक परिवर्तन की कार्यवाही की समीक्षा की और शीघ्र प्रक्रिया पूर्ण करने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम अंतर्गत 600 आयुष मेडिकल ऑफिसर की नियुक्ति की प्रक्रिया को शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिला अस्पतालों में फोरेंसिक विशेषज्ञों की नियुक्ति के लिए भी कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए गए, जिससे कानूनी प्रकरणों एवं पोस्टमार्ट्म संबंधी कार्यों में गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके।

मेडिकल कॉलेजों में ऑन्को सर्जरी विभाग की स्थापना के निर्देश- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने आउटसोर्स मॉडल पर मेडिकल कॉलेजों में कैथ लैब की स्थापना के लिए दिशा-निर्देशों पर भी चर्चा की। उन्होंने प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर स्वस्थ भारत योजना (पीएम-अभीम) अंतर्गत स्वीकृत राशि का उपयोग वर्ष 2026 तक पूर्ण रूप से सुनिश्चित किए जाने के लिए समयबद्ध योजना तैयार कर आवश्यक कार्यवाही प्राथमिकता से पूर्ण करने के निर्देश दिए। प्रदेश के प्रमुख मेडिकल कॉलेजों में ऑन्को सर्जरी विभाग की स्थापना के लिए कार्य योजना को अंतिम रूप देने के निर्देश दिए। जिससे प्रदेश के हर क्षेत्र में कैंसर रोगियों को उत्कृष्ट उपचार सुविधा मिल सके। बैठक में प्रमुख सचिव श्री संदीप यादव एवं आयुक्त श्री तरुण राठी उपस्थित रहे।

रीडर्स क्लब का विमर्श

सोशल मीडिया दुधारी तलवार: प्रो. मनोज कुमार

भोपाल। सोशल मीडिया दुधारी तलवार है। इसके जितने फायदे हैं, उतना ही नुकसान है। सोशल मीडिया दैनंदिनी जीवन में इस कदर घुसपैठ कर गया है कि अब उसके बिना जीवन की कल्पना करना भी मुश्किल हो गया है. यह बात वरिष्ठ पत्रकार एवं रिसर्च जर्नल के संपादक प्रो. मनोज कुमार ने रीडर्स क्लब द्वारा विश्व सोशल मीडिया दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित विमर्श में कहा। आकाशवाणी भोपाल के पूर्व समाचार संपादक संजीव शर्मा ने कहा कि बार बार सोशल मीडिया पर सरकारी नियंत्रण से ज्यादा जरूरी है स्व-नियंत्रण। हमें ही तय करना है कि क्या अच्छा और क्या बुरा? जैसे सिक्के के दो पहलु होते हैं, वैसा ही सोशल मीडिया का भला और बुरा दो पक्ष हैं।

आजीविका मिशन में संचार अधिकारी और साहित्यकार संजय सक्सेना का कहना था कि सोशल मीडिया के चलते ही हम अपनी बात ना केवल लोगों तक पहुँचा पा रहे हैं बल्कि समाज के लिए प्रेरक भी बन रहा है। स्थानीय शासन में स्वच्छता मिशन से संबद्ध संजीव परसाई का कहना था कि केन्द्र सरकार का स्वच्छता अभियान की सफलता में सोशल मीडिया की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। हिन्दी की शिक्षिका डॉ. मोना का कहना था कि कोविड-19 के दौरान हमने देखा कि शिक्षण संस्थाओं में ताला लटक रहा था लेकिन मोबाइल के जरिए बच्चों की पढ़ाई निर्बाध चलती रही। सोशल मीडिया के नकरात्मक पक्ष पर उनका कहना था कि पालकों को इसकी निगरानी रखना चाहिए। पत्रकार और समाजसेवा से जुड़े अमिताभ पांडे कहते हैं कि संचार की सुविधा को सहज और सरल सोशल मीडिया ने बनाया है। कार्यक्रम के अंत में आभार व्यक्त करते हुए रीडर्स क्लब के विमर्श की संयोजिका श्रीमती मनीषा शर्मा का कहना था कि सोशल मीडिया उतना बुरा भी नहीं है, जितना बनाया गया है और उतना अच्छा भी नहीं है जैसा बताया जाता है। यह जरूर है कि समाज को जागरूक करने में सोशल मीडिया सबसे सशक्त और सरल माध्यम है।

मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश ओलंपिक संघ की बैठक को वर्चुअली किया संबोधित

अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में प्रदेश की भागीदारी और उपलब्धियां बढ़ाना सरकार का लक्ष्य : मुख्यमंत्री

खिलाड़ियों को आवश्यक प्रशिक्षण सहित सभी प्रोत्साहन उपलब्ध हैं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में मध्यप्रदेश की भागीदारी और उपलब्धियां बढ़ाने के उद्देश्य से राज्य सरकार खिलाड़ियों को हरसंभव सहयोग दे रही है। वर्ष 2028 में लॉस एंजिल्स में होने वाले ओलंपिक सहित सभी अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में मध्यप्रदेश के खिलाड़ी अधिक से अधिक संख्या में भाग लें और बड़ी संख्या में पदक लाएं, इस लक्ष्य के साथ प्रदेश में खेल गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। राज्य सरकार प्रदेश में खेल अधोसंरचना विस्तार के लिए निरंतर कार्य कर रही है, खिलाड़ियों को उत्कृष्ट प्रशिक्षण के साथ-साथ अन्य सहायता व प्रोत्साहन उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। राज्य शासन मध्यप्रदेश ओलंपिक संघ को हर संभव सहयोग उपलब्ध

कराने के लिए तत्पर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मध्यप्रदेश ओलंपिक संघ की जबलपुर में आयोजित वार्षिक बैठक को मुख्यमंत्री निवास से वर्चुअली संबोधित कर रहे थे। बैठक में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय वर्चुअली शामिल हुए। अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा तथा अपर मुख्य सचिव खेल एवं युवक कल्याण श्री मनु श्रीवास्तव इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश ओलंपिक संघ वर्ष 1952 से अर्थात् 73 साल से खेल के क्षेत्र में लगातार कार्यरत है। मध्यप्रदेश का 38वें राष्ट्रीय खेल उत्तराखंड में प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा और प्रदेश ने पहली बार तीसरा स्थान प्राप्त किया। मध्यप्रदेश में खेलों का इंफ्रास्ट्रक्चर तेज गति से आगे बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश में 22 से ज्यादा हॉकी के एस्ट्रोटर्फ हैं और 15 एथलेटिक ट्रैक हैं, जो कि देश में किसी भी प्रदेश में नहीं है। मध्यप्रदेश में 18 एक्सीलेंस एकेडमी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ओलंपिक संघ के सभी पदाधिकारियों को बधाई और शुभकामनाएं दीं। जबलपुर में हुई बैठक में मध्यप्रदेश ओलंपिक संघ के पदाधिकारी उपस्थित थे।

खंभे में उतरा करंट, एक मिनट चिपकी रही मासूम, मौत

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बिजली के खंभे में करंट उतरने से एक मासूम बच्ची उसकी चपेट में आ गई। वह एक मिनट तक खंभे से चिपकी रही। पास में मौजूद दो युवकों ने फावड़े के दस्ते से किसी तरह उसे पीछे खींचा। तक तक बच्ची बेसुध हो चुकी थी। उसे हमीदिया अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

घटना शाहजहांनाबाद में सोमवार दोपहर की है। बच्ची की मौत से नाराज लोगों ने बिजली विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। पुलिस ने समझाइश देकर मामला शांत कराया। बच्ची का नाम आयशा पिता साजिद खान (5) है। पिता ने उसे शनिवार को ही नया बैग और किताबें दिलाई थी। मंगलवार से पहली बार स्कूल जाने वाली थी।

नर्सरी क्लास में कराया था एडमिशन- आयशा सोमवार दोपहर करीब ढाई बजे खेलने के लिए घर से निकली थी। बाहर पानी भरा हुआ था और पास में एक खंभा था। आयशा ने जैसे ही उस खंभे को छुआ, उसे करंट लग गया। माता-पिता ने इसी साल उसका स्कूल में नर्सरी क्लास में एडमिशन कराया था।

इंदौर-देवास रोड के जाम पर हाईकोर्ट ने मांगा जवाब, 3 मौतों पर लगी याचिका

एनएचएआई ने कहा- लोग बिना काम से इतनी जल्दी निकलते ही क्यों हैं

इंदौर (नप्र)। इंदौर-देवास रोड पर लगे जाम को लेकर हाईकोर्ट ने 7 दिन में जवाब मांगा है। यहां शुक्रवार से 40 घंटे तक जाम लगा रहा था। जिसमें 3 लोगों मौत हो गई थी। सोमवार को इस संबंध में इंदौर हाईकोर्ट में जनहित याचिका पर सुनवाई हुई है। इस दौरान एनएचएआई के वकील ने कहा कि लोग बिना काम के इतनी जल्दी निकलते क्यों हैं।

शुक्रवार को यह याचिका देवास के एडवोकेट आनंद अधिकारी ने दायर की थी। मामले में जस्टिस विवेक रुसिया और जस्टिस पवन कुमार द्विवेदी की युगल बेंच ने सुनवाई की।

याचिकाकर्ता के एडवोकेट गिरीश पटवर्धन ने बताया- हाईकोर्ट ने एनएचएआई, पुलिस कमिश्नर, कलेक्टर को नोटिस जारी कर एक सप्ताह में जवाब मांगा है। टोल कंपनी और सड़क बनाने वाली कंपनी को भी पक्षकार बनाने के आदेश दिए हैं। एनएचएआई से कहा गया है कि वे सड़क बनाने वाले ठेकेदार और टोल काट्रैक्टर को नोटिस जारी करें।

जनहित याचिका में 3 मौतों की बात भी उठाई

एडवोकेट पटवर्धन ने कहा कि जाम के कारण शुक्रवार को हुई तीन मौतों की बात भी हमारी ओर से उठाई गई। लेकिन, सभी पक्षों से जवाब आने के बाद ही इसमें आगे कुछ कहा जा सकेगा। उन्होंने बताया कि सुनवाई के दौरान एनएचएआई की ओर से कहा गया है कि देवास रोड के बाद उज्जैन रोड पर जाम लग गया था। लोग बिना काम के इतनी जल्दी निकलते क्यों हैं। मांगलिया में चल रहे काम के कारण जाम लगा था। यहां सांसद-मंत्री भी पहुंचे थे। इस पर हाईकोर्ट ने कहा कि क्या तब जाकर जाम क्लियर हुआ।

शुक्रवार को लगा था 40 घंटे का जाम

इंदौर में शुक्रवार को इंदौर-देवास रोड पर 8 किमी लंबे जाम के कारण इंदौर के कमल पांचाल, शुजालपुर के बलराम पटेल (55) और गारी पिपल्या गांव के संदीप पटेल (32) की मौत हो गई। दो को हार्ट अटैक आया, जबकि एक पेशेंट ने अस्पताल पहुंचने से पहले दम तोड़ दिया। लंबे जाम में फंसे इंदौर के सैटेलाइट टाउनशिप, बिजलपुर निवासी किसान कमल पांचाल (62) की कार जाम में डेढ़ घंटे तक फंसी रही। इस दौरान उन्हें घबराहट हुई, वे तड़पते रहे और बेहोश हो गए। कमल को देवास के एक प्राइवेट हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

लापरवाह अधिकारियों पर होगी सख्त कार्यवाही : राज्यमंत्री श्रीमती गौर

भोपाल (नप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि समय पर काम नहीं करने वाले लापरवाह अधिकारियों कर्मचारियों पर सख्त कार्यवाही होगी। राज्यमंत्री श्रीमती गौर सोमवार को गोविंदपुरा क्षेत्र के वार्ड 66 में जनसंपर्क के दौरान जनता की समस्याओं को सुन रही थी। उन्होंने गोविंदपुरा क्षेत्र में जे.के. रोड स्थित गोयल अपार्टमेंट क्षेत्र के रहवासियों द्वारा नाली सफाई, जर्जर सर्विस रोड और रात्रि के समय अंधेरे के कारण उत्पन्न हो रही समस्याओं के तत्काल निराकरण के लिए निर्देश दिए।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि जन समस्याओं का समाधान हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है। इंद्रपुरी -ए- सेक्टर में जनसंपर्क के दौरान पार्क की स्वच्छता, घास की कटाई एवं सौंदर्यीकरण के लिये आवश्यक निर्देश दिए। साथ ही नाली में जमा कचरे की शीघ्र सफाई के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। छत्तीसगढ़ लेबर कॉलोनी का

निरीक्षण कर रहवासियों से संवाद किया। स्थानीय समस्याओं विशेषकर नाली सफाई, नाली निर्माण और सीवेज लाइन से संबंधित प्रकरणों पर तत्काल संज्ञान लेते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

छत्रसाल नगर फेस- 1 के रहवासियों ने बताया कि आसपास की कॉलोनियों में जल भराव हो जाता है। सड़के जर्जर हो चुकी हैं, पेयजल की भी समस्या है। राज्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को सड़क बनाने और पानी की टंकी का निर्माण कार्य जल्द से जल्द शुरू करने के निर्देश दिए। रविदास नगर के पार्क में पौधरोपण किया और रहवासियों की मांग पर गणेश उत्सव के पहले शेड निर्माण, पेपर ब्लॉक व फ्लोरिंग कार्य कराए जाने के लिये निर्देश दिए। साथी ही नर्मदा जल के लिए बल्क कनेक्शन दिए जाने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। भारत नगर में जर्जर हो गई सड़कों के निर्माण, पार्क की बाउंड्री वॉल और सौंदर्यकरण के निर्देश दिए। नैनागिरी आजाद पार्क में नाले पर से अतिक्रमण हटाने और नाले की सफाई के निर्देश दिए। बार-बार बिजली जाने और वोल्टेज कम होने की शिकायत को दूर करने अधिकारियों को निर्देशित किया। छत्रसाल नगर फेज -2 में शहीद मनोज सोनी स्मृति पार्क के सौंदर्यकरण, हाईमास्ट लगाने और पेड़ों की छटाई के निर्देश दिए। कॉलोनियों की नालियां चौक हो गई है, उन्हें साफ करने, सीवेज लाइन की मरम्मत और जर्जर सड़कों को बनाने के निर्देश भी दिए। कर्मवीर नगर पार्क में नवनिर्मित कम्युनिटी हॉल का निरीक्षण कर अधूरे कार्य को जल्द पूरा करने के लिये अधिकारियों को निर्देशित किया। इस दौरान पार्षद श्रीमती शिरोमणि शर्मा, श्रीमती उर्मिला मोर्य, श्री लवकुश यादव, श्री सुभाष पगारे, श्री भीकम सिंह बघेल, श्री राकेश राजपूत, श्री छोटू पंडित और अधिकारी मौजूद रहे।

उज्जैन में रविवार को खुलेंगे स्कूल, सोमवार छुट्टी

सावन में महाकाल की सवारी के चलते फैसला, प्रायवेट-सरकारी स्कूलों पर लागू रहेगा

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में 14 जुलाई से 11 अगस्त तक पहली से 12वीं तक के स्कूल रविवार को भी लगेंगे, जबकि सोमवार को अवकाश रहेगा। श्रावण महीने में भगवान महाकाल की निकलने वाली सवारी को देखते हुए

यह निर्णय लिया गया है। दरअसल, सवारी में भीड़ को देखते हुए कई रास्ते बंद कर दिए जाते हैं।

11 जुलाई से श्रावण का महीना शुरू हो रहा है। इस बार कुल छह सवारियां महाकाल मंदिर से निकलेंगी। पहली सवारी 14 जुलाई को रहेगी। सवारी वाले दिन सभी निजी और शासकीय स्कूलों की छुट्टी रहेगी। जबकि रविवार को स्कूल लगेंगे।

हर साल बाबा महाकाल की सवारी वाले दिन बड़ी संख्या में भक्त उज्जैन पहुंचते है। ऐसे में स्कूलों की बस भीड़ में फंस जाती है और बच्चे और श्रद्धालु परेशान होते है। इसको लेकर जिला प्रशासन ने फैसला किया है कि मंदिर से निकलने वाली 5 सवारी के दिन स्कूलों का अवकाश रहेगा। इसकी जगह एक दिन पहले रविवार को स्कूल लगेंगे।

स्कूल शिक्षा विभाग जारी करेगा आदेश- उज्जैन कलेक्टर रोशन सिंह ने बताया कि पिछले वर्ष की तरह हम व्यवस्था करेंगे। इसमें भक्तों और स्कूल के बच्चों को कोई परेशानी नहीं होगी। इसको लेकर जल्द ही शिक्षा विभाग अलग से ऑर्डर जारी करेगा। जिसमें उज्जैन नगर निगम क्षेत्र के सभी निजी और सरकारी स्कूलों पर निर्णय लागू होगा।

5 सवारी के लिए रविवार को लगेंगे स्कूल- महाकाल की पहली सवारी 14 जुलाई, द्वितीय सवारी 21 जुलाई, तृतीय सवारी 28 जुलाई, चतुर्थ सवारी 4 अगस्त को श्रावण मास में निकाली जाएगी। इसी तरह भादौ मास में पंचम सवारी 11 अगस्त को रहेगी। इन 5 सोमवार को स्कूलों की छुट्टी रहेगी। इससे एक दीन पहले रविवार को स्कूल खुलेंगे। हालांकि राजसी सवारी सोमवार 18 अगस्त को निकलेगी इस दिन स्थानीय अवकाश रहेगा। इसलिए रविवार को स्कूल नहीं लगाने पड़ेंगे।

इन मार्गो से निकलेगी सवारी- भगवान श्री महाकालेश्वर की सवारी श्री महाकालेश्वर मन्दिर के सभा मण्डप में शाम 4 बजे पूजन-अर्चन के बाद गुदरी चौराहा, बक्षी बाजार, कहारवाड़ी से होते हुए रामघाट शिप्रा तट पहुंचेगी। यहां सवारी का पूजन-अर्चन होने के बाद सवारी रामानुजकोट, मोढ़ की धर्मशाला, कार्तिक चौक, खाती समाज मन्दिर, सत्यनारायण मन्दिर, ढाबा रोड, टंकी चौराहा, छत्री चौक, गोपाल मन्दिर, पटनी बाजार, गुदरी बाजार होती हुई श्री महाकालेश्वर मन्दिर में वापस आएगी।

फील्ड अधिकारियों को दिन में एक बार हाजिरी लगानी होगी

भोपाल (नप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने मैदानी अधिकारियों के लिए सैल्फी अटेंडेंस को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। अब फील्ड अधिकारियों जिनमें जे.ई. एवं उससे ऊपर के अधिकारी शामिल हैं, को दो बार उपस्थिति दर्ज करने के स्थान पर दिन में कार्यालयीन समय में एक बार उपस्थिति दर्ज करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

कंपनी ने कहा है कि निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने की बढ़ती चुनौतियों एवं कार्य आवश्यकताओं को देखते हुए यह पाया गया है कि फील्ड अधिकारी अक्सर रखरखाव, विद्युत आपूर्ति और अधोसंरचना संबंधी कार्यों के लिए मैदानी भ्रमण पर रहते हैं, जिससे वे उपस्थिति समय-सारणी का पालन नहीं कर पाते हैं। ऐसे में फील्ड कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये और अधिकारियों की मैदानी आवश्यकता को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है कि ऑपरेशन एवं मेंटेनेंस (ओएंडएम), एसटीएम/एसटीसी/, सतर्कता, बीआई सेल तथा सिविल विभागों में फील्ड ड्यूटी पर तैनात कनिष्ठ अभियंता (जेई) एवं उससे ऊपर के अधिकारियों को 'अटेंडेंस पोर्टल 2.0' पर दो बार सैल्फी उपस्थिति दर्ज करने की अनिवार्यता से छूट प्रदान की जाए।

कंपनी ने स्पष्ट किया है कि फील्ड ड्यूटी पर लगे जे.ई. एवं उससे ऊपर के फील्ड अधिकारी किसी भी सुविधाजनक समय पर केवल एक बार उपस्थिति दर्ज कर सकेंगे। हालांकि कॉर्पोरेट कार्यालय में पदस्थ अधिकारी या फील्ड इकाइयों में केवल कार्यालयीन कार्य कर रहे अधिकारी, पूर्ववत दो बार उपस्थिति दर्ज करने की प्रणाली का पालन पूर्ववत करते रहेंगे। अन्य सभी कर्मचारियों, जिनमें आउटसोर्स कर्मचारी भी शामिल हैं, पर प्रचलित उपस्थिति प्रणाली प्रातः 10:00 बजे तक पंच-इन तथा शाम 6:00 बजे तक पंच-आउट करेंगे। कार्यावधि 8 घंटे की लागू रहेगी।

कंपनी ने कहा है कि यह छूट केवल फील्ड गतिविधियों के सुचारू संचालन के लिए है तथा यह सुविधा कार्मिकों के कार्यस्थल पर उपस्थित रहने की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं करती। यह व्यवस्था पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 01 जुलाई से 30 सितंबर 2025 तक प्रभावी रहेगी।

समृद्ध भारत की शिक्षित पहचान, कौशल विकास : मंत्री टेटवाल

शासकीय संभागीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था की लैब का किया उद्घाटन

भोपाल (नप्र)। कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री श्री गौतम टेटवाल ने उज्जैन स्थित शासकीय संभागीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था में सीमेंस कम्पनी के सीएसआर फण्ड से निर्मित अत्याधुनिक लैब का उद्घाटन किया। इस दौरान जॉइंट डारेक्टर सुनील कुमार ललावत, आईएमसी चेयरमैन राजेश गर्ग, विधायक श्री अनिल जैन सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

आईटीआई में आकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ : मंत्री गौतम टेटवाल

मंत्री श्री टेटवाल ने कहा कि मे विद्यार्थी जीवन मैं आईटीआई करके भविष्य निर्माण के बारे में सोचता था, आज सभी के बीच आकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मेरी पहचान आईटीआई से है। उन्होंने छात्र-छात्राओं को उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

बेटियां हर क्षेत्र में लहरा रही हैं परचम

मध्यप्रदेश सरकार हर वर्ग को आगे बढ़ाने का काम कर रही है। साथ ही बेटियों को भी सशक्त बनाने में अहम योगदान निभा रही है। इसी के चलते प्रदेश में बेटियों को 35 प्रतिशत का आरक्षण दिया जा रहा है। भारत के बेटियां हर क्षेत्र में अपना परचम लहराते हुए प्रदेश ही नही वल्कि पूरे देश में अपना नाम रोशन कर रहीं हैं।

प्रदेश सरकार के मुखिया आईटीआई के विकास के लिए सशक्त

मंत्री श्री टेटवाल ने कहा कि आईटीआई के माध्यम से छात्र-छात्राओं को सभी अत्याधुनिक ट्रेड के प्रशिक्षण दिए जाएंगे। जिससे विद्यार्थी स्वरोजगार स्थापित कर, समर्थ भारत के निर्माण में अपना योगदान दे सकें। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आईटीआई के विकास के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। समृद्ध भारत की शिक्षित पहचान के तहत सभी छात्र-छात्राओं को सशक्त बनाने के लिए आईटीआई के माध्यम से प्रयोगशालाओं का निर्माण कर उन्हें प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। जिससे अधिक से अधिक रोजगार स्थापित हो सके।

युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए सरकार हर ट्रेड में प्रशिक्षण की सुविधा दे रही है

मंत्री श्री टेटवाल आईटीआई के माध्यम से सभी छात्र-छात्राओं को पारंपरिक एवं अत्याधुनिक ट्रेडों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। छात्रों को अत्याधुनिक ट्रेड्स में प्रशिक्षण मिले इसके लिए मध्यप्रदेश सरकार लगातार काम कर रही है। सरकार किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण में कोई कमी नहीं छोड़ेगी।

युवाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना सरकार का लक्ष्य

मंत्री श्री टेटवाल ने कहा कि युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना मध्यप्रदेश सरकार का लक्ष्य है। कौशल विकास के तहत यह अत्याधुनिक प्रयोगशाला युवाओं को सशक्त बनाने में कारगर साबित होगी। युवाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रदेश सरकार ने कौशल विकास के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध संस्थान ग्लोबल स्किल पार्क का निर्माण भोपाल में कराया है। जिसमें छात्र कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मेक्ट्रोनिक्स AR/VR, इंडस्ट्री 4.0, रोबोटीक, ड्रोन टेक्नोलॉजी सहित कई अत्याधुनिक प्रशिक्षण दिए जाएंगे। जिसका सभी को लाभ मिलेगा। ग्लोबल स्किल पार्क में शत प्रतिशत प्लेसमेंट तो होगा ही साथ ही व्यक्ति अपना स्वरोजगार भी स्थापित कर सकेगा। प्रदेश के युवाओं को सशक्त बनाना सरकार का सर्वोपरि उद्देश्य है।

संपादकीय

अब पुरी में हादसा

पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा के दौरान मची भगदड़ के दौरान तीन श्रद्धालुओं की मौत और 50 से अधिक लोगों का घायल होना उसी लापरवाही और धार्मिक पर्यटन को लगातार बढ़ावा देने की सोच और उस अनुपात में भीड़ प्रबंधन न कर पाने का दुखद परिणाम है। पुरी में इस बार रिकॉर्ड 10 लाख से ज्यादा श्रद्धालु रथ यात्रा देखने पहुंच गए थे। जिसके कारण प्रशासन की सारी व्यवस्थाएं धरी रह गईं। हादसा उस समय हुआ जब तड़के चार बजे भारी संख्या में भक्त रथ खींचने के बाद सरधाबली इलाके में दर्शन के लिए जुटे हुए थे। पुरी के जिलाधिकारी सिद्धार्थ एस. स्वैन ने बताया कि यह घटना तड़के करीब चार बजे हुई, जब सैकड़ों श्रद्धालु रथयात्रा उत्सव देखने के लिए मंदिर के पास एकत्रित हुए थे। राज्य मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने इस हादसे को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है और हादसे की जांच के निर्देश दिए हैं। साथ ही सरकार ने सख्त कार्रवाई करते हुए कर्तव्य में लापरवाही के आरोप में इसके बाद राज्य सरकार ने पुरी के कलेक्टर और एसपी का तबादला कर दिया। चंचल राणा को नया कलेक्टर और पिनाक मिश्रा को नया एसपी बनाया गया है। साथ ही डीसीपी और कमांडेंट को भी निलंबित कर दिया गया है। बताया जाता है कि हादसे की वजह बने दो ट्रक? वहीं अधिकारियों ने बताया कि अनुष्ठान के लिए सामग्री ले जा रहे दो ट्रकों के भगवान जगन्नाथ और उनके भाई भगवान बलभद्र एवं देवी सुभद्रा के रथों के पास भीड़भाड़ वाले स्थान पर घुसने के बाद अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों का कहना है कि हादसे की वजह अकुशल प्रबंधन है। रथयात्रा के दौरान वीआईपी के लिए नया रास्ता बनाया गया था, और आम लोगों को दूर से ही बाहर निकलने को कहा गया था। लोग प्रवेश द्वार से ही बाहर निकलने लगे, जिससे भीड़ बढ़ गई। यातायात व्यवस्था भी ठीक नहीं थी, क्योंकि कई अनाधिकृत पास वाले वाहन मंदिर के पास आ गए। प्रशासन ने भीड़ को ठीक से नियंत्रित नहीं किया। सबसे बड़ी समस्या निकास द्वार की थी। गौरतलब है कि पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा प्राचीनकाल से चली आ रही है। इसके पीछे चार अलग-अलग किवदंतियां हैं। इनमें प्रमुख राजा इंद्रद्युम्न की है। कहा जाता है कि राजा ने जब जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां बनवाईं तो गुंडिचा ने विश्वकर्मा को मूर्तियां बनाते देख लिया। जिससे मूर्तियां अधूरी ही रह गईं। तब आकाशवाणी हुई कि भगवान इसी रूप में रहना चाहते हैं। उसके बाद राजा ने उन्हीं अधूरी मूर्तियों को मंदिर में स्थापित कर दिया। उस वक्त भी आकाशवाणी हुई कि भगवान जगन्नाथ साल में एक बार अपनी जन्मभूमि मथुरा जरूर आएंगे। स्कंद पुराण के उत्कल खंड के अनुसार राजा इंद्रद्युम्न ने आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन प्रभु के उनके जन्मस्थान आने की व्यवस्था की। तभी से यह रथयात्रा चली आ रही है। हालांकि इस हादसे के लिए राज्य के सीएम मोहन चरण मांझी ने भगवान जगन्नाथ के भक्तों से व्यक्तिगत माफी मांगी है। वैसे कहा तो यह भी जा रहा है रथयात्रा में एक दिन पहले भी भगदड़ की स्थिति बनी थी, जिसमें कुछ लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। लेकिन इस बात की अधिकृत पुष्टि नहीं हुई। पिछले कुछ साल से धर्मोन्माद और श्रद्धा बढ़ने से लगभग हर धार्मिक स्थल पर लोगों की बेतहाशा भीड़ होने लगी है। इसे नियंत्रित व नियमित करने के बारे में कोई भी गंभीरता से नहीं सोच रहा है। बेतहाशा भीड़ का नतीजा यह होता है कि जरा सी अव्यवस्था होने पर समूचा सिस्टम बैठ जाता है। पुरी में यही हुआ है। इसे कैसे रोकें, इस पर गंभीर विचार जरूरी है।

नजरिया

तनवीर जाफ़री

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ईरान ने दिखाया विश्व को आईना

दूसरी तरफ़ वह ईरान है जो पश्चिमी देशों की 'बांटो और राज करो' की नीति का शिकार होकर ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ इस्लामिक कोऑपरेशन के 57 सदस्य देश होने के बावजूद पश्चिमी साज़िश के तहत केवल शिया-सुन्नी मतभेद के नाम पर हमेशा अलग थलग किया जाता रहा। इसके अलावा 1979 में जबसे ईरान में अमेरिका परस्त शाह मोहम्मद रज़ा पहलवी का तख़्ता पलट हुआ और अयातुल्लाह रूहुल्लाह ख़ोमैनी के नेतृत्व में इस्लामी गणराज्य की स्थापना हुई तभी से ईरान अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों का भी सामना करता आ रहा है। इस अमेरिकी विरोध की वजह केवल यह थी कि अयातुल्लाह ख़ोमैनी के नेतृत्व वाली इस्लामिक क्रांति ने ईरान को न केवल पश्चिमी सभ्यता से मुक्त कर ईरानी सभ्यता पर चलने की राह हमवार की बल्कि ईरान की तेल सम्पदा को लेकर अमेरिकी मनमानी किये जाने के अमेरिकी सपनों को भी चकनाचूर कर दिया। यही वजह थी कि अमेरिका ने ईरान के 1979 इस्लामिक क्रांति के बाद के शासन को 'कट्टरपंथी शासन' कह कर संबोधित करना शुरू कर दिया। और पूरे विश्व में ईरान को लेकर यही धारणा बनाने की कोशिश भी की।

मध्य एशिया में मंडरा रहे युद्ध के बादल फ़िलहाल छंटते हुये नज़र आ रहे हैं। 13 जून को इस्राईल ने ईरान पर अचानक बड़ा हमला कर दिया था। इन हमलों में ईरान के उच्चस्तरीय 20 कमांडर और परमाणु वैज्ञानिक मारे गए थे। इसके बाद ईरान ने जवाबी कार्रवाइयां कीं। दोनों ओर से ड्रोन व मिसाइल की बौछार 12 दिनों तक होती रही। इस्राईल के इतिहास में यह पहला मौक़ा था जब ईरान जैसे किसी देश ने धोखे से किये गये उसके हमलों का ऐसा मुंहतोड़ जवाब दिया जिसकी इस्राईल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू या इस्राईल की जनता ने भी कभी कल्पना नहीं की होगी। इस्राईल बनाम ईरान संघर्ष में इस्राईल के वजूद से सम्बंधित कुछ बातें कभी भी नज़रअंदाज़ नहीं की जा सकतीं। जर्मन तानाशाह एडोल्फ़ हिटलर के उत्पीड़न के बाद यहूदी मुख्य रूप से 1930 के दशक से 1940 के दशक के बीच फ़िलिस्तीनियों की अनुकम्पा से यहाँ बसने लगे। इस दौरान, लगभग 2,50,000 यहूदी फ़िलिस्तीन पहुंचे थे। द्वितीय विश्व युद्ध 1939-1945 के बाद, विशेष रूप से होलोकॉस्ट के बाद, 1945 से 1948 तक यहूदी प्रवास फिर से बढ़ा, और 1948 में इस्राईल की स्थापना के साथ यह प्रक्रिया और भी तेज़ हो गयी। चूँकि इस्राईल को अरब के इस क्षेत्र में बसाने में पश्चिमी देशों ख़ासकर अमेरिका व ब्रिटेन की दूरगामी सोच काम कर रही थी इसलिये इन देशों ने इसे भरपूर समर्थन देकर न केवल इनके फलने फूलने में इस्राईल की पूरी मदद की बल्कि क़ब्ज़े की इस ज़मीन पर अपने विस्तार के लिये की जाने वाली हिंसक कार्रवाइयों में भी हमेशा इनके साथ रहे। इसी अमेरिकी समर्थन का नतीजा है कि इस्राईल गत दो वर्षों में ग़ज़ा के लगभग 80 हज़ार बेगुनाह व निहत्थे लोगों को मार चुका है।और उसकी बर्बरतापूर्ण कार्रवाई अभी भी जारी है।

दूसरी तरफ़ वह ईरान है जो पश्चिमी देशों की 'बांटो और राज करो' की नीति का शिकार होकर ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ इस्लामिक कोऑपरेशन के 57 सदस्य देश होने के बावजूद पश्चिमी साज़िश के तहत केवल शिया-सुन्नी मतभेद के नाम पर हमेशा अलग थलग किया जाता रहा। इसके अलावा 1979 में जबसे ईरान में अमेरिका परस्त शाह मोहम्मद रज़ा पहलवी का तख़्ता पलट हुआ और अयातुल्लाह रूहुल्लाह ख़ोमैनी के नेतृत्व में इस्लामी गणराज्य की स्थापना हुई तभी से ईरान अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों का भी सामना करता आ रहा है। इस अमेरिकी विरोध की वजह केवल यह थी कि अयातुल्लाह ख़ोमैनी के नेतृत्व वाली इस्लामिक क्रांति ने ईरान को न केवल पश्चिमी सभ्यता से मुक्त कर ईरानी सभ्यता पर चलने की राह हमवार की बल्कि ईरान की तेल सम्पदा को लेकर अमेरिकी मनमानी किये जाने के अमेरिकी सपनों को भी चकनाचूर कर दिया। यही वजह थी कि अमेरिका ने ईरान के 1979 इस्लामिक क्रांति के बाद के शासन को 'कट्टरपंथी शासन' कह कर संबोधित करना शुरू कर दिया। और पूरे विश्व में ईरान को लेकर यही धारणा बनाने की कोशिश भी की।

उधर ईरान के अतिरिक्त इस्लामी जगत के लगभग सभी शेष देश पश्चिमी देशों ख़ासकर अमेरिका की आँखों का तारा बने रहे। इसी लिये अमेरिका ने बहरीन,कुवैत,यूएई,इराक़,सऊदी अरब,जॉर्डन जैसे अनेक देशों को ईरान का भय दिखा कर इन देशों की सुरक्षा करने के नाम पर यहाँ अपने सैन्य ठिकाने बना रखे हैं। कई अमेरिकी युद्धपोत भी इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। अमेरिका यह सारी क़वायद केवल ईरान को घेरने की अपनी दूरगामी साज़िश के तहत करता आ रहा है। उधर ईरानी नेतृत्व जिसकी बागडोर उन शिया उलेमाओं के हाथों में है जिनकी प्रेरणा का मुख्य स्रोत हज़रत अली व उनके पुत्र हज़रत इमाम हुसैन का वह घराना है जिसने लगभग 1450 वर्ष पूर्व करबला (इराक़) में अपनी व अपने परिजनों की क़ुर्बानी देकर इतिहास में सुनहरे अक्षरों में रहती दुनिया तक के लिये यह लिख दिया कि दुश्मन चाहे जितना ताक़तवर क्यों न हो परन्तु यदि वह क्रूर है,अमानवीय है,असत्य और हिंसा पर चलने वाला है,अधार्मिक है तो ऐसे दुश्मन के आगे सिर्फ़ उसकी ताक़त से प्रभावित होकर झुकना 'अधर्म' है। उस समय हुसैन ने यज़ीद की लाखों की सेना की परवाह नहीं की। जिसका नतीजा है कि आज पूरे विश्व में अली और उनके बेटे हुसैन का परचम लहराते देखा जा सकता है जबकि कोई मुसलमान अपने औलादों का नाम तक यज़ीद रखना पसंद नहीं करता।

उसी करबला से प्रेरणा लेकर ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामनेई ने इतिहास में पहली बार वह कर दिखाया जिसकी दुनिया उम्मीद भी नहीं कर रही थी। ईरान की तरफ़ से इस्राईल पर इतने ज़बरदस्त जवाबी आक्रमण हुये कि यदि एक सप्ताह और युद्ध खिंचता तो संभवतः पूरा इस्राईल खंडहर में तब्दील हो जाता। उधर चतुर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प भी ईरानी आक्रामकता से भयभीत होकर अपनी इज़्ज़त बचाने के अवसर तलाशने लगे। दुनिया में कोई देश ऐसा नहीं जो इस्राईल व अमेरिका को एक साथ चुनौती देने का साहस रखता हो। वर्तमान समय की सच्चाई तो यही है कि जैसे इलाक़े के गुंडे के साथ खड़े होकर लोग अपने आप को भी सूरमा समझने लगते हैं उसी तरह अमेरिका का पिछलग्गू या उसका चाटुकार बनना भी दुनिया के अनेक देश अपना सौभाग्य समझते हैं। कुछ अमेरिकी शक्ति से प्रभावित होकर कुछ मधुर रिश्ते बनाये रखने की ख़ातिर तो कुछ व्यावसायिक दृष्टिकोण के मद्देनज़र। परन्तु ईरान अकेला ऐसा देश है जिसने 46 वर्षों के लम्बे अरसे का अमेरिकी प्रतिबंध झेलने के बावजूद अपने आप को इतना मज़बूत कर लिया कि इस्राईल को अपना अस्तित्व ख़तरे में पड़ता नज़र आने लगा तो अमेरिका को अपनी झूठी आबरू बचाने की नौबत आन पड़ी।

बहरहाल,दोनों देशों के बीच युद्ध विराम की ख़बर से पूरी दुनिया ने चैन की सांस तो ज़रूर ली है। परन्तु इस युद्ध विराम को लेकर इस्राईल व अमेरिका द्वारा किये जा रहे भ्रामक दावों के बीच ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह ख़ामनई का बयान एक बार फिर ईरान के मज़बूत पक्ष व उसके बुलंद हौसलों की तस्वीर पेश करता है।

आयतुल्लाह ने साफ़ साफ़ कहा है कि ईरान न तो 'थोपी गई जंग' स्वीकार करेगा और न ही 'थोपी गई शांति'। ईरान किसी तरह के दबाव के आगे नहीं झुकेगा और किसी भी बाहरी हस्तक्षेप, ख़ासकर अमेरिका की सैन्य दख़लअंदाज़ी का कड़ा जवाब देगा। उन्होंने ने अमेरिका को साफ़ शब्दों में चेतावनी भी दी कि यदि वह इस्राईल-ईरान युद्ध में सैन्य हस्तक्षेप करता है तो उसे ऐसा नुक़सान झेलना पड़ेगा जिसकी भरपाई नहीं हो सकेगी। 'जंग का जवाब जंग से, बम का जवाब बम से, और हमले का जवाब हमले से' दिया जाएगा। यह बयान उनकी निडरता व उनके उस आक्रामक रुख़ को भी दर्शाता है, जिसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ईरान किसी भी हमले का जवाब उसी स्तर पर देगा और किसी तरह की कमज़ोरी हरगिज़ नहीं दिखाएगा। ख़ामनई ईरान के सर्वोच्च नेता होने के साथ साथ देश के सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ़ भी हैं। और सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ़ होने के चलते ईरान के संविधान के अनुच्छेद 110 के तहत सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह खामनेई को ही युद्ध या शांति की घोषणा करने का अधिकार हासिल है। लिहाज़ा कहना ग़लत नहीं होगा कि ईरान ने विश्व विजेता समझने की ग़लतफ़हमी पालने वाले देशों को अपनी जवाबी कार्रवाई और भविष्य के इरादों से उन्हें आईना ज़रूर दिखा दिया है।

उपलब्धि

डॉ. हरीशकुमार सिंह

प्रदेश के लिए जरुरी था जल गंगा संवर्धन अभियान

दिसंबर 1992 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 22 मार्च को विश्व जल दिवस घोषित किया और वर्ष 1993 में पहला विश्व जल दिवस मनाया गया। विश्व भर में जल को लेकर कई चिंताएं हैं जिनमें मुख्य रूप से जल संकट, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन सम्मिलित हैं। जल संकट का आशय दुनिया भर में कई लोगों को स्वच्छ और सुरक्षित पानी उपलब्ध नहीं है जिससे स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वैश्विक जल संकट के अंतर्गत दुनिया की लगभग पच्चीस प्रतिशत आबादी पानी की कमी और तनाव का सामना कर रही है और आने वाले दिनों में ये संकट और भी बढ़ने वाला है। भारत और अन्य तीन देशों में हुए एक अध्ययन के अनुसार वर्ष 2040 तक पूरी दुनिया को पीने के पानी की किल्लत का सामना कर पड़ सकता है क्योंकि भूगर्भीय जल का स्तर तेजी से कम हो रहा है। जल की कमी कई कारणों से हो रही है जिनमें जल की मांग , आपूर्ति से अधिक होना,जल संबंधी बुनियादी ढांचा का अपर्याप्त होना भी है। जल की कमी विश्व में हर कहीं महसूस की जा रही है जिसका सबसे बुरा असर गरीब और निचले समुदायों पर पड़ता है। जैसे जैसे वैश्विक जनसँख्या बढ़ रही है उपलब्ध जल संसाधनों का सरंक्षण और नए जल प्रबंधन की अत्यंत आवश्यकता है।

केंद्र सरकार ने भी जल संसाधनों की योजना और विकास और उनके इष्टतम उपयोग को नियंत्रित करने के लिए जल संसाधन मंत्रालय द्वारा वर्ष 1987 में पहली राष्ट्रीय जल नीति बनाई गई है और समय समय पर इसे अद्यतन भी किया गया है। राष्ट्रीय जल नीति जल प्रबंधन के लिए क़ानून विकसित करने और राज्यों की क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप राज्य स्तरीय जल नीतियों पर कार्य करना है। राष्ट्रीय जल नीति में पानी को सार्वजनिक संपत्ति और राष्ट्रीय संपत्ति के रूप में मान्यता दी गई है और पानी के उपयोग के लिए एक पारिस्थितिक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

जाहिर है कि मध्यप्रदेश में भी जल के उचित प्रबंधन, जल संसाधनों के सरंक्षण और जल के लिए नवीन कार्य योजनाओं की आवश्यकता महसूस कीं जाती रही है। भूजल स्तर में कमी, अंतर्राजीय नदी जल विवाद, जलाशयों का मरना, जल प्रदूषण, जल भराव, वर्षा जल संचयन जैसी समस्यायें मध्यप्रदेश में भी रहीं है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश का कार्यभार संभालते ही सबसे पहले अंतर्राजीय नदी जल विवाद का समाधान किया और दिसम्बर 2024 में पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना के लिए केंद्र, राजस्थान और मध्यप्रदेश के बीच बहत्तर हजार करोड़ रूपये की एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किये जिससे दोनों राज्यों को सिंचाई सुविधा और जल की उपलब्धता हो सके। ताप्ति बेसिन मेगा रिचार्ज प्रोजेक्ट के तहत महाराष्ट्र से समझौता किया गया। इसके बाद जरुरी था कि राष्ट्रीय जल नीति के अनुरूप प्रदेश में पानी का सरंक्षण, जल संसाधनों का विकास, पानी का वितरण, जल प्रदूषण नियंत्रण, जल के लिए सतत कार्य और सार्वजनिक भागीदारी से जल के लिए जन जागृति लाई जाए। वैसे भी भारतीय दर्शन में पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु और आकाश पंचतत्व माने गये हैं जिनमें जल महत्वपूर्ण घटक है और पर्यावरण के अंतर्गत तीन महत्वपूर्ण घटक आते हैं जिनमें जल, जंगल और जमीन सम्मिलित हैं और इनके सरंक्षण से प्रकृति और मानव सभ्यता के बीच संतुलन बना रहता है।

बेहतर और प्रभावी जल प्रबंधन के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश में 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान का आयोजन किया और इस अभियान से पूरे प्रदेश को जोड़ा। पहले की राज्य सरकारों की कागजी योजनाओं की बजाय इस जल गंगा संवर्धन अभियान को जमीन पर उतारा और अभियान की गति और सफलता पर पूरी नजर रखी। अभियान का आयोजन 30 जून तक था जिससे प्रदेश में वर्षा से पहले, जल को रोकने के समस्त उपाय किये जा सकें और भूजल का स्तर बढ़ाया जा सके। प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान को मुख्यमंत्री जी ने जनआंदोलन बना दिया और जिले के कलेक्टर, वन विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, प्रदेश के जलदूत , जनप्रतिनिधियों ने मिलकर खेत - तालाबों से लेकर ऐतिहासिक बावड़ियों तक जल संरक्षण के लिए व्यापक कार्य ऐतिहासिक बावडियों के जीर्णोद्धार के लिए किये गये। प्रदेशव्यापी जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के लिए प्रभावी कार्य किए गए जिनमें कुँओं का रिचार्ज , झिरियाँ, स्टॉप डेम, वन्य जीव सरंक्षण आदि सम्मिलित हैं। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के जनजातीय परिवारों को भी इस अभियान से जोड़ा जाकर जल और जंगल के बचाव और समृद्धि के प्रयास किये गये हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान में प्रदेश की नदियों का गौरव और अस्मिता को लौटाना है जिससे नदियाँ फिर से और प्रवाहमान और सिंचाई के लिए तैयार हो सकें। राजधानी भोपाल में जनजागरण और चेतना के लिए सदानीरा जैसे सांस्कृतिक आयोजन भी राज्य सरकार ने करवाए जिससे ये अभियान, आन्दोलन बन सके। आगामी बारिश में सात करोड़ से अधिक पौध रोपण की भी तैयारी है।

जल गंगा संवर्धन अभियान की महत्ता और सफलता के लिए सिर्फ एक उदाहरण है कि मध्यप्रदेश की धार्मिक नगरी उज्जैन में चिंतामण गणेश मंदिर स्थित प्राचीन लक्ष्मण बावड़ी एक अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक एवं पौराणिक स्थल है। इस बावड़ी का उल्लेख कई प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है। इसके जल को पवित्र और चमत्कारी माना जाता रहा है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की दूरदर्शी सोच के जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत किए गए भागीरथी प्रयासों से आज यह प्राचीन बावड़ी फिर से अपने पौराणिक स्वरूप में लौट आई है, और आस्था के केन्द्र में पुनः स्थापित हो गई है। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत प्रदेश में लाखों जल संरचनाओं को जीर्णोद्धार कर पुनर्जीवन प्रदान किया गया है । झाबुआ, देवास, बुरहानपुर, अलीराजपुर, जबलपुर, विदिशा, खंडवा, हरदा,उमरिया सहित समूचे प्रदेश में भूजल के स्तर को बढाने के उपाय किये गये हैं। जिले में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मियों को पुरस्कृत भी किया गया है । पूरे प्रदेश में जल गंगा संवर्धन के ये प्रयास वर्षा ऋतु में जल संग्रहण बढ़ाने और भू-जल स्तर सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे इसमें संदेह नहीं है। आने वाले दिनों में शहरों में पानी को पीने योग्य बनाने के लिए, बड़े पैमाने पर जल शोधन संयंत्रों की क्षमता का आकलन और नवीनीकरण राज्य सरकार की प्राथमिकता में होगा जिससे पीने का पानी सभी को हमेशा की तरह मुफ्त उपलब्ध हो सके।

निर्मल आनंद

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

जलवे एक जुलाई के

वरिष्ठ नागरिक एक जुलाई के जलवे से बखूबी वाकिफ हैं। उनके पढ़ाई के दिनों में स्कूल खुलने की तारीख तय थी, जुलाई महीने का पहला दिन। जैसे नौकरीपेशा लोगों के वेतन मिलने का दिन नियत होता है, महीने की पहली तारीख। पहली तारीख नाम से फिल्म भी बनी थी, जिसका गाना 'खुश है जमाना आज पहली तारीख है' एक रेडियो स्टेशन पर हर पहली तारीख को बजा करता था। पता नहीं, रेडियो पर बजने के कारण यह गाना खूब पसंद किया जाने लगा था या लोकप्रिय होने की वजह से रेडियो पर बजाया जाता था ! एक जुलाई पढाई शुरू होने का दिन होता था। बच्चे गर्मी के मई और जून, दो महीनों की छुट्टियाँ नानी के यहाँ बिताने के बाद तरोताज़ा होकर नई क्लास में पुराने दोस्तों के साथ पढ़ने के लिए उमंग के साथ आया करते थे। पहले दिन सभी विद्यार्थी नई कक्षा, नया सेक्शन, नए टीचर को लेकर खूब उत्सुक और उत्साहित होते थे। क्लास में कौन किसके पास बैठेगा, कौन आगे और कौन पीछे की कतार में रहेगा जैसे जरूरी मसले निपटाने की कोशिश की जाती थी। यूनिफॉर्म, किताबें, खेलकूद चर्चा का मुख्य विषय होते थे। गोया पूरे साल के कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार हो जाती थी।

नए एडमिशन की अलग ही गहमागहमी होती थी। लोगों के जुबान की कद्र की जाती थी। स्कूल में पहली बार दाखिला लेते समय अभिभावक द्वारा बच्चे की बताई गई जन्मतिथि को बिना किसी हील-हुज्जत के प्रामाणिक मान लिया जाता था। यहाँ तक कि अनुमानित उम्र को भी पूरा ऑनर किया जाता था। एडमिशन करने वाले टीचर को अंदाजन बताई गई आयु में जन्म दिनांक की खोज करते हुए एक जनवरी या एक जुलाई ही हाथ लगती थी। उदाहरण के लिए सन् उन्नीस सौ छप्पन में बच्चे का एडमिशन हो रहा है, और साथ आए माता-पिता, चाचा-ताऊ या किसी और अभिभावक ने उसे छह साल का बता दिया तो गुरु जी बिना किसी हिचक के उसकी डेट ऑफ बर्थ सन् उन्नीस सौ पचास की एक जनवरी या एक जुलाई मान लेते थे। यह थी बात की इज्जत ! भ्रमित न हों, पुराने अनेक व्यक्तियों की डेट ऑफ बर्थ एक जनवरी या एक जुलाई का केवल यही कारण नहीं होता। बहुत से लोगों का बर्थडे सचमुच एक जनवरी या एक जुलाई होता है।

भले ही अब स्कूल जून में शुरू हो जाते हों लेकिन उससे एक जुलाई का महत्व कम नहीं होता। यह हमारा राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस है। यह दिन प्रसिद्ध चिकित्सक और पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री डॉ. बिधान चंद्र रॉय को श्रद्धांजलि देने हेतु मनाया जाता है। आठ साल पहले जीएसटी इसी दिन लागू हुआ था। कृषि प्रधान भारत का कृषि वर्ष एक जुलाई से शुरू होता है। हरित क्रांति के बाद हमारा देश अन्न के मामले में आत्मनिर्भर हो चुका है। हल, बैल की जगह ट्रैक्टर और मशीनों ने ले ली है। फसलों की सिंचाई केवल बादलों की कृपा पर निर्भर नहीं है। देश में मॉनसून आ रहा होता है। चारों तरफ झमाझम बारिश दिखाई देने लगती है। बादल, बूँदें, हरियाली और न जाने कितनी मनभावन बातों के साथ सावन के स्वागत की तैयारी शुरू हो जाती है। बाढ़ का कहर भी आ धमकता है। नदी किनारे बसे गाँवों और जलनिकासी के कुप्रबंधन के शिकार शहरों में जनजीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। जब बाढ़ भयानक होने लगती है तब उसका हवाई निरीक्षण करना पड़ता है। पुराने समय में बरसात के मौसम में आवागमन बाधित हो जाया करता था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है कि वर्षा ऋतु में भगवान राम ने सीता जी के खोज का काम स्थगित कर दिया था। आधुनिक काल में भी साधु-सन्यासी चातुर्मास के लिए ठहर जाते हैं। किसान धरती माता से फसल का वरदान पाने के लिए खेती के काम में लग जाते हैं। नदी-नाले खुश होकर उफान भरने लगते हैं। बैसाख, जेठ की भीषण तपन से शुष्क हुई पृथ्वी को बादल अपनी वर्षा से तृप्त कर देते हैं। पतझड़ से मुरझाए वृक्षों पर बहार आ जाती है। झरनों की शुभ्र धार का संगीत मन को आनंदित करने लगता है। गर्मी से डरकर बिलों में छिपे अनेक जीव ठंडी फुहार में भीगने बाहर निकल आते हैं। आसमान में वर्षा रानी इंद्रधनुष की रंगोली सजाने लगती है। एक जुलाई से इन्हीं जलवों को लूटने के लिए कमर कस लीजिए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

नंदकिशोर बर्वे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

डालने वाले चूने से बेहतर होता है लगाने वाला चूना

साहब नाराज हो गये। कारण छोटा सा है। पिद्दी भर का। उनको किसी ने आईना दिखा दिया। आप तो जानते ही हैं, कि आईना कभी भी झूठ नहीं बोलता। और साहेबान को सच सुनने / देखने की आदत नहीं होती। बस यही बखेड़ा है। अब यूँ दावे तो कई ऐसी बहुत सारी चौथे स्तंभ की संस्थाएं भी करती हैं, सच दिखाने के, पर उनके आईने सशर्त भी हो सकते हैं। पर चेहरा देखने दिखाने वाला आईना 'कोई शर्त होती नहीं प्यार में, या कि परछाई में' टाइप होता है, इधर कोई सामने आया नहीं, कि लो सुनो मत, देखो खरी खरी ! शायर कहता है -

हम आईना हैं, आईना ही रहेंगे, फ़िक्र वो करें,
जिनकी शक्ल में कुछ और, दिल में कुछ और है।

... तो साहब नाराज हो गये। जैसा कि कहा गया है कि उनको किसी ने आईना दिखा दिया। अब वो साहब ही क्या, जो नाराज होकर मन मसोस कर रह जाएँ। यह काम आम आदमी को फुल्ली अलाट कर रखा है। तो साहब नाराज भी होते हैं, और कुछ कर गुजरने का हक़,हिम्मत हिमाकत और फ़ितरत रखते हैं। याने वे जो चाहें कर सकते हैं। साहब के पास चूना एक ऐसा हथियार होता है, जिसे संवैधानिक दर्जा भी दिया जा सकता है। सो साहब अगर नाराज हैं, तो वे अपने इस हथियार का इस्तेमाल करते हैं।

साहब का चूना भी कई तरह का होता है। एक तो प्रचलित लगाने वाला चूना जो हर ओहदेदार के पास उसकी योग्यता के अनुसार होता है। जिसे वह - जिस भी तंत्र में है - अपनी क्षमता और हिम्मत और ओहदे की ऊँचाई के हिसाब से लगाता रहता है। दूसरे प्रकार का चूना लाइन डालने वाला होता है।

रहिमन भले ही इस बात को लेकर चिंतित रहते थे, कि अगर चूना एक बार सूखा गया तो फिर उसकी उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। परन्तु वे अपने इस तंत्र के पहले हो गये, इसलिए उनके पास चिंता के अलावा कुछ था नहीं। और इसी चिंता से उन्होंने समाज को ऐसी बुराइयों से आगाह अवश्य किया। पर साहबों के पास जो चूना होता है, वह बहुउपयोगी होता है। वह साहब ही क्या जो चूने को अनुपयोगी हो जाने दें।

लगाने का जो चूना होता है, वह ईश्वर की तरह सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान मान होता है। साथ ही आत्मा की तरह अजर अमर भी होता है। जो न बदलती हवा से सूखता है, न सच्चाई की आग से जलता है, और न ही ईमानदारी का कोई प्रहार उसे काट सकता है। लगाने वाला चूना छोटे मोटे अस्त्र शस्त्र से लेकर ब्रहमास्त्र तक के अनेक रूप धर लेता है। अस्त्र शस्त्र का यह उपक्रम जिसको चूना लगाया जा रहा है, उसकी हैसियत के सीधे अनुपात में होता है। साहब अपने दैनिक जीवन में चूना लगाने का काम करते हैं, और विशेष अवसरों पर चूना डालने का काम भी करते हैं। चूना डालने से पहले वे किसी से किसी बात पर नाराज होते हैं। फिर अपनी डालने वाली चूने की पोटली लेकर दल बल ले साथ वहीं निकल लेते हैं। जहाँ उनके गुस्से का भाजन होता है।

गुस्से का पात्र इस औचक हमले के लिए बिलकुल तैयार नहीं होता। वह गिड़गिड़ाता है। साहब अड़े रहते हैं। या तो चूना डालकर वापस जायेंगे, या कि चूना लगाकर। चूना बेचारा पसोपेश में जमींदोज होऊं, या कालिख बनकर किसी की जेब पर पुत जाऊं। पर साहब के होते कोई और निर्णय कैसे ले सकता है ? सही हो या गलत निर्णय तो साहब ही लेंगे।

यहाँ पर यह बात नोट करने लायक है, कि चूने में भी वर्ग संघर्ष है। लगने वाल चूना, डालने वाले चूने को अपने से कमतर मानता है। उसमें भी 'साहब भाव' घर कर जाता है। और आप तो जानते ही हैं कि 'साहब भाव' हर भाव पर भारी है। इसे क्यूं भी कह सकते हैं, कि जो साहब हैं, वे हर भाव पर भारी हैं। जो भाव खाये, वही साहब।जो भाव रखे, वह काहे का साहब? अब आप पूछेंगे कि क्या भाव शून्य होना, साहब होने की अनिवार्य शर्त होती है ? तो समझ लीजिये कि ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। जिसमें भाव भी हैं, और साहबपन भी वह इस तंत्र में अनोखा प्राणी हो जाता है। और अनोखी चीज़ें लूप लाइन के म्यूजियम के लिए होती हैं, मेन स्ट्रीम वाले रोजमर्रा के जीवन के लिए नहीं। शायर कहता है-

घरों पर नाम थे, नामों के साथ ओहदे थे,
बहुत तलाश किया कोई आदमी ना मिला।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस

मुनीष भाटिया

डॉक्टर्स : सेवा और गुणवत्ता से सशक्त हो स्वास्थ्य व्यवस्था

आज के दौर में जब चिकित्सा के क्षेत्र में युवाओं का रुझान तेजी से बढ़ रहा है, तो यह दर्शाता है कि करियर के साथ-साथ सेवा भाव भी उनमें कितना गहरा है। नीट जैसी कठिनतम परीक्षाओं में लाखों की तादाद में अभ्यर्थियों का भाग लेना इसी का सूचक है। यह रुझान एक सकारात्मक परिवर्तन का संकेत है, जहाँ युवा सिर्फ आर्थिक लाभ के बजाय मानवता की सेवा को भी महत्व दे रहे हैं। इसके अलावा, मेडिकल के क्षेत्र में भी कॉलेजों की संख्या में वृद्धि हुई है, किंतु उनमें प्रवेश ले रहे अभ्यर्थियों की गुणवत्ता पर ध्यान देना आज बेहद जरूरी हो चला है। मेडिकल संस्थानों को केवल मुनाफ़ा कमाने के उद्देश्य से लाखों-करोड़ों की फीस लेने पर नियंत्रण आवश्यक है ताकि एक उज्जवल भविष्य के साथ गरीब का बच्चा भी चिकित्सक बनने के अपने सपने को पूरा कर सके।

हर वर्ष एक जुलाई को भारत में राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाया जाता है। यह दिन भारत के महान चिकित्सक और पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री डॉ. बिधान चंद्र रॉय की जयंती और पुण्यतिथि के रूप में चुना गया है। डॉ. रॉय ने चिकित्सा और राजनीति दोनों क्षेत्रों में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया, जो न केवल पेशेवर उत्कृष्टता का प्रतीक है, बल्कि देश सेवा और मानवीय मूल्यों के प्रति उनके समर्पण को भी दर्शाता है। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्ची सेवा सीमाओं और पेशेवर सीमाओं से परे होती है – वह सीधे हृदय से निकलती है और मानवता के उत्थान की दिशा में अग्रसर होती है। यह विशेष दिन केवल एक औपचारिक स्मरण नहीं है, बल्कि यह उन अनगिनत डॉक्टरों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान प्रकट करने का अवसर है, जो दिन-रात बिना थके, बिना रुके मानव सेवा में रत रहते हैं। वे न केवल रोगियों का इलाज करते हैं, बल्कि उनके जीवन में आशा का संचार भी करते हैं। किसी भी स्वास्थ्य प्रणाली की सफलता में यदि कोई सबसे स्थायी और संवेदनशील स्तंभ है, तो वह डॉक्टर ही हैं।

आज के दौर में जब चिकित्सा के क्षेत्र में युवाओं का रुझान तेजी से बढ़ रहा है, तो यह दर्शाता है कि करियर के साथ-साथ सेवा भाव भी उनमें कितना गहरा है। नीट जैसी कठिनतम परीक्षाओं में लाखों की तादाद में अभ्यर्थियों का भाग लेना इसी का सूचक है। यह रुझान एक सकारात्मक परिवर्तन का संकेत है, जहाँ युवा सिर्फ आर्थिक लाभ के बजाय मानवता की सेवा को भी महत्व दे रहे हैं। इसके अलावा, मेडिकल के क्षेत्र में भी कॉलेजों की संख्या में वृद्धि हुई है, किंतु उनमें प्रवेश ले रहे अभ्यर्थियों की गुणवत्ता पर ध्यान देना आज बेहद जरूरी हो चला है। मेडिकल संस्थानों को केवल मुनाफ़ा कमाने के उद्देश्य से लाखों-करोड़ों की फीस लेने पर नियंत्रण आवश्यक है ताकि एक उज्जवल भविष्य के साथ गरीब का बच्चा भी चिकित्सक बनने के अपने सपने को पूरा कर सके। यह सुनिश्चित करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि चिकित्सा शिक्षा सभी वर्गों के लिए सुलभ हो, न कि केवल विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए। साथ ही, चिकित्सा संस्थानों पर भी कड़ी निगरानी ज़रूरी है कि कहीं वे केवल मुनाफ़ा बनाने के उद्देश्य में ही तो नहीं लगे हैं, कहीं उनके द्वारा प्रदान की जा रही शिक्षा की गुणवत्ता में समझौता तो नहीं हो रहा। दुर्भाग्य से, नीट परीक्षा में धांधलेबाजी और भ्रष्ट आचरण की खबरें चिंताजनक हैं। यदि कोई अभ्यर्थी इस तरह के अनुचित तरीकों से चिकित्सा शिक्षा में प्रवेश पा जाता है, तो यह सोचने वाला विषय है कि ऐसे भावी चिकित्सक किस तरह का सेवाभाव रखेंगे। चिकित्सा का पेशा अत्यंत संवेदनशीलता, ईमानदारी और समर्पण की मांग करता है। भ्रष्टाचार के माध्यम से प्रवेश पाने वाले व्यक्तियों में इन मूलभूत गुणों की कमी होने की आशंका रहती है, जो अंततः रोगी की देखभाल और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के लिए एक गंभीर खतरा बन सकता है। पिछले वर्ष ऐसे मामलों का सामने आना इस बात का प्रमाण है कि इस तरह के भ्रष्ट आचरण पर कठोर निगरानी और त्वरित कार्रवाई की सख्त आवश्यकता है। चिकित्सा शिक्षा की नींव को कमजोर करने वाली किसी भी गतिविधि को बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह सीधे तौर पर समाज के स्वास्थ्य और भविष्य को प्रभावित करती है। कड़े नियम, पारदर्शी प्रक्रियाएं और सख्त दंड प्रणाली लागू करके ही हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि चिकित्सा के क्षेत्र में केवल योग्य और सेवा-भाव से प्रेरित व्यक्ति ही प्रवेश पाएं। साथ ही, चिकित्सा संस्थानों पर भी कड़ी निगरानी जरूरी है कि कहीं वे केवल मुनाफ़ा बनाने के उद्देश्य में ही तो नहीं लगे हैं, कहीं उनके द्वारा प्रदान की जा रही शिक्षा की गुणवत्ता में समझौता तो नहीं हो रहा। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि वे नैतिक मूल्यों और पेशेवर मानकों को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। तभी चिकित्सक दिवस की सही मायनों में सार्थकता सिद्ध हो सकती है और हम वास्तव में राष्ट्र निर्माण में चिकित्सकों के योगदान को सशक्त कर पाएंगे।

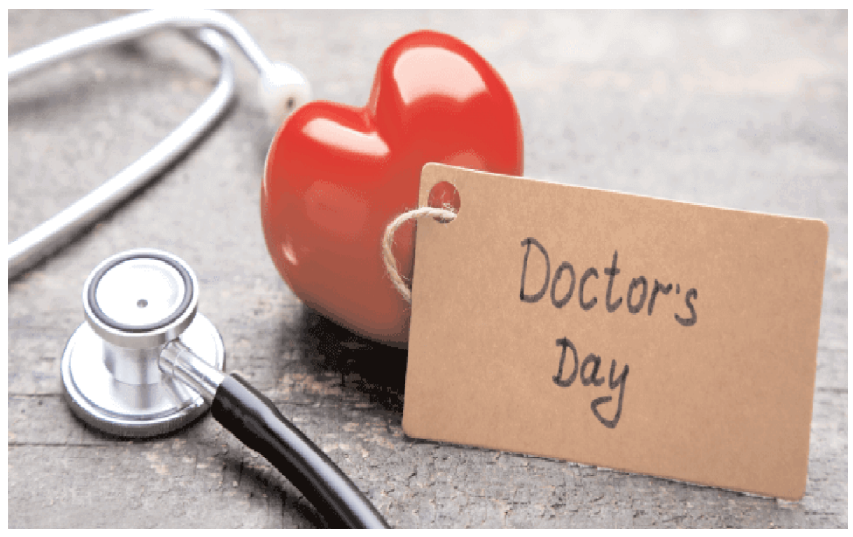

चिकित्सक केवल एक पेशेवर नहीं होता – वह कई रूपों में सेवा करता है। वह माता-पिता की तरह रोगी का दर्द महसूस करता है, मित्र की तरह उसे दिलासा देता है, और एक मार्गदर्शक की तरह उसके जीवन में प्रकाश भरता है। डॉक्टर का यह योगदान किसी पद या पैसे से नहीं मापा जा सकता। यह एक आंतरिक प्रेरणा है जो उसे हर दिन दूसरों के लिए जीने की शक्ति देती है। डॉक्टर अक्सर ऐसे कठिन हालातों में कार्य करते हैं जहाँ न केवल शारीरिक श्रम की जरूरत होती है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी अत्यंत आवश्यक होता है। बावजूद इसके, वे मुस्करा कर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं – यही उन्हें विशेष बनाता है। अक्सर स्वास्थ्य सेवाओं में चर्चा का केंद्र डॉक्टर ही होते हैं – उनके निर्णय, शल्य-क्रिया, या इलाज की विधियाँ। डॉक्टर जीवन बचाने का विज्ञान जानता है। रोगी की सेवा करते हुए डॉक्टर न केवल उसके शरीर का इलाज करते हैं, बल्कि उसकी मानसिक स्थिति को भी संभालते हैं। वे मरीज के दर्द को महसूस करते हैं, उसकी बेचैनी को समझते हैं और बिना कहे ही उसकी आवश्यकता को पहचान जाते हैं। जब एक रोगी अस्पताल में दाखिल होता है, तो वह केवल बीमारी के बोझ से नहीं टूटता, बल्कि अकेलेपन, डर और अनिश्चितता से भी जूझता है। उस समय डॉक्टर ही होता है जो उसकी आंखों में विश्वास भरता है, उसे यह महसूस कराता है कि वह अकेला नहीं है। यही कारण है कि डॉक्टर की भूमिका सिर्फ इलाज तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका मानवीय विस्तार भी है।

कोविड-19 महामारी ने इस सत्य को सबसे उजागर रूप में सामने लाया। जब पूरी दुनिया अपने घरों में सुरक्षित रहने का प्रयास कर रही थी, तब डॉक्टर अस्पतालों में मोर्चा संभाले खड़े थे। पी पी ई किट्स में घंटों काम करना, सांस लेने में कठिनाई के बावजूद सेवा देना, संक्रमण के डर को पीछे छोड़कर पीड़ितों के पास पहुँचना – यह केवल पेशागत कर्तव्य नहीं था, बल्कि यह एक तपस्विनी भावना का परिचायक था। डॉक्टरों ने अपने कर्म से यह सिद्ध कर दिया कि वे केवल सहयोगी नहीं, बल्कि समाज के सच्चे नायक हैं। एक समय था जब चिकित्सा को समाज में एक प्रतिष्ठित पेशे के रूप में देखा जाता था, लेकिन आज भी इसकी महत्ता और सम्मान में कोई कमी नहीं आई है। चिकित्सा अब एक और भी सशक्त पेशा बनकर उभरा है। युवाओं के बीच चिकित्सा के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। यह केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक सेवा की भावना से प्रेरित है। आज देश भर में मेडिकल कॉलेजों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। युवा इस क्षेत्र में प्रशिक्षण लेकर न केवल अपनी जीवन दिशा बदल रहे हैं, बल्कि समाज में नई चेतना का संचार भी कर रहे हैं। उनके लिए यह पेशा अब केवल नौकरी नहीं, बल्कि स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता का मार्ग बन गया है।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि क्या हम डॉक्टरों को वह सम्मान और सुविधाएं दे रहे हैं, जिसकी वे अधिकारी हैं? सिर्फ एक दिन की प्रशंसा पर्याप्त नहीं है – उन्हें उचित वेतन, बेहतर कार्य परिस्थितियाँ, मानसिक स्वास्थ्य सहायता और सामाजिक मान्यता की आवश्यकता है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उनकी सेवा भावना का शोषण न हो, बल्कि उसे सम्मान और सहयोग मिले। चिकित्सा केवल एक करियर विकल्प नहीं है – यह एक जीवन-दर्शन है। यह उन लोगों का मार्ग है जो जीवन को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीने का माध्यम मानते हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो सेवा, सहानुभूति और समर्पण से परिपूर्ण है। चिकित्सकों को भी यह याद रखना होगा कि उनका पेशा एक महान सेवा है। उन्हें मरीज के साथ अपने व्यवहार में 'अपनत्व' और संवेदनशीलता को कायम रखना चाहिए। पिछले कुछ दिनों से चिकित्सकों के दुर्व्यवहार की खबरें, जिसमें परिजनों द्वारा 'गलत इलाज' के नाम पर आरोप लगाए गए हैं, चिंता का विषय हैं। ऐसे मामले न केवल डॉक्टर-मरीज के बीच के महत्वपूर्ण भरोसे को तोड़ते हैं, बल्कि चिकित्सा पेशे की गरिमा पर भी सवाल उठाते हैं। चिकित्सकों को यह समझना होगा कि उपचार की सफलता में वैज्ञानिक कौशल के साथ-साथ मानवीय स्पर्श और सहानुभूति का भी उतना ही महत्व है। एक विनम्र और संवेदनशील व्यवहार मरीज के डर को कम करता है और उसके ठीक होने की प्रक्रिया में भी मदद करता है। पारदर्शिता, स्पष्ट संवाद और रोगियों के प्रति सम्मान एक स्वस्थ चिकित्सा संबंध की नींव है।

कटाक्ष

अजय कुमार बियानी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

भोपाल का ब्रिज या ब्रेन टीज़र?

भोपाल में ऐशबाग क्षेत्र का वह ऐतिहासिक क्षण, जब आठ सालों की तपस्या के बाद जनता को एक नया रेलवे ओवर ब्रिज मिला, अब धीरे-धीरे एक नए किस्से की शुरुआत बनता जा रहा है। ऐसा किस्सा, जिसमें विकास तो है, लेकिन दिशा नहीं। लागत तो है, लेकिन लॉजिक नहीं।

बात कुछ यूं है कि इस ब्रिज ने भोपालवासियों को आश्वासन दिया था कि अब जाम, घंटों की प्रतीक्षा और लोकल ट्रेन की सीट जैसी लड़ाईयों से छुटकारा मिलेगा। लेकिन जब ब्रिज पूरी शान से सामने आया, तो लोगों ने हेलमेट से ज्यादा मैप ऐप्स को टटोला – क्योंकि समझ ही नहीं आया कि यह ब्रिज है या ट्रैफिक जादूगर का पजल।

अब जरा सोचिए, ब्रिज पर चढ़ते ही गाड़ी को 90 डिग्री के मोड़ पर घुमाना है – बिना यह सोचे कि पीछे से कौन सी कार, स्कूटर या भावनाएं टकरा जाएँगी। यानी जो काम हम बचपन में कंपास से करते थे, अब वही सड़क पर करना पड़ेगा - पर बिना प्रैक्टिस के।

ब्रिज के रहस्य और रोमांच

यह ब्रिज आजकल भोपाल के रोमांच प्रेमियों के लिए नया अड्डा बन गया है। कुछ लोग यहां मोड़ पर ड्राइविंग टेस्ट देने आते हैं, तो कुछ इसे 'भोपाल ड्रिफ्ट' कहकर सोशल मीडिया पर ट्रेंड कर रहे हैं।

ब्रिज के उद्घाटन के बाद एक स्थानीय बुजुर्ग बोले - 'बेटा, पुल तो बहुत सुंदर बना है, बस एक दिक्कत है – इसकी दिशा और दशा में वास्तु दोष है।'

और यह बात अब धीरे-धीरे सच लगने लगी है। कोई कहता है ये ब्रिज पथभ्रष्ट इंजीनियरिंग का अद्भुत उदाहरण है, तो कोई इसे 'कुंभकरण ब्रिज' कहता है - जो आठ साल सोता रहा और उठते ही मुंह मोड़ बैठा।

ब्रिज को लेकर जनता की प्रतिक्रिया

स्थानीय लोगों के बीच इस ब्रिज को लेकर मीम वॉर शुरू हो चुकी है। एक यूजर ने लिखा- 'इस ब्रिज पर गाड़ी चलाना वैसा ही है जैसे मुड़ते वक्त बीवी से बहस करना - दोनों ही खतरनाक हैं।'

दूसरे ने लिखा- 'ऐसा ट्विस्ट आया है, कि साजिद खान की फिल्में भी शर्मिंदा हो जाएं।'

कई वाहन चालक अब ब्रिज पर चढ़ने से पहले 'हनुमान चालीसा' पढ़ना जरूरी समझते हैं। वहीं कुछ ने तो अपने स्कूटर पर 'ब्रिज से बचाव हेतु स्टंट विशेषज्ञ' की स्टिकर लगवाना शुरू कर दिया है।

प्रशासन का जवाब- 'काम अभी बाकी है'

जब यह मामला बढ़ा तो संबंधित विभाग के एक अधिकारी ने प्रेस को बताया - 'यह डिज़ाइन तकनीकी दृष्टिकोण से बिल्कुल सही है। थोड़े समय में लोग इसके आदी हो जाएंगे।'

ठीक उसी तरह जैसे हम सालों से बिजली कटौती, सड़क के गड्ढे और महंगाई के आदी हो गए हैं।

भविष्य की संभावनाएं

अब चर्चा ये भी है कि ब्रिज के पास एक स्पीड ब्रेकर म्यूज़ियम और एक 'झटका अनुभव केंद्र' भी बनाया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ समझ सकें कि कैसे एक ब्रिज भी मनोरंजन का साधन बन सकता है। एक शरारती युवक ने तो प्रस्ताव भेज दिया कि इस ब्रिज को 'खतरों के खिलाड़ी' का शूटिंग स्पॉट बना दिया जाए।

इंदौर से आए एक ड्राइवर ने कहा- 'भैया, हमारे यहाँ तो ब्रिज पर सेल्फी लेते हैं, यहाँ तो ब्रिज पर आखिरी इच्छा पूरी करने की भावना आती है!'

ब्रिज बना, पर भरोसा नहीं

कहते हैं सड़कें शहर की रगें होती हैं, और ब्रिज- धमनियाँ। लेकिन अगर वही धमनियाँ 90 डिग्री पर मुड़ जाएँ, तो दुर्घटनाओं की संभावनाएँ नहीं, गारंटी बढ़ जाती है।

विकास के नाम पर बना ये ओवर ब्रिज फिलहाल लोगों के ओवर थिंकिंग का केंद्र बन चुका है। और अगर यही हाल रहा तो शायद इसे 'भोपाल का भूलभुलैया ब्रिज' घोषित कर देना चाहिए।

अंत में एक भोपाली युवा की बात याद आती है – 'ब्रिज बना है, पर मन में अब भी गड्ढे हैं।'

बैंक में प्रोबेशनरी ऑफिसर: आकर्षक और चुनौतीपूर्ण जॉब

कॉरियर

विजय रांगणेकर

लेखक सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

बैंक में प्रोबेशनरी ऑफिसर की नौकरी हमेशा से ही आकर्षक और चुनौतीपूर्ण मानी जाती है। जॉब का सबसे ज्यादा क्रेज बैंकिंग सेक्टर को लेकर रहता है वैसे तो बैंक में कई पदों पर भर्तियां होती हैं। लेकिन बैंक प्रोबेशनरी ऑफिसर की बात ही कुछ और है। यही कारण है कि बैंक में प्रोबेशनरी ऑफिसर बनना युवाओं की पहली पसंद रहती है। गत वर्ष बैंक में नौकरी के लिए करीब 1.50 करोड़ युवाओं ने फॉर्म भरे थे इससे अंदाजा लगाया जा सकता हैं कि बैंक में नौकरी के लिए युवा कितने उत्साहित रहते हैं बैंक पीओ बनने के लिए भर्ती परीक्षा देनी होती है। बैंक प्रोबेशनरी ऑफिसर परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए मान्यता प्राप्त संस्थान या यूनिवर्सिटी से किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री का होना अनिवार्य है। आयु सीमा 21 से 30 साल होती है।

हर साल 'इंस्टिट्यूट ऑफ़ बैंकिंग पर्सनेल सिलेक्शन' भर्ती परीक्षा आयोजित करता है। हर साल लाखों उम्मीदवार परीक्षा के लिए उपस्थित होते हैं। आईबीपीएस पीओ चयन प्रक्रिया 3 चरणों में आयोजित की जाती है। जिन्हें उम्मीदवार को पास करने की आवश्यकता होती है- प्रारंभिक, मुख्य और साक्षात्कार। उम्मीदवारों को आईबीपीएस द्वारा निर्धारित न्यूनतम कट-ऑफ अंक हासिल करके प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है। प्रीलिम्स को क्वालिफाइंग परीक्षा माना जाता है। केवल प्रीलिम्स क्वालिफाई करने वाले उम्मीदवार ही मेन्स के लिए पात्र होंते हैं। इस चरण में प्राप्त अंकों को उन अंकों में नहीं जोड़ा जाता, जिन्हें अंतिम चयन के दौरान ध्यान में रखा जाता है। आईबीपीएस पीओ प्रीलिम्स परीक्षा के लिए अंग्रेजी भाषा, रीज़निंग एबिलिटी और क्वांटीटेटिव एप्टीट्यूड की परीक्षा एक घंटे अवधि की होती है। प्रारम्भिक परीक्षा में सफल होने पर उम्मीदवार मुख्य परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए पात्रता प्राप्त करता है।

मुख्य परीक्षा पास करने के लिए उम्मीदवार को न्यूनतम कट-ऑफ अंक प्राप्त करना आवश्यक है। इस चरण को पास करने वाले उम्मीदवारों को ही साक्षात्कार चरण के लिए बुलाया जाता है। अंतिम चयन के लिए अंक तय करते समय इस चरण में प्राप्त अंकों को ध्यान में रखा जाता है। साक्षात्कार अंतिम चरण होता है। यह आमने-सामने की बातचीत होती है जिसमें उम्मीदवारों से सदस्यों के एक पैनल द्वारा प्रश्न पूछे जाते हैं। मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार दोनों में प्राप्त अंकों के आधार पर आधिकारिक रूप से चयनित उम्मीदवारों की सूची को अंतिम रूप दिया जाता है।

विमर्श

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

चाय पर विचार विमर्श करने का दौर न जाने कहां चला गया

दुनिया ही बदल सी गई है। किसी के पास समय ही नहीं बचा है हर आदमी बहुत ही व्यस्त दिखता है भले उसके पास कोई काम हो या नहीं पर वह आनलाईन दुनिया का अपने को बादशाह मान ही रहा है। ऐसे बादशाहों के साथ चाय पीते हुए कोई सुख नहीं मिलता पर अब इसी तरह चाय पीते हुए लोग मिलते हैं। अब चाय पर बैठकर आराम से बातें करने वाले लोग कम ही मिलते हैं और बहस और विचार विमर्श का दौर तो न जाने कहां चला गया है फिर भी जब तब चाय पीते हुए मित्र मिल जाते हैं तो फिर वह बातचीत की दुनिया शुरु हो जाती है। एक दौर था जब चाय पर बहुत सारी बातें होती रहती थी और इस तरह से होती थी की चाय का एक दौर ही चल पड़ता , एक चाय खत्म होती पर बातें और बहसें खत्म नहीं होती बातों का सिलसिला चलता ही रहता कि उन बातों के क्रम को आगे बढ़ाने के लिए दूसरी चाय बनवाई जाती और इस तरह चाय पर बातें और दुनिया और दुनिया भर की कथा चलती रहती थी।

चाय की बात करते-करते आदमी अपने समय की बात करने लगता है। कभी भी चाय केवल चाय भर नहीं होती थी, चाय के साथ पूरी एक दुनिया ही घूमते हुए आ जाती है। एक समय था जब चाय पीना पिलाना आदमी का शौक हुआ करता था। आदमी बतकही के लिए समय निकालता था और यह जो समय होता वह चाय पर ही कटता था। आज हाल यह हो गया है कि हर आदमी मोबाइल में उलझा है उसे फुर्सत ही नहीं है कि किसी के साथ चाय पीते हुए बातचीत करें। यदि वह चाय भी साथ पी रहा होगा तो पूरा समय मोबाइल में ही बितायेगा।

दुनिया ही बदल सी गई है। किसी के पास समय ही नहीं बचा है हर आदमी बहुत ही व्यस्त दिखता है भले उसके पास कोई काम हो या नहीं पर वह आनलाईन दुनिया का अपने को बादशाह मान ही रहा है। ऐसे बादशाहों के साथ चाय पीते हुए कोई सुख नहीं मिलता पर अब इसी तरह चाय पीते हुए लोग मिलते हैं। अब चाय पर बैठकर आराम से बातें करने वाले लोग कम ही मिलते हैं और बहस और विचार विमर्श का दौर तो न जाने कहां चला गया है फिर भी जब तब चाय पीते हुए मित्र मिल जाते हैं तो फिर वह बातचीत की दुनिया शुरु हो जाती है। एक दौर था जब चाय पर बहुत सारी बातें होती रहती थी और इस तरह से होती थी की चाय का एक दौर ही चल पड़ता, एक चाय खत्म होती पर बातें और बहसें खत्म नहीं होती बातों का सिलसिला चलता ही रहता कि उन बातों के क्रम को आगे बढ़ाने के लिए दूसरी चाय बनवाई जाती और इस तरह चाय पर बातें और दुनिया और दुनिया भर की कथा चलती रहती थी।

एक समय में चाय की दुनिया आदमी को आधुनिकता से, वैचारिकी से बात और बहस से जोड़ने के साथ साथ मानवीय मूल्यों और व्यवहार शास्त्र को प्रकट करने का भी माध्यम थी। घर पर जब चाय बनती तो इतनी बनती थी की दो चार लोग और बढ़ जाएं तो उनके लिए भी अलग से चाय बनानी नहीं पड़ती थी सबको यह पता रहता था कि यहां चाय और सामाजिकता, गांव घर की कथा और लोगों की दुनिया भर की बातें साथ साथ चलती रहती हैं और इन सबके बीच में चाय एक सेतु है जिसके रास्ते से सब इस दुनिया में आते हैं। बातों बातों में चाय बना जाती थी और चाय पीते पीते न जाने कितनी बातें हो जाती थी और इन बातों की कीमत कितनी थी इसका हिसाब तो लगाया ही नहीं जा सकता। हां हर चाय के साथ लोगों का हालचाल खबर और कौन कहां है क्या कर रहा है आदि की विधिवत जानकारी ली जाती थी और इतना ही नहीं किसके लिए क्या ठीक रहेगा कौन पढ़ाई लिखाई में कैसा है और आगे उसे किस स्ट्रीम में पढ़ाई करनी चाहिए इन

सब बिंदुओं पर चाय के दौरान ही बात होती थी। एक तरह से कहें कि पूरी दुनियादारी की किताब चाय पर ही चलती थी। ऐसे में यह बड़ा महत्वपूर्ण विषय था कि कौन किसके लिए चाय बना रहा है और यह भी तय था कि यदि कोई आपके लिए चाय बनवा रहा है तो वहां पर आपका महत्वपूर्ण स्थान है वहां आपकी बात को सब ध्यान से सुनेंगे।

चलिए आपके लिए चाय बना लेते हैं ...इस कथन के पीछे गहरी आत्मीयता होती है। किसी को भी लग सकता है कि चाय में क्या है चाय तो बन ही जाती है अपने ही चाय में थोड़ा पानी और बढ़ा लिया या थोड़ा सा दूध बढ़ा दिया और थोड़ी सी चाय की पत्ती ले ली पर यह कहना या यह सोचना आसान है पर किसी के लिए चाय बनाना या किसी की चाय बढ़ा लेना इतना आसान भी नहीं है जैसा कि दिखता है या जैसा कि हम सोचते हैं। कहां वर्षों बीत जाते हैं और कोई चाय पर मिलता ही नहीं, बहुत सारे लोग इंतजार ही करते रह जाते हैं कि कोई चाय पर बुलायें तो चलें चाय पीने। वैसे चाय तो सभी पीते हैं और प्रतिदिन पीते हैं कुछ नहीं तो दो चाय सुबह शाम की सभी पी लेते हैं पर दो से अधिक चाय पीने वाले भी कम नहीं हैं, किसी न किसी बहाने से चाय पी ही लेते हैं। बाहर काम धाम के क्रम में आदमी एक सामान्य दुनियादारी के क्रम में भी चाय पी लेता है पर वास्तव में किसी को चाय पर बुलाने की बात बहुत कम होती है। इस तरह से नहीं होती कि चाय पर बैठकर दुनिया भर की बातें आराम से करेंगे और दुनिया की चर्चा करेंगे कि कहां क्या हो रहा है या दुनिया कहां जा रही है। सब अपनी अपनी दुनिया में मगन रहते हैं किसी को किसी की कहां चिंता और किसी के पास इतनी फुर्सत भी नहीं है कि किसी और के लिए समय निकालें, कम से कम इतना समय निकालें की चाय पर बैठकर आराम से देश दुनिया पर चर्चा कर सकें, दुनिया के लिए कुछ विचार रख सकें। देश दुनिया के हालात पर विचार करें एक दूसरे को समझने जानने की कोशिश करें। इस तरह की पहल करते लोग-बाग अब दिन पर दिन कम होते जा रहे हैं और जो थोड़ी-सी कहानी लेकर चलते हैं वो कहानी के साथ ही चाय पीते रहते हैं। हर चाय एक कहानी की तरह होती है जहां से दुनिया अपने तमाम रंग रेखाओं में घूमते हुए दिख पड़ती है। जिस तरह से आदमी चाय की दुकान पर अकेला नहीं होता उसके साथ चाय पीते हुए सब लोग उसके परिचित से हो जाते हैं और बहुधा चाय की थड़ियों पर एक दुनिया ही बस जाती है जहां से बातें, संसार और जीवन क्रम की चर्चा होती रहती है।

वॉटर हार्वेस्टिंग को लेकर नागरिक नहीं हैं जागरूक, व्यर्थ बह रहा बारिश का पानी

निर्माण के लिए 2447 ने किये आवेदन, 1135 ने ही बनाया हार्वेस्टिंग सिस्टम

संजय द्विवेदी, बैतूल। मानसून के सीजन में भी बैतूल नगरवासी एवं प्रशासन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को लेकर गंभीर नहीं है। यहीं वजह है कि बारिश का पानी सडक़ों पर व्यर्थ बह रहा हैं। और नगर का भू-जलस्तर दिनोंदिन घटते ही जा रहा है। बारिश से पहले वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम पर यदि ध्यान दिया जाता, तो काफी हद तक भू-जलस्तर को बढ़ाने के लिए यह एक सार्थक पहल हो सकती थी। लेकिन नगरवासी एवं विभाग के जिम्मेदार भी रूचि नहीं दिखा रहे हैं। दरअसल शहर में बढ़ती आबादी के साथ-साथ आवासीय और व्यवसायिक निर्माण तेजी से हो रहा है। इन मकानों के लिए नगरपालिका से निर्माण की अनुमति लेते समय नागरिकों ने वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने का वादा किया और धरोहर राशि भी जमा कराई, लेकिन अधिकांश लोगों ने वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाया ही नहीं। नतीजा पानी बचाने की दिशा में काम नहीं होने से जल स्तर पिछले सालों के मुकाबले लगातार गिरता जा रहा है। वहीं नगर पालिका से इसका सख्ख्ती से पालन न करवाने से लोग भी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे है। बता दे कि बारिश व घरों से निकलने वाले पानी को एकत्रित करने के लिए भवन के आसपास एक सोखता गहरा गड्ढा किया जाता है। जिसमें घरों एवं भवनों की छतों से निकलने वाला बरसात का पानी तथा घरों से निकलने वाला पानी इस गड्ढे में पाइप के माध्यम से जमीन के अंदर पहुंचते है। इससे भूजल स्तर रिचार्ज होता है। इसके लिए नगरपालिका में शुल्क जमा करना होता है। यदि भवन मालिक हार्वेस्टिंग सिस्टम नहीं बनाता है तो नपा

फाइल फोटो

बनवाकर देती है, अन्यथा भवन मालिक द्वारा हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाये जाने पर राशि वापस मिलती है। किन्तु अधिकारियों की लापरवाही और लोगों में जागरूकता का अभाव होने से हार्वेस्टिंग सिस्टम केवल फाइलों में ही सीमित रह गया है।

7 साल में 2447 आवेदन, 1135 ने बनाया सिस्टम .....

सरकार ने भवन निर्माण के साथ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाए जाने की अनिवार्यता कर रखी है। नियम है कि यदि भवन बनाने वाले ने स्वयं ही वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनवा लिया है तो उसके द्वारा जमा की गई राशि नगरपालिका वापस करेगी। लेकिन हैरत की बात यह है कि वर्ष 2018 से वर्ष 2025 तक 2447 लोग भवन निर्माण की अनुमति तो ले ली, किन्तु इनमें से अभी तक 1135 लोगों ने ही अपने आवास में रैन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाया हैं। जबकि रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाने के लिए सभी से एफडी जमा कराई गई है।

लगातार गिर रहा जिले का भूमि जलस्तर ....

शहर में ट्यूबवेल और अन्य स्त्रोतों के जरिए भूमि से दोहन किया जा रहा है, बदले में उतना पानी जमीन में नहीं पहुंच पा रहा है। इसी का परिणाम है कि जिले में भूजल स्तर लगातार गिरते जा रहा है और यदि यही हाल रहा तो आगामी समय में गंभीर पेयजल संकट की स्थिति से भी इंकार भी नहीं किया जा सकता है। अभी भी भू-जलस्तर के हालात कुछ ठीक नहीं। जिले का निरंतर जलस्तर गिरने से फरवरी-मार्च में ही कई हैंडपंप और ट्यूबवेल पानी छोड़ कर, हवा उगलने लगते है। ग्रामीण क्षेत्र की बात तो छोड़ ही दीजिए, बैतूल जिला मुख्यालय में अभी तक हार्वेस्टिंग सिस्टम को लागू करने के लिए नगरपालिका के अधिकारियों ने कोई सक्त कदम नहीं उठाए हैं।

हार्वेस्टिंग सिस्टम को लेकर खास अमल नहीं ....

साल दर साल शहर का क्षेत्रफल बढ़ रहा है। नई-नई कालोनियां और नये-नये भवनों का निर्माण हो रहा। वर्तमान में ही एक दर्जन से अधिक कालोनियों विकसित हो रही है। इन क्षेत्रों में सीमेंट सडक़े बन रही, लेकिन भूजल को बढ़ाने कोई काम नहीं हो रहा। केवल वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम पर ही अमल हो जाये तो गर्मी के दिनों में भी लोगों को पानी के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा। किन्तु हर साल की तरह इस साल भी रेन वाटर हावेस्टिंग सिस्टम को लेकर खास अमल नहीं हुआ। यदि नगरपालिका रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को लेकर जन जागरुकता के लिए काम करे तो बारिश के पानी को व्यर्थ बहने से रोका जा सकेगा।

वर्गमीटर के हिसाब से जमा होती है राशि .....

भवन निर्माता को नगरपालिका से अनुमति लेते समय हार्वेस्टिंग सिस्टम की राशि वर्गमीटर के हिसाब से जमा करनी होती है। नगरपालिका सीएमओ सतीष मटसेनिया ने बताया कि 140 वर्गमीटर में भवन निर्माण के लिए वॉटर हार्वेस्टिंग का 10 हजार रूपये जमा करना होता है। वहीं 140 से 200 वर्गमीटर पर निर्माण के लिए 12 हजार और फिर इसी तरह निर्माण का क्षेत्रफल बढऩे से अधिक जमीन पर निर्माण कराने पर राशि उसी अनुपात में जमा करना पड़ती है। यह राशि भवन निर्माता को उस वक्त वापस मिल जाती है, जब वह मकान में हार्वेस्टिंग सिस्टम बनवा लेते है। जिसके बाद नपा यह राशि रिलीज कर देती है।

इनका कहना है -

जिन भवन मालिकों ने हार्वेस्टिंग सिस्टम नहीं बनाया है, उनकी एफडी जब्त की जायेगी। इसके अलावा हमारे द्वारा जल्द ही नपा परिषद में प्रस्ताव पारित करके ऐसे मामलों में लगभग 10 हजार रूपये तक की अतिरिक्त पेनल्टी भी लगाई जायेगी। जिससे लोग वॉटर हार्वेस्टिंग के प्रति जागरूक हो। भवन निर्माण की अनुमति के साथ हार्वेस्टिंग सिस्टम को बनाना अनिवार्यता में भी शामिल किया जायेगा।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ, नपा बैतूल

चाकूबाजी कर दहशत फैलाने वाले आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। चाकूबाजी कर दहशत फैलाने वाले आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। फरियादी धनंजय पिता जगदीश यादव निवासी दुर्गा वार्ड, गंज बैतूल ने 28 जून को थाना गंज में रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि 27 जून की रात्रि लगभग 11 बजे मोहल्ले के ही दीपक, रितिक एवं एक अपचारी बालक उसके घर के बाहर आए और पत्थरबाजी व गाली-गलौच करने लगे। फरियादी की माता के बाहर आने पर सभी आरोपी मौके से भाग गए। अगले दिन सुबह लगभग 9.30 बजे जब फरियादी अपने मित्र विनायक एवं रोबिन के साथ हनुमान मंदिर दर्शन के लिए गये थे, तो वहीं पास में स्थित रोहित के मकान पर आरोपी रितिक, ददु, शाहिल एवं एक अन्य अपचारी बालक बैठे मिले। फरियादी द्वारा पत्थरबाजी की घटना को लेकर पूछताछ करने पर चारों ने फिर से गाली-गलौच शुरू कर दी और रितिक ने जेब से चाकू निकालकर फरियादी पर जानलेवा हमला कर दिया, जिससे फरियादी को सिर, पीठ, कमर एवं जांघ पर गंभीर चोटें आईं। बीच-बचाव करने आए विनायक के साथ भी ददु एवं अपचारी बालक द्वारा मारपीट की गई। रिपोर्ट पर थाना गंज में विभिन्न धारा एवं भारतीय न्याय संहिता 2023 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए रितिक पिता अजाबराव बड़बुड़े, निवासी खंजनपुर, दीपक पिता ढोकू धुर्वे, निवासी दुर्गा मंदिर के पास, खंजनपुर और एक अपचारी बालक के विरुद्ध विधिसम्मत वैधानिक कार्रवाई की गई है। प्रकरण में एक अन्य आरोपियो की गिरफ्तारी के लिए पुलिस द्वारा सतत प्रयास किए जा रहे हैं। शीघ्र ही उन्हें भी हिरासत में लिया जाएगा। इस कार्रवाही में निरीक्षक सरविंद धुर्वे, उप निरीक्षक इरफान कुरैशी, प्रआर हितुलाल, प्रआर मयूर, आरक्षक अनिरुद्ध, आरक्षक नवीन एवं आरक्षक शिवशंकर देवड़ा की त्वरित व सतर्क कार्रवाई प्रशंसनीय रही।

जिला बैतूल में जल गंगा संवर्धन अभियान का समापन कार्यक्रम आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम का किया गया सीधा प्रसारण

बैतूल। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत सोमवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय बैतूल में जिला स्तरीय समापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान खंडवा से प्रसारित राज्य स्तरीय समापन कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर, सुधाकर पवार,

कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन सहित अनेक विभागीय अधिकारी, कर्मचारी एवं आम नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में वक्ताओं ने जल संरक्षण और नदी पुनर्जीवन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालते हुए जनभागीदारी को अभियान की सफलता की कुंजी बताया। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जिले में चलाए गए जल गंगा अभियान की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए सभी सहभागी संस्थाओं और नागरिकों का आभार व्यक्त किया।

वायर चोरी के मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

2.25 लाख का माल बरामद, स्कूटी जब्त की

बैतूल। चिचोली में कंस्ट्रक्शन साइट से वायर चोरी करने वाले दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपियों से 1.35 लाख रुपए के 15 बंडल वायर और 90 हजार रुपए की काली स्कूटी बरामद की गई। कुल बरामदगी 2.25 लाख रुपये की है। फरियादी कृष्णमोहन मिश्रा ने बताया कि चिचोली में उत्कृष्ट छात्रावास का निर्माण कार्य चल रहा था। साइट पर निरीक्षण के दौरान उन्होंने देखा कि पवन विश्वकर्मा और नितिन विश्वकर्मा काली स्कूटी पर वायर के बंडल ले जा रहे थे। रोकने का प्रयास किया गया लेकिन वे भाग निकले। जांच में पता चला कि कमरे का ताला टूटा था और करीब 30 बंडल वायर चोरी हो गए थे, जिनकी कीमत 1.40 लाख रुपए थी। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से आरोपियों की पहचान की। 33 वर्षीय पवन

उर्फ प्रवीण विश्वकर्मा और 36 वर्षीय नितिन विश्वकर्मा को गिरफ्तार किया गया। दोनों ने पूछताछ में न केवल इस चोरी को स्वीकार किया, बल्कि बैतूल और आसपास के क्षेत्रों में की गई अन्य चोरियों को भी कबूला। थाना प्रभारी हरिओम पटेल के नेतृत्व में पुलिस टीम ने यह कार्रवाई की। दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया है।

आगामी दो दिन में जिले को मिलेगा लगभग 5000 मीट्रिक टन यूरिया, उर्वरकों की आपूर्ति सतत जारी

केंद्रीय मंत्री, विधायकों ने की खाद की उपलब्धता और वितरण की समीक्षा

बैतूल। केन्द्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके, विधायक हेमंत खंडेलवाल और विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने सोमवार को कलेक्ट्रेट में अधिकारियों के साथ जिले में खाद की उपलब्धता और वितरण की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में जन अभियान परिषद उपाध्यक्ष मोहन नागर, भाजपा अध्यक्ष सुधाकर पवार तथा कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, सीईओ जिला पंचायत अक्षत जैन, उप संचालक कृषि आनंद बडोनिया, उपायुक्त सहकारिता, सीईओ जिला सहकारी बैंक सहित सभी एसडीओ कृषि तथा एसीटीओ उपस्थित रहें। बैठक में उप संचालक कृषि आनंद बडोनिया ने जानकारी देते बताया कि जिले में उर्वरकों की आपूर्ति सतत जारी हैं। आगामी दो दिनों में जिले को 2640 - 2640 मीट्रिक टन की 2 रैक प्राप्त होगी, जिससे 5 हजार से अधिक उर्वरक जिले को प्राप्त होगा। मांग अनुसार जिले को उर्वरक सतत प्राप्त हो रहा है। उन्होंने बताया कि पिछले बार जहां 39 हजार 253 मीट्रिक टन का वितरण हुआ था। वहीं इस बार अभी तक 46 हजार 307 मीट्रिक टन यूरिया का वितरण किया जा चुका है। जिले में आज की स्थिति में 5 हजार 804 मीट्रिक टन यूरिया उपलब्ध है।

केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने कहा कि जिले में किसानों को खाद बीज मिलने में समस्या न जाए। निजी दुकानों द्वारा जमाखोरी न की जाए और किसानों को पूरी पारदर्शिता और सुगमता से खाद प्राप्त हो। बैठक में विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने उर्वरक वितरण को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव देते हुए कहा कि जिले की समस्त निजी विक्रेता दुकानों और समितियों पर उपलब्ध खाद की मात्रा के बोर्ड लगाए जाएं। जिसमें उर्वरक के भंडारण और उठाव की समस्त जानकारी हो, जिससे किसानों को खाद मिलने में समस्या न हो। साथ ही दुकानों में उपलब्ध उर्वरकों की मात्रा की जानकारी भी किसानों को व्हाट्सएप ग्रुप सहित अन्य माध्यमों से दी जाएं। उन्होंने कहा कि जिले को प्राप्त होने वाले उर्वरक का उन दुकानों में वितरण किया जाए जहां उर्वरक की कमी है।

विधायक श्री चंद्रशेखर देशमुख ने खाद की कमी प्रभावित ग्रामों के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि निजी दुकानों और समितियों का कृषि विभाग के अमले द्वारा सतत निरीक्षण किया जाए। जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर ने कहा कि किसानों को खरीफ फसलों और उसमें लगने वाले उर्वरक की मात्रा के संबंध में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जानकारी दी जाए। इन जानकारियों का समाचार पत्रों के माध्यम से ही प्रकाशन कराए, ताकि किसान फसलों की जरूरत के अनुसार संतुलित मात्रा में ही खाद का उपयोग करें। जिससे कृषि भूमि को भी हानि न हो।

छत पर गए किशोर की करंट लगने से मौत

बैतूल। शहर के अर्जुन नगर क्षेत्र में सोमवार सुबह 16 वर्षीय बालक की 11 केवी हाई वोल्टेज लाइन की चपेट में आने से मौत हो गई। मृतक की पहचान ओम खांडवे के रूप में हुई है, जो एक निजी स्कूल में 12वीं कक्षा का छात्र था। जानकारी के मुताबिक, ओम सुबह अपने घर की छत पर गया था। छत से करीब 5-6 फीट ऊपर से गुजर रही 11 केवी लाइन से वह संपर्क में आ गया और करंट लगने से गंभीर रूप से झुलस गया। परिजन उसे तुरंत जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद से परिजनों और मोहल्ले में गम और गुस्से का माहौल है। स्थानीय लोगों का कहना है कि बिजली विभाग ने अगर समय रहते लाइन को ऊंचाई पर शिफ्ट किया होता, तो यह हादसा नहीं होता। उनका कहना है कि छत से इतनी नजदीक से हाई वोल्टेज लाइन गुजरना पूरे मोहल्ले के लिए खतरा बना हुआ है। फिलहाल पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और शव का पोस्टमॉर्टम कर परिजनों को सौंप दिया गया है। लोगों ने बिजली विभाग की लापरवाही को लेकर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

न्यायाधीश ने ली विद्यार्थियों की क्लास

लैंगिक अपराध, साइबर फॉड और ट्रैफिक कानून की दी जानकारी

बैतूल। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बैतूल के तत्वावधान में सोमवार 30 जून को माइन्ड्स आई इंटरनेशनल स्कूल में विधिक सेवा साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। इस विशेष शिविर में बच्चों को उनके कानूनी अधिकारों, साइबर अपराध से सुरक्षा, लैंगिक उत्पीडऩ से बचाव तथा ट्रैफिक कानूनों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में जिला न्यायालय की प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश कुमारी महाजबीन खान ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए साइबर क्राइम के बदलते स्वरूप, ऑनलाइन ठगी के नए तरीकों और उससे बचने के उपायों पर विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार कानूनी सहायता सेवाएं जरूरतमंदों तक निःशुल्क पहुंचती हैं और प्रत्येक नागरिक को अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना चाहिए। शिविर में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव श्रीमती शर्मिला बिलवार ने लैंगिक उत्पीडऩ से संबंधित पॉक्सो एक्ट की जानकारी दी। उन्होंने सरल शब्दों में समझाया कि इस कानून का उद्देश्य बच्चों को यौन अपराधों से सुरक्षा देना है। साथ ही उन्होंने मोटर व्हीकल एक्ट पर भी प्रकाश डाला, जिसमें हेलमेट, ड्राइविंग लाइसेंस, ओवर स्पीडिंग जैसी बातों पर विशेष ध्यान देने की बात कही गई। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से राजेश शेषकर की उपस्थिति ने कार्यक्रम की जानकारी को और प्रामाणिकता प्रदान की। उन्होंने विद्यार्थियों को प्राधिकरण द्वारा मिलने वाली निःशुल्क विधिक सहायता सेवाओं की रूपरेखा से अवगत कराया। विद्यालय के संस्थापक एवं प्राचार्य अनिल राठौर ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि आज के समय में बच्चों को किताबों के साथ-साथ जीवनोपयोगी कानूनी जानकारी देना भी जरूरी है। उन्होंने विधिक सेवा प्राधिकरण का आभार जताते हुए भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की इच्छा जताई।कार्यक्रम के दौरान विद्यालय स्टाफ, विधिक सेवा प्राधिकरण की टीम और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। शिविर के माध्यम से बच्चों को कानून की जानकारी के साथ उनके भीतर अपने अधिकारों के प्रति सजगता और आत्मविश्वास भी जागा।

विभिन्न नागरिक संगठनों व कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक मनाया विधायक डॉ. पंडाग्रे का जन्मदिन

● नाहिया से नांदपुर तक करोड़ों की सडक़ का हुआ भूमिपूजन ● रक्तदान कर सेवाभाव के रूप में मना जन्मदिन

बैतूल। सोमवार को क्षेत्रीय विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे के जन्मदिन पर नाहिया से नांदपुर तक बनने वाली 7 किमी सडक़ का भूमिपूजन किया गया। लगभग 9 करोड़ की लागत से बनने वाली इस सडक़ से दर्जनभर गांव लाभान्वित होंगे, तो आमला-मुलताई आदि शहरों के लिए भी यह मार्ग लोगों को सुगमता और आर्थिक लाभ प्रदान करेगा। ग्राम अंधरिया में इस मार्ग के भूमिपूजन के दौरान केंद्रीय मंत्री डीडी उइके, क्षेत्रीय विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, जन अभियान परिषद उपाध्यक्ष मोहन नागर, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, भाजपा नेता प्रदीप ठाकुर, ओमप्रकाश मालवीय, गुणवंत सिंह चड्ढा, अशोक नागले, राजेश आहूजा, रामकिशोर देशमुख, राकेश शर्मा, संजय राठौर, ओमवती विश्वकर्मा, दीक्षा सूरजेकर, काशीबाई सुधीर अंबेडकर, रोमी बिलगाए, शैलू राठौर के अलावा बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता, पदाधिकारी एवम धार्मिक सामाजिक नागरिक संगठनों के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। गौरतलब है कि विधायक डॉ पंडाग्रे द्वारा बीते कुछ सालों में इलाके के लिए 35 से ज्यादा सडक़े बनवाई

है, जो इलाके के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

विधायक को कहा हैप्पी बर्थडे टू यू.....

विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे के सोमवार को जन्मदिन के अवसर पर कार्यकर्ताओं ने आमला में मुख्य कार्यक्रम के अलावा इससे पहले लगभग डेढ़ दर्जन स्थानों पर अपने चहेते विधायक का स्वागत किया, आमला के एक सार्वजनिक लॉन में आयोजित कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों ने एक साथ विधायक डॉ पंडाग्रे को हैप्पी बर्थडे कहा और उनके जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। इस दौरान सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने विधायक को एक विशाल फूलों की माला पहनाई। इस मौके पर बड़ी संख्या में महिला कार्यकर्ताएं भी उपस्थित थीं।

रक्तदान शिविर का भी आयोजन

विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे के जन्मदिन के मौके पर कार्यकर्ताओं ने रक्तदान शिविर का आयोजन कर अपने चहेते विधायक को बतौर उपहार के रूप में शिविर में बडी मात्रा में रक्तदान कर विधायक के जन्मदिन को यादगार बनाया। इस दौरान लगभग 150 यूनिट रक्त का संग्रहण किया गया। रक्तदान शिविर में

बड़ी संख्या में महिला कार्यकर्ताओं ने भी रक्तदान किया है। इससे पहले विधायक डॉ पंडाग्रे ने अपने जन्मदिन की शुरुआत एक पेड़ मां के नाम अभियान अंतर्गत ग्राम अंधरिया में वृक्षारोपण के साथ की ।

सोशल मीडिया पर दो दिन पूर्व से शुरू हुआ बधाइयों का सिलसिला

विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे के जन्मदिन पर विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बधाई व शुभकामना संदेशो का अंबार लग गया, भाजपा कार्यकर्ता एवं समर्थकों ने विधायक डॉ पंडाग्रे के जन्मदिन के दो दिन पहले से बधाई संदेश देना शुरू कर दिया था। इनमें बड़ी संख्या में कार्यकर्ता, पदाधिकारी एवं धार्मिक, सामाजिक संगठनों के गणमान्य नागरिक हे।

आप लोगों का आत्मीय स्नेह, आशीर्वाद मुझे अधिक ऊर्जा के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता : डॉ. पंडाग्रे

जन्मदिन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान विधायक डॉ. पंडाग्रे ने कहा कि आमला सारणी विधानसभा समेत पूरे जिले की मेरी देवतुल्य जनता, भाजपा के सेवाभावी समर्पित कार्यकर्ता, पदाधिकारियों एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के द्वारा मुझे दी गई शुभकामनाओ एवं बधाईयो के लिए मैं सभी का हृदय की गहराइयों के साथ आभार व्यक्त करता हूं। आप लोगों का आशीर्वाद एवं आत्मीय स्नेह मुझे पूर्ण समर्पण एं प्रतिबद्धता के साथ क्षेत्र के विकास हेतु और अधिक ऊर्जा के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है।

जिले 1530 बूथों पर सुनी गई मन की बात

बैतूल। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रतिमाह अंतिम रविवार को होने वाले मन की बात कार्यक्रम के 123 वें संस्करण के अंतर्गत जिले के 30 संगठनात्मक मंडलो के 1530 बूथो पर जिला पदाधिकारी ,जनप्रतिनिधियों व कार्यकर्ताओ ने मन की बात कार्यक्रम सूना इसी कडी में भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार एवं मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने मुलताई नगर के राजीव गांधी वार्ड के बूथ क्रमांक 122 पर मन की बात कार्यक्रम सुना । वही बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल व मध्यप्रदेश जनअभियान परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष मोहन नागर ने कोठीबाजार मंडल के बूथ क्रमांक 92 पर मून्ना सिंह रघुवंशी के निवास पर मन की बात कार्यक्रम में भाग लिया। इसी तहर आमला विधायक डा.योगेश पंडाग्रे ने चंद्रशेखर वार्ड स्थित निवास पर मन की बात कार्यक्रम सुना। भैसदेही विधायक महेन्द्रसिंह चौहान ने संजीवनी हास्पिटल में अपने ईलाज के दौरान मोबाईल पर मन की बात सूनी। घोडाडोगरी विधायक गंगा उइके ने रेडियों के माध्यम से मन की बात कार्यक्रम को सुना। कार्यक्रम के जिला प्रभारी नरेन्द्र गढेकर ने बताया कि मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम देश से संवाद की तरह है। इस कार्यक्रम में आपातकाल के साथ साथ खेल और पर्यावरण को लेकर सामुहिक सामाजिक शक्ति का आह्वान श्री मोदी जी द्वारा किया गया।

दृष्टिकोण

मुकेश नेमा

लेखक मप्र के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

बुढ़ापा नापने का पैमाना बनाया जा सकता है लट्टू

मुश्ताक़ अहमद यूसूफी अपने लाजवाब व्यंग्य उपन्यास आबे- गुम में एक जगह फ़रमाते हैं कि जब आदमी को वर्तमान से अतीत ज़्यादा खूबसूरत दिखने लगे तो समझ लेना चाहिये कि वो बूढ़ा हो चुका,और बुढ़ापे का यह जानलेवा हमला किसी भी उम्र में, भरी जवानी में भी हो ये सकता है,ऐसे में आज फ़ेसबुक पर अचानक दिख पड़े इस लट्टू को देखकर अपने खुश होने को लेकर पहले पहल मैं खुद असमंजस में पड़ा कि मुझे अपने आप को बूढ़ा मान लेना चाहिये या नहीं।

ख़ैर मेरे बचपन मे खूब घूमते रहे लट्टू की बात करते है आज। किसी पर लट्टू हो जाने वाली कहावत सुनी होगी आपने ,यह वही बेमतलब में चारो तरफ़ फिरने वाला वाला लट्टू है।चूँकि ये बगियन वाले बेईमान भौंरें की तरह भनभन करता घूमता था,इसलिये बहुत सारे लोग तब इसे भौंरा कह कर भी बुलाते थे।आजकल के बच्चों को नसीब नहीं हुआ ये सस्ता,सुंदर, टिकाऊ लट्टू हमारे वक्त के बच्चो के पसंदीदा खेलों में शामिल था,इनडोर आउटडोर की कोई बंदिश था नहीं इसे खेलने में। बस एक लट्टू और उसकी पतली सी डोर। और खेलना भी कितना आसान था इसे ! बस इसकी कमर और खूब मोटे पेट पर एक पतली सी रस्सी नुमा डोर कस कर लपेटना होती थी और एक झटके से इसे सड़क पर,फ़र्श पर नाचने के लिये छोड़ देना होता था,फिर अपने पिछवाड़े ठुकी कील पर तेज़ी से नाचता था यह।इसके चमकीले रंग,इसका तेज़ी से घूमना,ठुमकना, फिर ठिठक कर लुढ़क पड़ना,हम बच्चों को घंटो मसरूफ रखता था।इसे हथेली पर नाचने से भी परहेज़ नहीं था,और फिर कितने पक्के, दिलफरेब रंग चढ़ाये जाते थे इस पर।मेरे बचपन के खंडवा

में घर के नज़दीक ही एक बढ़ई हुआ करता था ,हम बच्चों की फ़रमाइश पर,हाथो हाथ लट्टू बना कर देता था वो।उसे छोटी सी,तेज़ी से घूमती मशीन पर इसे बनाते हुए,इन पर गुलाबी लाल,पीले,नीले,हरे रंग चढ़ाते हुए देखना बेहद सम्मोहक था।

बचपन मे जिस लट्टू पर लट्टू थे हम वो तक़रीबन ईसा से दो हजार साल पहले मिस्र में पैदा हुआ। पूरी दुनिया इसके साथ नाची फिर। चीन जापान भारत। सभी ने अलग अलग नाम से पुकारा इसे। सैंकड़ों हज़ारों पीढ़ियाँ इसके साथ खेलती बड़ी हुई। सो इसे बच्चा मत समझिए ये आपके दादा परदादा से भी ज्यादा बूढ़ा है और आपसे ज्यादा जवान है।

हमारे छुटपन के दिनो में लट्टू कलेक्शन किये जाने की चीज थे।बच्चों मे होड होती थी कि किसके पास कितने और कितने बेहतरीन रंगो से सजे धजे लट्टू हैं और किसका लट्टू ज़्यादा देर तक डांस फ़्लोर पर थिरकता रह सकता है।और यह भी कि किसका लट्टू ज़्यादा रंगदार है और कितने दूसरे लट्टुओं को टक्कर मार कर गिरा सकता है। ख़ैर, ये कभी हमारे आसपास थे। अब नहीं है,और उनके ना होने का रंज हो मुझे,ऐसा भी हरगिज़ नहीं। ऐसे मे मैं खुद के बूढ़े होने से इनकार करता हूँ। तन के बजाय मन से बूढ़ा होना ज़्यादा ख़तरनाक होता है, अब मन के बुढ़ापे का कैसे पता करें ?

मेरे ख्याल से लट्टू को बुढ़ापा नापने का पैमाना बनाया जा सकता है! जो तरीक़ा सूझा है मुझे वो यह कि जो भी बालक मेरे साथ ताज़ा ताज़ा जवान हुए थे ,होने की फ़िराक़ मे थे, दिमाग़ पर ज़ोर डाल कर देख लें एक बार, यदि वो इक दूजे की रति अग्निहोत्री के पेट पर नाचते भौंरें को याद नहीं कर पा रहे हों तो उन्हें बेझिझक बुढ़ापा क़बूल कर लेना चाहिए।

यदि उसी दौर की पैदाइश हैं आप तो आज़माइयेगा बुढ़ापा नापने के इस तरीक़े को।आप रज़ामंद होंगे मुझसे।

जीएसटी इनपुट फर्जीवाड़ा केस में बड़ा खुलासा

130 करोड़ की टैक्स चोरी सामने आई,150 फर्जी बैंक अकाउंट्स इस्तेमाल किए, 23 फर्जी फर्म मिलीं, 512 करोड़ के फर्जी बिलों का खुलासा

भोपाल (नप्र)। जीएसटी में इनपुट टैक्स क्रेडिट के नाम पर करोड़ों का फर्जीवाड़ा करने वाले विनोद कुमार सहाय उर्फ एनके खरे को ईओडब्ल्यू ने रांची झारखंड से गिरफ्तार किया है। वह फर्जी दस्तावेजों से बोगस फर्म बनाकर फर्जीवाड़ा करता था। इसके बाद कागजों में खरीदी-बिक्री दिखाकर इनपुट टैक्स क्रेडिट लेता था।

इस तरह आरोपी अब तक करीब 130 करोड़ रुपए की टैक्स चोरी में शामिल रहा है। इसके लिए उसने 23 अलग-अलग नाम से फर्जी फर्म बना रखी थीं। पूरे फर्जीवाड़े में इस्तेमाल करीब 150 बैंक अकाउंट को चिह्नित कर सीज कराया गया है।आरोपी के गिरोह ने सरकार को 34 करोड़ रुपए की राजस्व क्षति पहुंचाई थी। जिसके बाद गिरोह नजर में आया था। ईओडब्ल्यू ने शुक्रवार को आरोपी को जबलपुर जिला अदालत में पेश किया है। जहां से उसे 2 जुलाई तक की रिमांड पर सौंप दिया था। आरोपी पूछताछ में लगातार चौंकाने वाले खुलासे कर रहा है।

3 जिले में बड़े पैमाने पर किया फर्जीवाड़ा

आरोपी ने पूछताछ में स्वीकार किया कि उसने जबलपुर, भोपाल और इंदौर में एक सुनियोजित और बड़े पैमाने पर जीएसटी धोखाधड़ी की है। उसके गिरोह ने भोले-भाले लोगों को झांसा देकर दस्तावेजों का दुरुपयोग किया और फर्जी फर्म बनाकर करोड़ों रुपए के इनपुट टैक्स क्रेडिट का अवैध हस्तांतरण कर सरकारी राजस्व को भारी नुकसान पहुंचाया है।पूरे फर्जीवाड़े में इस्तेमाल करीब 150 बैंक अकाउंट को चिह्नित कर सीज कराया गया है।

आरोपी विनोद सहाय के कब्जे से कई एटीएम, बैंक अकाउंट, मोबाइल जब्त

ऐसे हुआ था मामले का खुलासा

मामले का खुलासा प्रताप सिंह लोधी की शिकायत और वाणिज्य कर विभाग, जबलपुर की सहायक आयुक्त वैष्णवी पटेल और ज्योत्सना ठाकुर की भेजी गई रिपोर्टों से हुआ है। इन रिपोर्टों में धोखाधड़ी, विश्वासघात और आपराधिक साजिश के माध्यम से जीएसटी चोरी का संकेत दिया गया था।

लोन का झांसा देकर लेते थे दस्तावेज

मुख्य आरोपी विनोद कुमार सहाय उर्फ एनके खरे ने वर्ष 2019-2020 के दौरान जबलपुर में प्रताप सिंह लोधी, दीनदयाल लोधी, रविकांत सिंह और नीलेश कुमार पटेल जैसे व्यक्तियों से संपर्क किया। उसने इन लोगों को यह कहकर झांसा दिया कि ऋण प्राप्त करने के लिए जीएसटी पंजीकरण आवश्यक है। इस बहाने से, उसने उनसे उनके आधार कार्ड, पैन कार्ड, फोटो, बैंक खाता स्टेटमेंट, कृषि भूमि से संबंधित दस्तावेज (जैसे खसरा, किस्तबंदी खतौनी, ऋण पुस्तिका) और बिजली बिल जैसे दस्तावेज हासिल कर लिए। इन दस्तावेजों का उपयोग कर विनोद सहाय ने फर्जीवाड़ा किया है।

एम्स भोपाल की टीम ने सांची में लगाया स्वास्थ्य शिविर

भोपाल। नवाचार, जनसेवा एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा के संकल्प के साथ एम्स भोपाल निरंतर अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी का निर्वहन कर रहा है। इसी क्रम में, संस्थान के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के सक्षम मार्गदर्शन में आज सांची सिविल

अस्पताल (जिला विदिशा) में एक दिवसीय आउटरीच मेडिकल कैंप का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस स्वास्थ्य शिविर में 30 से अधिक मरीजों की जाँच एवं उपचार किया गया। शिविर में प्रमुख रूप से एएनसी (गर्भवती महिलाओं की जांच), सिरदर्द, कमर दर्द ,ऑस्टियोआर्थराइटिस,बुखार, तीव्र श्वसन संक्रमण ,जैसी बीमारियों की पहचान की गई, और मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श एवं दवाइयाँ उपलब्ध कराई गईं। गंभीर रोगियों को आवश्यकतानुसार एम्स भोपाल में आगे के इलाज हेतु रेफर किया गया। एम्स भोपाल की चिकित्सकीय टीम में डॉ. आशीष कुमार दीक्षित (होम्योपैथी, आयुष), डॉ. अदिति (सीएफएम), डॉ. सौम्या (सर्जरी), डॉ. अविनाश (सीएफएम) एवं डॉ. स्वेतांशु (इंटर्न) शामिल रहे। सभी चिकित्सकों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाते हुए मरीजों की सेवा में योगदान दिया। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, एम्स भोपाल की यह पहल न केवल स्वास्थ्य सेवाओं को आमजन तक पहुँचाने का माध्यम है, बल्कि यह संस्थान की उस सामाजिक प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है, जिसके तहत हम ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक गुणवत्ता पूर्ण चिकित्सा सुविधा पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। भविष्य में भी ऐसे और अधिक शिविरों के आयोजन के लिए एम्स भोपाल सदैव तत्पर रहेगा। स्थानीय नागरिकों और अस्पताल प्रशासन ने इस प्रयास की सराहना करते हुए भविष्य में भी ऐसे शिविरों की निरंतर आवश्यकता पर बल दिया।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025

केंद्रीय मंत्री शाह की अध्यक्षता में हुई सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के सहकारिता मंत्रियों की 'मंथन बैठक'

मंत्री सारंग ने साझा किए प्रदेश के नवाचार और दिये सुझाव

भोपाल। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के उपलक्ष्य में देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के सहकारिता मंत्रियों की 'मंथन बैठक' हुई। बैठक में सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने मध्यप्रदेश की सहकारिता से जुड़ी उपलब्धियों, नवाचारों और सहकारिता के क्षेत्र में भविष्य की दिशा पर केंद्र सरकार को सुझाव दिये। इस अवसर पर केंद्रीय सहकारिता राज्यमंत्री श्री कृष्णपाल गुर्जर एवं श्री मुरलीधर मोहोल, सहकारिता मंत्रालय के सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

मध्यप्रदेश में बहुद्देशीय पैक्स के सफल क्रियान्वयन की जानकारी – मंत्री श्री सारंग ने बताया कि मध्यप्रदेश में प्राथमिक कृषि साख समितियों (पैक्स) को बहुद्देशीय इकाइयों के रूप में विकसित करने की दिशा में राज्य सरकार को उल्लेखनीय सफलता मिली है। इस पहल के अंतर्गत प्रदेश में प्रत्येक पैक्स को उनके संचालन के लिये वार्षिक 3 लाख 24 हजार रुपये की वित्तीय सहायता तथा जनजातीय क्षेत्रों में 3 लाख 48 हजार रुपये की सहायता प्रदान की जा रही है। उन्होंने सुझाव दिया कि नई पैक्स की स्थापना और उनके आधारभूत ढांचे को मजबूत करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा अनुदान प्रदान किया जाए, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारिता आधारित सेवाओं का विस्तार और सशक्तीकरण संभव हो सके।

भर्ती प्रक्रियाओं में सुधार के लिये केंद्रीय एजेंसी का गठन आवश्यक – मंत्री श्री सारंग ने सहकारिता संस्थाओं में पदों की भर्ती प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और एकरूप बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि जिस प्रकार बैंकिंग क्षेत्र में आईबीपीएस जैसी संस्था के माध्यम से भर्ती होती है, उसी प्रकार पंचायत एवं ग्रामीण स्तर की सहकारी संस्थाओं के लिए एक केंद्रीयकृत भर्ती बोर्ड/एजेंसी का गठन किया जाए, जिससे सहकारी आंदोलन को दक्ष मानव संसाधन मिल सके।

सहकारी बैंकों के माध्यम से फंड डिपॉजिट का दिया सुझाव – मंत्री श्री सारंग ने सुझाव दिया कि केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों को सहकारिता संबंधी योजनाओं के लिए उपलब्ध कराई जाने वाली निधि को जिला सहकारी बैंकों के माध्यम से डिपॉजिट किया जाए, जिससे इन बैंकों की क्रेडिट क्षमता और बिजनेस वॉल्यूम बढ़ सके, इससे सहकारी बैंकिंग तंत्र और अधिक मजबूत होगा।

बीज क्षेत्र में नवाचार : 'चीता ब्रांड' – मध्यप्रदेश में बीज संघ को सशक्त करने के लिए किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए मंत्री श्री सारंग ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा 'चीता ब्रांड' बीजों की शुरुआत की गई है, जिनमें उच्च गुणवत्ता वाले हाइब्रिड बीज लगभग आधी कीमत पर किसानों को उपलब्ध कराए जा रहे हैं। यह पहल कृषि उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आय में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है।

कमजोर सहकारी बैंकों के लिए तकनीकी सहयोग की आवश्यकता – मंत्री श्री सारंग ने कहा कि ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को ध्यान में रखते हुए सहकारी संस्थाओं की पंजीयन से लेकर परिसमापन तक की प्रक्रिया को सरल और डिजिटल बनाया गया है, जिससे संस्थाओं की कार्य-क्षमता में सुधार आया है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि वित्तीय रूप से कमजोर सहकारी बैंकों को सशक्त करने के लिए केंद्र सरकार की ओर से तकनीकी और विशेषज्ञ सहयोग दिया जाए, ताकि वे भी मुख्यधारा से जुड़ सकें और ग्रामीण वित्तीय ढांचे को मजबूती दे सकें।

पीएम-अभीम, 15वें वित्त आयोग के कार्यों को समय सीमा में करें पूर्ण: उप मुख्यमंत्री शुक्ल

मेडिकल कॉलेजों, जिला चिकित्सालयों और टीबी मुक्त भारत अभियान की प्रगति की वृहद समीक्षा की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने निर्देश दिए हैं कि विकास कार्यों की नियमित और समयबद्ध मॉनिटरिंग की जाये और उपलब्ध बजट का पूर्णतः पारदर्शी एवं गुणवत्तापूर्ण उपयोग सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि सरकार विकास कार्यों के लिए बजट की कमी नहीं होने दे रही है, आवश्यकता इस बात की है कि मूलभूत स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार समयसीमा में हो। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में विभागीय अधोसंरचना विकास कार्यों की वृहद समीक्षा की। उन्होंने प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-अभीम) एवं 15वें वित्त आयोग अंतर्गत स्वीकृत निर्माण कार्यों की एजेंसीवार गहन समीक्षा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सिंगरौली एवं बुधनी मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल के निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्माण में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यदि किसी भी कार्य में प्रशासनिक अथवा तकनीकी अड़चनें हैं, तो उन्हें शीघ्र निराकृत किया जाए। उन्होंने मैहर एवं मऊगंज जिला चिकित्सालयों की विस्तार योजनाओं की प्रगति की भी जानकारी ली और कहा कि जनहित की इन योजनाओं में समय पर गुणवत्ता के साथ निर्माण कार्य पूर्ण हो।

टीबी मुक्त भारत अभियान में भागीदारी का किया आह्वान – उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने टीबी मुक्त भारत अभियान की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश को टीबी मुक्त बनाने के लिए समाज के सभी वर्गों की सहभागिता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने विधायकों, सांसदों, जनप्रतिनिधियों, विभागीय अधिकारियों, औद्योगिक समूहों, स्वयंसेवी संगठनों एवं समाजसेवियों से निक्षय मित्र के रूप में जुड़ने की अपील की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि टीबी से ग्रसित मरीजों के उपचार एवं पोषण में सहयोग देने के लिए 'निक्षय मित्र' बनकर समाज का हर व्यक्ति समाज के प्रति संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का निर्वहन कर सकता है। यह केवल एक योजना नहीं, बल्कि पीड़ित मानवता की सेवा का माध्यम है।

हर माह की 9 और 25 तारीख को चिन्हित महिलाओं की जांच की विशेष व्यवस्था की जाए – उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने हाई रिस्क प्रेग्नेंसी महिलाओं की देखभाल पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हर माह की 9 और 25 तारीख को चिन्हित महिलाओं की जांच की विशेष व्यवस्था की जाए ताकि कोई भी गर्भवती महिला उचित सुविधा से वंचित न रहे। उन्होंने जिला एवं ब्लॉक स्तर पर सघन निगरानी व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए और कहा कि जिला कलेक्टरों एवं सीएमएचओ को भी इसमें प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी करनी चाहिए।

आशा सुपरवाइजर को प्रोत्साहन शीघ्र करायें उपलब्ध – उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने बैठक में यह भी स्पष्ट किया कि मंत्रिपरिषद के निर्णयानुसार आशा सुपरवाइजरों को शीघ्र प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाए। उन्होंने कहा कि मूलभूत स्वास्थ्य सेवाओं के अंतिम छोर तक पहुंच में आशा कार्यकर्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, ऐसे में उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन अनिवार्य है। संचालक प्रोजेक्ट श्री नीरज सिंह, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की प्रबंध संचालक डॉ. सलोनी सिडाना उपस्थित थे।

एम्स भोपाल में करुणामय चिकित्सकीय संवाद पर विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन: शब्दों की उपचारात्मक शक्ति

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, फिजियोलॉजी विभाग द्वारा 30 जून 2025 को वर्ड्स दैट हील- मास्टरिंग कम्युनिकेशन इन मेडिकल प्रैक्टिस विषय पर एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश आकाशवाणी के प्रमुख एवं समन्वयक श्री राजेश भट्ट ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया। श्री भट्ट ने रोगी देखभाल में करुणामय संवाद की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा, हर वह शब्द जो आप एक रोगी से बोलते हैं, उसमें आपकी आत्मा की सच्ची तरंग होनी चाहिए, जो उपचार की भावना और करुणा की ऊर्जा से पूर्ण हो। उनके विचारों ने उपस्थित जनसमूह–जिसमें फैकल्टी सदस्य, एमबीबीएस एवं नर्सिंग छात्र और एम्स भोपाल के कर्मचारी शामिल थे–को गहराई से प्रभावित किया। आज के समय में जब स्वास्थ्यकर्मियों के प्रति हिंसा की घटनाएं बढ़ रही हैं, ऐसे में रोगियों एवं उनके परिजनों के साथ सहानुभूतिपूर्ण और संतुलित संवाद स्थापित करना पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। इस व्याख्यान में उपस्थित जनों को क्लीनिकल और शैक्षणिक परिदृश्य के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। वक्ता ने सक्रिय श्रवण की महत्ता पर बल दिया–जिसमें रोगियों की

बातों को पूरी संवेदनशीलता और एकाग्रता से सुनना शामिल है। उन्होंने गैर-मौखिक संवाद की प्रभावशीलता को भी रेखांकित किया जैसे सकारात्मक शारीरिक भाषा तथा एक वृद्ध रोगी के कंधे पर चिकित्सक का सहानुभूतिपूर्ण स्पर्श जो मरीज़ के प्रति चिकित्सक की संवेदना एवं लगाव को दर्शाता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने व्याख्यान के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, प्रभावी संवाद एक सहानुभूतिपूर्ण और दक्ष चिकित्सकीय अभ्यास की आधारशिला है।

विश्व हिंदू परिषद बजरंगदल का जिला अभ्यास वर्ग हुआ संपन्न

संगठन के विस्तार को लेकर लिया संकल्प

भोपाल। विश्वहिंदू परिषद बजरंगदल के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का दो दिन का अभ्यास वर्ग महावीर पैलेस

व्हाइट हाउस बैरसिया में संपन्न हुआ।विश्वहिंदू परिषद के जिलाध्यक्ष झनक सिंह राजपूत ने बताया कि विश्वहिंदू परिषद बजरंगदल से जुड़े पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को संगठन की रीति नीति एवं संगठन कार्य की जानकारी देने के लिए अभ्यास वर्ग में प्रांत संगठन मंत्री सुरेन्द्र सिंह चौहान ने कहा कि कार्यकर्ताओं को राष्ट्र रक्षा धर्म रक्षा गौ रक्षा हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए।प्रांत सह सेवा प्रमुख राजेश साहू ने सभी कार्यकर्ताओं को संगठन के संबंध में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि संगठन का विस्तार जिले के प्रत्येक गांवों तक होना चाहिए।सत्संग के माध्यम से सामाजिक लोग संगठन में आए लेड जिहाद लव जिहाद धर्मांतरण जैसी घटनाओं पर अंकुश लगे।

इस अवसर पर प्रांत संगठन मंत्री सुरेन्द्र सिंह चौहान प्रांत सह सेवा प्रमुख राजेश साहू बजरंगदल प्रांत सह संयोजक लोकेन्द्र मालवीय विभाग मंत्री जीवन शर्मा बजरंगदल विभाग संयोजक दिनेश यादव विश्वहिंदू परिषद जिलाध्यक्ष झनक सिंह राजपूत उपाध्यक्ष उदय सिंह दागी जिला मंत्री जितेन्द्र सिंह मीणा कोषाध्यक्ष राजेन्द्र भार्गव गौ रक्षा बजरंगदल संयोजक पर्वत सिंह राजपूत रामगोपाल कुशवाह प्रदीप शर्मा मांगीलाल गौर अशोक दागी अर्जुन गुर्जर अमृत लाल सेन कन्हैया लाल साहू कमल सिंह चौहान जितेन्द्र राजपूत योगेश नागर गब्बर सिंह राजपूत सहित जिला एवं प्रखंड के दायित्ववान कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मौजूद थे।

मध्यप्रदेश में तेज बारिश का दौर जारी

भिंड की निचली बस्तियों में जलभराव ; प्रदेश में 24 घंटे में गिर सकता है 4.5 इंच पानी

भोपाल (नप्र)। मानसून के एक्टिव होने के बाद से ही मध्यप्रदेश में तेज बारिश का दौर जारी है। बुंदेलखंड का केदारनाथ कहे जाने वाले जटाशंकर धाम में बारिश के बाद झरना बहने लगा है। बारिश का पानी पहाड़ों से होकर भोलेनाथ की प्रतिमा के पास से निकलता है। ये नजारा बेहद आनंदित करता है।

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर-उज्जैन समेत 25 से ज्यादा जिलों में बारिश का दौर चल रहा है। ऐसा ही मौसम सोमवार को भी था। मौसम विभाग ने 20 जिलों में हैवी रेन यानी भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, जिन जिलों में सोमवार को भारी बारिश होने की चेतावनी दी गई है, उनमें ग्वालियर, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, सागर, रायसेन, राजगढ़, शाजापुर, आगर-मालवा, मंदसौर, नीमच, दमोह, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, मंडला और बालाघाट शामिल हैं। यहां 24 घंटे में साढ़े 4 इंच तक पानी गिर सकता है। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर समेत बाकी के जिलों में बारिश का यलो अलर्ट है।

भोपाल में दोपहर में तेज बारिश हुई ,बच्चा तालाब में डूबा– भोपाल के बैरसिया के ललरिया में एक 13 साल के बालक की तालाब में डूबने से मौत हो गई। तौहीद रविवार को डूबा था। उसका शव करीब 18 घंटे बाद सोमवार को मिला। एसडीईआरएफ की टीम ने रेस्क्यू कर शव निकाला। एसडीएम आशुतोष शर्मा समेत कई अधिकारी रेस्क्यू के दौरान मौके पर मौजूद रहे। मौसम विभाग के अनुसार, भोपाल, विदिशा, नर्मदापुरम, रायसेन, नरसिंहपुर, दतिया, सागर, दमोह, छतरपुर और मऊगंज में मध्यम बारिश जारी रहने की संभावना है। वहीं, सीहोर, राजगढ़, हरदा, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, टीकमगढ़, पन्ना, भिंड, शिवपुरी में हल्की बारिश होगी।

दोपहर के समय मुरैना, अशोकनगर, ग्वालियर, रीवा, सतना, मैहर, सीधी, सिंगरौली, सिवनी, मंडला, बालाघाट, डिंडौरी, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया और कटनी जिलों में बारिश का दौर रहेगा।

राइट क्लिक

नई उलझन : तो फिर परनाना का संविधान सही अथवा दादी का?

अजय बोकिल

● लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने इमर्जेंसी के पचास साल पूरे होने के संदर्भ में आयोजित एक कार्यक्रम में भारतीय संविधान प्रस्तावना से 'समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष' शब्दों को शामिल करने पर पुनर्विचार का आह्वान कर पुराने मुद्दे में नया सियासी तड़का लगा दिया है। होसबाले का कहना है कि संविधान में ये दो शब्द डॉ.बाबा साहब अंबेडकर द्वारा निर्मित मूल संविधान का हिस्सा नहीं थे। इन्हें बाद में देश में लागू आपातकाल और नागरिकों के न्यायिक और मौलिक अधिकारों के निलंबन के चलते तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने जबरन जुड़वाया। चूंकि इनका समावेश लोकतांत्रिक और संविधान की मूल भावना के विपरीत किया गया था, अतः अब इन्हें प्रस्तावना से हटाने पर गंभीरता से विचार किया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि संविधान की प्रस्तावना शाश्वत है, लेकिन 'समाजवादी' जैसा राजनीतिक-आर्थिक विचार अस्थायी है। यही नहीं, उन्होने इस 'अपराध' के लिए कांग्रेस से माफी मांगने की मांग भी की। होसबाले ने राहुल गांधी पर कटाक्ष किया कि जो लोग इस में शामिल थे, वो आज संविधान की प्रति हाथ में लेकर घूम रहे हैं। चूंकि यह विचार संघ की तरफ से आया था, इसलिए भाजपा नेताओं ने भी तत्काल उसका समर्थन कर दिया। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि ये दो शब्द सनातन का अपमान हैं। उधर विपक्ष जो अन्य मुद्दों पर मोदी सरकार को घेरने में लगा था, उससे हटकर संघ और भाजपा पर हमले में जुट गया। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि संविधान की प्रस्तावना से 'समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष (पंथ निरपेक्ष)' शब्दों को हटाने की मांग से संघ का असली चेहरा सामने आ गया है। संविधान इन्हें चुभता है, क्योंकि वो समानता, धर्मनिरपेक्षता और न्याय की बात करता है। वो संविधान को ही खत्मकर देश में मनुस्मृति का राज कायम करना चाहते हैं। हम आरएसएस को कभी सफल नहीं होने देंगे। आशय यह कि संघ और भाजपा भारत को हिंदू या सनातन राष्ट्र बनाना चाहते हैं, जिसमे धर्मनिरपेक्षता के लिए कोई जगह नहीं है। राजद सुप्रीमो लालू यादव ने सोशल मीडिया पर आरएसएस को देश का सबसे बड़ा जातिवादी और घृणा फैलाने वाले संगठन बताते हुए कहा कि उसीने संविधान को बदलने की मांग की है।'

होसबाले ने जो कहा, उसके पीछे असल मकसद क्या है? क्या सचमुच संघ और उसकी राजनतिक शाखा संविधान की प्रस्तावना में बदलाव करने जा रहे हैं? क्या वो देश को हिंदू या सनातन राष्ट्र घोषित करने जा रहे हैं? ऐसा करना ही था तो बीते 11 साल में ऐसा क्यों नहीं किया? जहां तक भाजपा की बात है तो उसे इस बदलाव करने के पहले खुद अपनी पार्टी के संविधान में परिवर्तन करना होगा। भाजपा पार्टी संविधान (अंग्रेजी वर्जन 2012) के article II objective में साफ लिखा है " the party shall bear true faith and allegiance to the constitution of india as by law established and to the principles of socialism, secularism and democracy, unity and integrity of india." संघ नेता के बयान के भरपूर समर्थन के बाद भी तत्काल ऐसा होना संभव नहीं दिखता। दरअसल देश में इमर्जेंसी हटने के बाद भी संविधान को उसके मूल स्वरूप में लौटाने की कोशिशें हुई। जनता पार्टी के शासन में तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने ये दो शब्द हटवाने के काफी प्रयास किए, लेकिन नाकाम रहे। क्योंकि इस पर सर्वानुमति नहीं बन पाई। मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा। कोर्ट ने स्पष्ट कह दिया कि ये 'दो शब्द अब संविधान की प्रस्तावना का अभिन्न हिस्सा' हैं और संविधान के मूल ढांचे में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। पूर्व सीजेआई के.जी.बालकृष्णन ने तो यह भी कहा कि संविधान में 'समाजवादी' शब्द से तात्पर्य साम्यवादी विचार भर न होकर कल्याणकारी राज्य से है, जोकि लोकतंत्र में अपेक्षित है। लेकिन यह भी सही है कि बाबासाहब अंबेडकर के मूल संविधान और जिसे लागू करने वाले पहले पहले प्रधानमंत्री और व्यक्ति राहुल गांधी के परनाना पं. जवाहरलाल नेहरू थे, की प्रस्तावना में ये शब्द नहीं थे। इसके पूर्व संविधान सभा में भी इस पर बहस हुई थी। बिहार का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रो. के.टी.शाह ने नवम्बर 1948 में संविधान सभा में पुरजोर तरीके से यह संशोधन रखा कि '"India shall be a Secular, Federal, Socialist Union of States." (भारत एक धर्म निरपेक्ष, संघीय, समाजवादी राज्यों का संघ होगा)। लेकिन संविधान सभा की ड्राफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष डॉ. भीमराव बाबा साहेब अंबेडकर ने इसे यह कहकर खारिज कर दिया कि 'सेक्युलरिज्म' संविधान की संरचना में अंतर्निहित है। इसलिए संविधान की प्रस्तावना में इसका अलग से उल्लेख करना 'अतिरेक और गैरजरूरी' है। उनका आशय था कि जब संविधान में सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, अभिव्यक्ति और उपासना की स्वतंत्रता, अवसरों की समानता और राष्ट्र की सार्वभौमता को सुनिश्चित करने वाले बंधुता की गारंटी है तो 'समाजवाद' और 'सेक्युलरिज्म' का भाव इसमें स्वतः निहित है।

यह सच है कि संविधान की प्रस्तावना में यह बदलाव 1976 में तब किया गया, जब देश में आपात काल लागू था। मौलिक और न्यायिक अधिकार निलंबित थे। संविधान संशोधन के लिए दोनो सदनों में दो तिहाई बहुमत और कम से कम देश के आधे राज्यों की विधानसभाओं का अनुमोदन जरूरी होता है। संसद में संविधान में नए शब्द जोड़े जाने का 42 वां संशोधन बिल तत्कालीन कानून मंत्री एच. आर. गोखले ने प्रस्तुत किया। उस समय लोकसभा में कांग्रेस के 352 सांसद थे और लगभग पूरा विपक्ष जेल में था। लोकसभा में यह बिल दो तिहाई बहुमत से पास हो गया। केवल पांच सांसदों ने इसका विरोध किया था। इसी तरह राज्यसभा में भी यह पारित हो गया। इस संशोधन के तहत संविधान की प्रस्तावना में 'सार्वभौम लोकतांत्रिक गणराज्य' (सोवरिन, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक) के स्थान पर 'सार्वभौम समाजवादी धर्मनिरपेक्ष (पंथनिरपेक्ष) लोकतांत्रिक गणराज्य' (सोवरिन सोशलिस्ट सेक्युलर रिपब्लिक) कर दिया गया। साथ ही देश की 'एकता' (यूनिटी ऑफ द नेशन) के स्थान पर देश की 'एकता और अखंडता' (यूनिटी एंड इंटीग्रिटी ऑफ द नेशन) कर दिया गया। इसमें तीसरे बदलाव पर किसी को कोई आपत्ति नहीं थी।

अब सवाल यह है कि आपातकाल में ऐसी कौन सी आफत आन पड़ी थी कि इन दो शब्दों को शामिल कराना अनिवार्य हो गया था? क्या श्रीमती गांधी की सत्ता के खिलाफ जनांदोलन को 'अराजकता' का खतरा मान लिया गया था या सत्ता को बचाने के इन दो शब्दों को ढाल बनाया गया? साम्यवादियों की नजर में शोषण मुक्त दुनिया की स्थापना के लक्ष्य की पूर्ति के लिए इन मूल्यों (शब्दों) को शामिल करना जरूरी था। अगर इसे उस वक्त राष्ट्रवादी और हिंदुत्ववादी संघ और भाजपा जैसे संगठनों का खतरे का परिणाम मानें तो तब तत्कालीन जनसंघ (अब भाजपा) की लोकसभा में मात्र 22 सीटें थीं और वोट प्रतिशत महज 7.35 फीसदी था। विपक्ष में मुख्य बोलबाला उन्हीं दलों का था, जो साम्यवादी और समाजवादी विचारधारा में यकीन रखते थे और सांविधान में 'समाजवादी' और 'सेक्युलर' शब्द के उल्लेख के बगैर भी अपनी राजनीतिक जमीन बचाए हुए थे (यह बात अलग है कि इस संशोधन के बाद उनकी सियासी जमीन खिसकती चली गई और कथित प्रतिगामी भाजपा जैसे दल मजबूत होते गए)। तो फिर इन दो शब्दों को जोडने के पीछे क्या विवशता अथवा प्रतिबद्धता रही होगी कि जो भावना संविधान में पहले ही स्पष्ट थी, उसे और सुस्पष्ट करना अपरिहार्य हो गया? प्रश्न यह भी है कि जब तक इन शब्दों का संविधान में जिक्र नहीं था, तब क्या देश 'समाजवादी' (नेहरू की सभी नीतियां समाजवादी ही थीं और श्रीमती गांधी भी उसी राह चल रही थीं) और 'सेक्युलर' नहीं था? और क्या इन शब्दों को हटाने से देश सेक्युलर नहीं रह जाएगा? क्या भारत में राज्य और धर्म को पश्चिमी और साम्यवादी देशों की तर्ज पर दूध से पानी की तरह अलग किया जा सकता है? क्या ये शब्द शोषण मुक्त दुनिया की ओर अग्रसर होने की नीयत और वामपंथियों के दबाव में जोड़े गए या फिर यह केवल राजनीतिक मांग भराई थी कि बगैर मांग भरे दुल्हन सुहागन नहीं मानी जाती?

कांग्रेस, संघ और भाजपा पर संविधान से छेड़छाड़ करने का आरोप लगाती रही है। लेकिन अगर सेंविधान के मूल ढांचे में कुछ 'जोड़ना' या 'बदलना' छेड़छाड़ नहीं है तो उसे हटाना छेड़छाड़ कैसे है? कहा यह भी जा रहा है कि इन दो शब्दों को हटाने से दलितों शोषितों को न्याय का रास्ता बंद हो जाएगा, जबकि प्रस्तावना में सभी को सामाजिक, राजनीतिक न्याय और अवसरों की समानता के बारे में बहुत स्पष्ट कहा गया है और ये अपरिवर्तनीय है।

होसबाले ने जो कहा उसकी राजनीतिक गूंज दूर तक जाने वाली है। ऐसे में भाजपा और संघ संविधान की प्रस्तावना बदलें या न बदलें, लेकिन सबसे ज्यादा मुश्किल उस कांग्रेस की ही होने वाली है, जिसने लोकसभा में संविधान को बदलने का मुद्दा सफलता के साथ कैश किया था। बात और बढ़ी तो राहुल गांधी के सामने मुश्किल यह होगी कि वो वह बाबा साहब के मूल संयविधान को सही माने या संशोधित प्रस्तावना वाले बाद के संविधान को वाजिब ठहराए या यूं कहें कि राहुल गांधी अपने परनाना के संविधान को सही मानें या फिर दादी वाले संविधान को?

यह भी सही है कि संघ और भाजपा हिंदू राष्ट्र के पैरोकार हैं। लेकिन इस हिंदू राष्ट्र की परिभाषा भी अलग-अलग है। एक तो यह कि समूचे राष्ट्र को आधिकारिक तौर पर हिंदू राष्ट्र घोषित कर दिया जाए। दूसरा यह कि भारत में हिंदू राष्ट्र अंतर्निहित, इसलिए सेक्युलर शब्द का महत्व औपचारिक ही है, जैसा कि कुछ कांग्रेस नेता भी मानते हैं, तीसरा विकल्प भारत के कुछ पड़ोसी देशों जैसे संविधान का है, जिनमें कई में 'सेक्युलरिज्म' के साथ बहुसंख्यकों के धर्म को 'विशेष दर्जा' दिया गया है। नेपाल के संविधान (2015) में राज्य सेक्युलर घोषित होने के बाद भी 'प्राचीन धार्मिक व सांस्कृतिक परंपरा के पालन की गारंटी है। जबकि श्रीलंका के संविधान के अनुच्छेद 9 में सभी को अपना धर्म पालन की स्वतंत्रता है, लेकिन बौद्ध धर्म 'सर्वोपरि' है। भूटान में बौद्ध धर्म अधिकृत धर्म होने के साथ बाकी को अपना धर्म पालन की आजादी है। म्यांमार में कोई राजधर्म नहीं, लेकिन बौद्ध धर्म की 'विशेष स्थिति' है। पाकिस्तान तो घोषित रूप से इस्लामिक राज्य है। लेकिन दूसरे धर्मों को मानने की स्वंतत्रता है। बांग्लादेश में भी 1972 के संविधान में मुख्य धर्म इस्लाम को बताते हुए सेक्युलरिज्म को भी मूलभूत सिद्धांतों में शामिल किया गया है। जबकि साम्यवादी चीन में अधिकृत धर्म कोई नहीं हैं। वहां व्यक्तिगत रूप से धर्म पालन की स्वतंत्रता है। वैसे चीन में मुख्यतः पांच धर्म हैं। पहला है कनफ्युशियस धर्म, दूसरा ताओ धर्म, तीसरा बौद्ध, चौथा ईसाई व पांचवां इस्लाम। संविधान में सचमुच बुनियादी बदलाव होगा, होगा तो कब और कैसे होगा, या यह केवल राजनीतिक शोशेबाजी है, यह अभी अस्पष्ट है। फिलहाल तो यही लगता है कि होसबले ने संविधान को उसके मूल रूप में लौटाने का मुद्दा उछाल कर गेंद विपक्ष की डी में ही डाल दी है, जो पलटवार के साथ साथ सेल्फ गोल बचाने में लग गए हैं।

म.प्र. में मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में जन-भागीदारी से जल गंगा संवर्धन अभियान बना जन-आंदोलन : पीएम मोदी

भारतीय संस्कृति में नदियों, कुओं, तालाबों और बावड़ियों के संरक्षण की परंपराः मुख्यमंत्री यादव

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और उनकी टीम के जल संवर्धन और संचयन के कार्यों से जल गंगा संवर्धन अभियान को जन-आंदोलन बनते देखना सुखद अनुभूति है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मध्यप्रदेश के लाखों लोगों के परिश्रम, समर्पण और आस्था से संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान के समापन अवसर पर प्रेषित अपने संदेश में प्रदेशवासियों, विशेषतः जलदूतों, स्व-सहायता समूह की महिलाओं और किसानों को शुभकामनाएँ दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पानी की एक-एक बूँद बचाने के लिये 90 दिन तक चले जल गंगा संवर्धन अभियान में जन-भागीदारी से हुए कार्यों को ऐतिहासिक बताते हुए प्रदेशवासियों को उनके योगदान के लिये धन्यवाद दिया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मध्यप्रदेश के लाखों लोगों के परिश्रम, समर्पण और आस्था से संचालित 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के समापन अवसर पर जारी अपने संदेश में यह बात कही। उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. यादव सहित प्रदेशवासियों को इस सफलता के लिये बधाई भी दी।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में गुड़ीपड़वा से आरंभ हुए जल गंगा संवर्धन अभियान का सोमवार को खण्डवा में समारोहपूर्वक समापन हुआ। इस दौरान वॉटर शेड सम्मेलन भी आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समारोह में 1568 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन किया। उन्होंने पंचायत एवं ग्रामीण विकास के तहत पंचायतों में हुए 578 करोड़ लागत के 57207 कार्यों का लोकार्पण भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वॉटर-शेड विकास घटक के अंतर्गत प्रदेशभर के 888 जल संरक्षण कार्यों का लोकार्पण और खण्डवा जिले की जावर माइक्रो सिंचाई परियोजना एवं 3 अन्य सिंचाई परियोजनाओं का लोकार्पण किया। इस दौरान प्रदेश की जीर्णोद्धार की गई 74 जल संरचनाओं का लोकार्पण भी हुआ। समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भेजे गये संदेश का वाचन पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने किया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भारत में आदिकाल से जल की वंदना होती आई है और हमारी संस्कृति में नदियों, कुओं, तालाबों और बावड़ियों को पूजनीय मानकर उनके संरक्षण की परम्परा रही है। इस विरासत को समृद्ध करते हुए 'जल गंगा संवर्धन अभियान' नदियों को निर्मल, अविरल और सदानीरा बनाने के लिए जन-जागरूकता की दिशा में एक प्रेरणादायी प्रयास रहा है।

प्रधानमंत्री आधुनिक युग के भागीरथ : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मध्यप्रदेश को एक नहीं, तीन राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजनाओं की सौगात दी है, जो भविष्य में देश-प्रदेश में जल संरक्षण एवं संवर्धन की नई दिशा तय करेंगी। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री मोदी को वर्तमान युग का भागीरथ बताया। उनके नेतृत्व और दृष्टि ने जल संरक्षण को राष्ट्रीय चेतना में बदल दिया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में गुड़ी पड़वा 30 मार्च से 30 जून तक सभी जिलों में जल स्त्रोतों के संरक्षण के लिए नवाचार किए गए। अभियान में मनरेगा योजना के अंतर्गत खेत तालाब, अमृत सरोवर और कूप रिचार्ज पिट का निर्माण एवं जल संरचाओं का जीर्णोद्धार किया गया। जल स्त्रोतों के संरक्षण में 2 लाख 39 हजार जलदूतों का सहयोग मिला, वे जल संवर्धन के संवाहक बने हैं। कुल 38 हजार नए खेत तालाब बनाए गए हैं। अकेले खंडवा जिले में 254 करोड़ की लागत से 1 लाख से अधिक कुएं रिचार्ज किए गए। इसके लिए खंडवा को देश में प्रथम स्थान मिला है। आज इंदौर संभाग स्वच्छता और जल संरक्षण में नंबर-एक है। प्रदेशभर में 70 हजार कुओं, बावड़ियों, नदियों और तालाबों का संरक्षण किया गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत 57 से ज्यादा नदियों में मिलने वाले 140 बड़े नालों को चिह्नित किया गया है। प्रदेश के 36 जिलों में 91 वाटर-शेड परियोजनाएं विकसित हो चुकी हैं। खेतों की सिंचाई के लिए 9 हजार जल रचनाएं तैयार की गई हैं। आज 1568 करोड़ के लोकार्पण और भूमि-पूजन किए गए हैं। खंडवा में 4 सिंचाई परियोजनाओं की शुरुआत की गई है। विभिन्न कार्यों की वजह से निमाड़ के अधिकतम तापमान में 4 डिग्री की कमी आई है। प्रदेश में सिंचाई का रकबा लगातार बढ़ रहा है। बुंदेलखंड को केन-बेतवा लिंक नदी जोड़ो परियोजना, मालवा-चंबल क्षेत्र को पार्वती-कालीसिंध-चंबल (पीकेसी) और निमाड़ को तापी मेगा रिचार्ज परियोजना का लाभ मिलेगा। आगामी वर्षों में प्रदेश का सिंचाई क्षेत्र 55 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर 100 लाख हेक्टेयर करेंगे।

रिटायर्ड महिला आईएएस ने सरकार को दिखाया आईना

मध्य प्रदेश की तेज तर्रार रिटायर्ड महिला आईएएस अधिकारी ने उत्पादकता, रोजगार और प्रति व्यक्ति आय को लेकर केंद्र सरकार की नीतियों की आलोचना की। रिटायर्ड महिला आईएएस ने मीडिया को जारी एक लेख में मोदी सरकार की रोजगार नीति पर गंभीर टिप्पणी की। लेख में लिखा है कि यदि गरीबी घट रही है तो बेरोजगारी के आंकड़े में इसका असर दे खना चाहिए जो नहीं हो रहा है। मोबाइल निर्माण में केवल असेंबल तक सीमित है। वहीं हमारी युवा शक्ति का लाभ एआई और ऑटोमेशन के दौर में घट रहा है। एसे में युवाओं के लिए ऑटोमेशन स्किलस विकसित करना जरूरी है। रोजगार और कौशल में बिल्कुल तालमेल नहीं है। नीति निर्माण की लेट लतीफी इसके लिए जिम्मेदार है। हमारी जीडीपी जरूर बढ़ी है लेकिन प्रति व्यक्ति आय नाइजीरिया से भी काम है। केंद्र सरकार को रिसर्च में खर्च को बढ़ाना होगा। रिटायर्ड आईएएस ने लेख में केंद्र सरकार की कुछ नीतियों की तारीफ भी की है और

मोहन का मंत्रालय
आशीष चौधरी

आईपीएस देंगे कानूनी सलाह

सिस्टम में रहकर पीड़ितों को न्याय या उन्हें राहत नहीं दिला पाने का मलाल एक सेवानिवृत्ति आईपीएस अधिकारी को आज भी कचोट रहा है। आईपीएस अधिकारी सेवानिवृत्ति के बाद अब जनता की सेवा के लिए कानूनी सलाह देने का काम करेंगे। सूत्र बताते हैं कि सिस्टम में रहते हुए वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी ने पीड़ितों के दर्द को महसूस किया लेकिन उल्लेखनीय कुछ नहीं कर सके। अब उन्होंने सोचा है कि सेवानिवृत्ति के बाद पीड़ितों को न केवल कानूनी सलाह देंगे बल्कि कोर्ट में केस भी लड़ेंगे। बता दे कि उक्त आईपीएस अधिकारी अपनी कार्य प्रणाली को लेकर हमेशा चर्चा में रहे हैं।

चर्चित आरओबी और मंत्री का निरीक्षण

भोपाल के नवनिर्मित और सबसे चर्चित 90 डिग्री आरओबी को लेकर राज्य सरकार ने आठ इंजीनियरों को सस्पेंड करके सरकार की सख्ती जनता के सामने प्रदर्शित की लेकिन इस आरओबी स्वीकृति से लेकर निर्माण तक के कई चरणों में कई वरिष्ठ अधिकारियों की अनुमति है जो वरिष्ठ अधिकारियों की योग्यता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करती हैं? हैरानी तो यह है इस आरओबी का निरीक्षण करने अनेक बार एक इंजीनियर मंत्री मय मीडिया के आरओबी पर पहुंचे और खूब वाह वाही लूटी। आरओबी की इतनी बड़ी खामी मंत्री को नजर नहीं ?

प्रयोगधर्मी भाजपा के हेमंत आगे

मध्य प्रदेश भाजपा का नया अध्यक्ष कौन होगा ? इसको लेकर कयासों का दौर चल रहा है। पार्टी सूत्रों का कहना है कि प्रयोगधर्मी भाजपा इस बार किसी महिला सांसद को प्रदेश अध्यक्ष की कमान दे सकती है तो आश्चर्य नहीं होगा लेकिन इस दौड़ में सबसे ऊपर नाम विधायक हेमंत खंडेलवाल का चल रहा है और आदिवासी कोटे से केंद्रीय राज्य मंत्री रामदास उइके। वैसे पार्टी का नया प्रदेश अध्यक्ष कौन होगा आज दोपहर तक तस्वीर साफ हो जाएगी।

कॉलोनी काटी, पर सुविधाएं नहीं दीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार रोड पर बोरदा स्थित यूबी सिटी में रहने वाले लोगों ने कॉलोनी में मूलभूत सुविधाएं नहीं मिलने से कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह से शिकायत की है। साथ ही वे मंगलवार को जनसुनवाई में भी पहुंचेंगे।कलेक्टर से की गई शिकायत में कहा गया है कि यूबी सिटी प्रोजेक्ट में कई लापरवाही की गई है। बिल्डिंग के ब्लॉक-ए, बी और बी1 डुप्लेक्स और बिल्डिंग ग्राउंड फ्लोर, सड़क की स्थिति बेहद खराब है। इंटरनल और आउटर वॉल पर प्लास्टर तक नहीं किया गया है। पेंट भी नहीं हुआ है। दोनों गेटों का निर्माण कार्य अधूरा है।ग्राउंड फ्लोर पर ब्लॉक पैवर्स नहीं होने से गंदगी और कीचड़ की स्थिति बनी रहती है, जबकि जब घर दिए गए थे तो सभी वादे किए थे। दूसरी ओर मेंटेनेंस के नाम पर 25 से 35 हजार रुपए तक लिए गए। इसका एग्रीमेंट भी किया। यह राशि कहां खर्च की गई, इसके बारे में भी कोई जानकारी नहीं दी गई है। कॉलोनी में रह रहे लोगों का कहना है कि उन्हें मूलभूत सुविधाओं से वंचित रखा जा रहा है।

सीवेज और पानी की व्यवस्था भी नहीं- इससे पहले रविवार को कॉलोनी के लोगों ने प्रदर्शन भी किया। उनका कहना था कि कॉलोनी में रहने वाले बुजुर्ग, महिलाएं और बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। लिफ्ट बार-बार खराब हो रही है।

'अक्षर योग केंद्र' ने एक ही दिन में 12 वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाए, योग के क्षेत्र में यह मिसाल

सभी प्रतिभागियों ने मूलभूत आसनों को निर्धारित समय तक लगातार किया

(कर्मयोगी की रिपोर्ट)

बेंगलुरु। भारतीय योग की समृद्ध विरासत के संरक्षण के लिए अक्षर योग केंद्र द्वारा चलायी जा रही मुहिम अब रंग लाने लगी है। हिमालय सिद्ध अक्षर के भगीरथ प्रयासों से देश-विदेश के हजारों साधकों के बीच गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की ऑफिशियल टीम ने एक दिन में बारह रिकॉर्ड दर्ज किए। यह योग की दुनिया में पहली मिसाल है, जब एक ही दिन में 12 विश्व रिकॉर्ड दर्ज किए गए हों।

एकता, अनुशासन और उद्देश्य की शक्ति के भव्य उत्सव में यह ऐतिहासिक उपलब्धि, अक्षर योग केन्द्र के संस्थापक एवं आध्यात्मिक प्रमुख हिमालयन सिद्ध अक्षर के दूरदर्शी नेतृत्व में बेंगलुरु में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में हासिल की गई। बेली मठ (कर्नाटक) के डॉ शिवरुद्र महास्वामी के इस अभूतपूर्व रिकॉर्ड बनाने के समारोह में ताइवान, मलेशिया, हांगकांग, इटली, यूएसए, यूके, दुबई, साइप्रस और सिंगापुर सहित 30 से अधिक देशों के 2,500 से अधिक योगाभ्यासियों ने भाग लिया। इस विविध आयोजन में भारतीय सेना, वायुसेना, कर्नाटक राज्य पुलिस, एनसीसी कैडेट्स, दिव्यांगों, अनाथालयों के बच्चों, कॉरपोरेट जगत के सदस्य तथा अंतरराष्ट्रीय योग समुदाय के सदस्य भी सम्मिलित हुए।

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा योग संस्थान श्रेणी में मान्यता प्राप्त यह संस्था अक्षर योग केंद्र, प्राचीन परंपरा को आधुनिक युग से जोड़ने वाले विशाल योग अभियानों का नेतृत्व करता रहा है। हिमालयन सिद्ध अक्षर ने इस अवसर पर कहा कि यह महा आयोजन एक उद्देश्यपूर्ण जीवन का प्रतीक है। यह प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरित करता है कि वह अपने जीवन में एक उच्च लक्ष्य निर्धारित करे और उसे पूर्ण निष्ठा एवं तपस्या के साथ प्राप्त करे। ये सारे कीर्तिमान मानवीय संकल्प शक्ति की असीम क्षमता को दर्शाते हैं। इस वैश्विक आंदोलन के माध्यम से, हम योग के प्राचीन ज्ञान का आदर पूर्वक सम्मान करते हैं और प्रत्येक आत्मा को उसके सर्वोच्च स्वरूप की ओर जागृत करने का प्रयास है।सभी प्रतिभागियों ने इस श्रृंखला में, मूलभूत विभिन्न आसनों को निर्धारित समय तक लगातार धारण किया। ये चयनित योगासन स्वास्थ्य, ऊर्जा और आंतरिक रूपांतरण के विविध पहलुओं का प्रतीक थे। यह कार्यक्रम अक्षर योग केंद्र के विश्वव्यापी नेटवर्क में कई सप्ताह के अनुशासित प्रशिक्षण और वैश्विक समन्वय का समापन था। वर्तमान में 80 से अधिक देशों में ऑनलाइन-ऑफलाइन पहुंच से, 2 करोड़ से अधिक योग साधक और 50,000 से अधिक प्रमाणित शिक्षकों के साथ, अक्षर योग केन्द्र अपने व्यवस्थित, समावेशी दृष्टिकोण के साथ निरंतर योग के अंतरराष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व कर रहा है। इसकी सहभागित देश-विदेश की सेना, कंपनियों, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और कूटनीतिक संस्थानों के साथ हैं जिनमें इन्फोसिस, विप्रो, रोल्स-रॉयस, अमेज़ॉन आदि शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि स्थापित किए गए 12 गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड भारत की जीवंत आध्यात्मिक धरोहर और अक्षर योग केन्द्र के निष्ठापूर्ण समर्पण के प्रमाण हैं। जैसे-जैसे विश्व योग को एक जीवनशैली और आध्यात्मिक अभ्यास के रूप में अपना रहा है। अक्षर योग केंद्र योग को स्वास्थ्य, परिवर्तन और चेतना का एक सार्वभौमिक मार्ग बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को लेकर निरंतर प्रयत्नशील है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए दर्ज किए गए आसनों में अधोमुख श्वानासन, उत्कटासन, भद्रासन, उभय पादांगुष्ठासन, गरुड़ासन, शलभासन, वीरभद्रासन, एक पाद पादांगुष्ठासन, एक पाद राजकपोतासन, सर्वांगसन, सेतु बंध सर्वांगासन, वीरभद्रासन शामिल हैं।